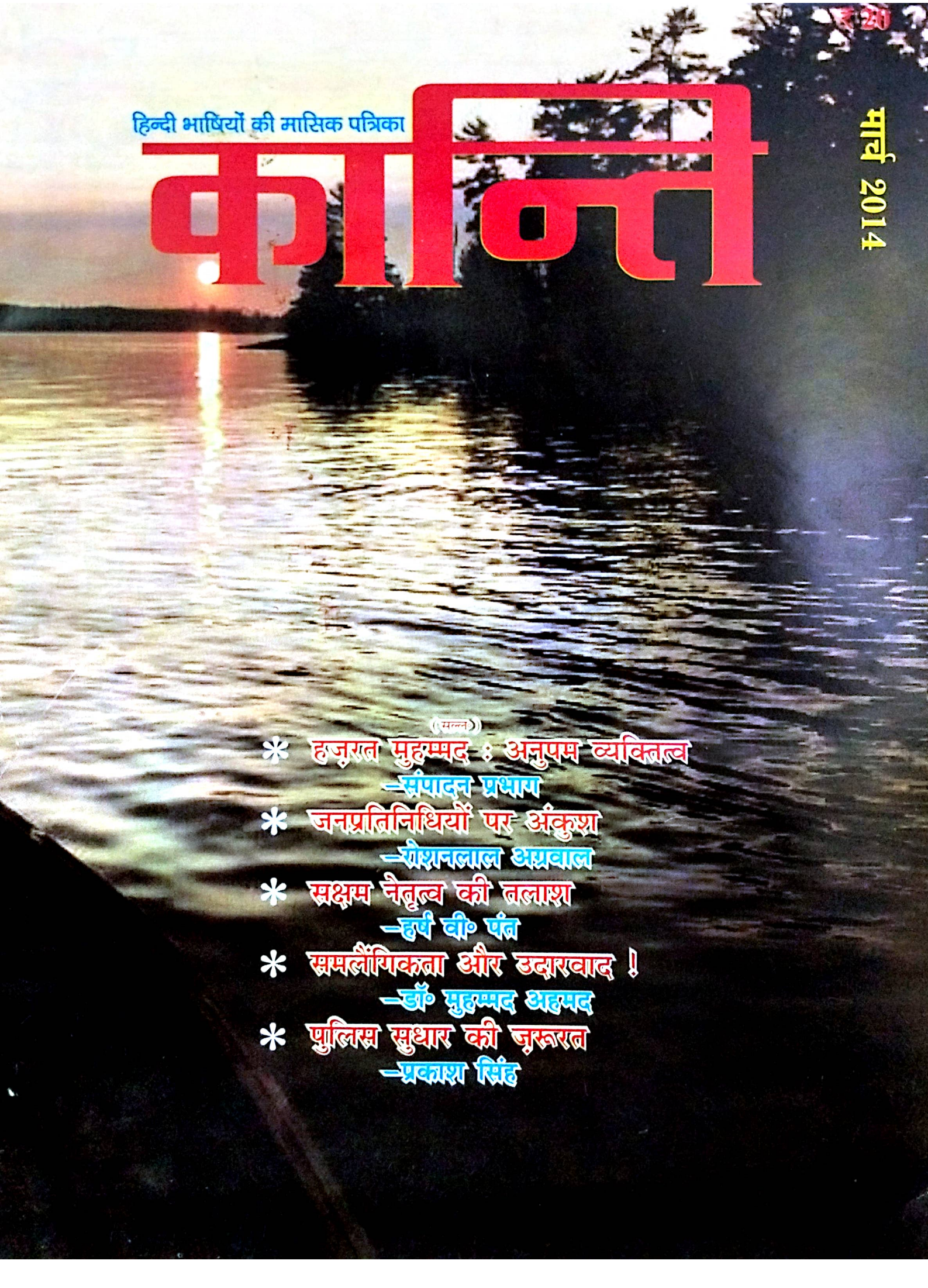

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

क्रान्ति

मार्च 2014

₹ 20

(मल्लू)

* हज़रत मुहम्मद : अनुपम व्यक्तित्व
  –संपादन प्रभाग
* जनप्रतिनिधियों पर अंकुश
  –रोशनलाल अग्रवाल
* सक्षम नेतृत्व की तलाश
  –हर्ष वी॰ पंत
* सम्मलैंगिकता और उदारवाद !
  –डॉ॰ मुहम्मद अहमद
* पुलिस सुधार की ज़रूरत
  –प्रकाश सिंह

بسم الله الرحمن الرحيم

"नेकी यह है कि
अल्लाह की मुहब्बत में
अपना दिलपसन्द माल
रिश्तेदारों और यतीमों पर,
मिस्कीनों और मुसाफ़िरों पर,
मदद के लिए हाथ फैलाने
वालों पर और ग़ुलामों की
रिहाई पर ख़र्च करे ।"

(क़ुरआन)

With Best Compliments From



G.C., Rich Homes, Richmond Road
Bangalore-560025
Contact : 080-22117667

आपकी आशाओं का सुन्दर प्रतिबिम्ब

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

कान्ति

वर्ष 23 अंक 9 मार्च 2014

मुहम्मद (सल्ल॰) तुम्हारे मर्दों में से किसी के पिता नहीं हैं, मगर वे अल्लाह के रसूल और नबियों के समापक (अंतिम नबी) हैं और अल्लाह हर चीज़ का ज्ञान रखने वाला है । –क़ुरआन

संपादक

डॉ० मुहम्मद अहमद

अपने विचार, लेख, रचनाएं भेजने एवं संपादकीय मामलों के लिए लिखें–

संपादक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

ई मेल editorkanti@yahoo.com

* * *

ख़रीदार बनने, एजेंसी लेने, प्रचार-प्रसार एवं प्रबंधकीय मामलों के लिए लिखें–

प्रबंधक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

* * *

फ़ोन संपादकीय एवं प्रबंधकीय

09818799223, 011-26949430

सहयोग राशि

एक प्रति रु॰ 20/- विशेषांक रु॰ 30/-

वार्षिक रु॰ 220/-, दो वर्ष 425/-

पांच वर्ष 1000/-, आजीवन रु॰ 5000/-

सऊदी अरब और खाड़ी के देशों से–100 रियाल

यूरोप व अमेरिका से–35 US डॉलर

वेब : **www.kanti.in**

चेक / ड्राफ्ट **'मासिक कान्ति'** के नाम से बनवाएं

जीवन में कुछ करना सीखो

बढ़े चलो कर्तव्य-मार्ग पर,
जीवन में कुछ करना सीखो ।
दीन-हीन-असहाय जनों के,
सारे संकट हरना सीखो ।।

सुख-दुख दोनों ही मानव के,
जीवन में है आते-जाते ।
धैर्यवान हैं, वीर वही हैं,
कभी न दुख से जो घबराते ।।

सुख आये तो फूल न जाना,
संकट में निराश मत होना ।
समय बहुत ही मूल्यवान है,
हरगिज़ इसे व्यर्थ मत खोना ।।

जीवन के हर पल का जिसने,
सदुपयोग करना सीखा है ।
सफल हुआ है वही कि जिसने,
हंस-हंसकर मरना सीखा है ।।

तो फिर उठो, बढ़ो तुम आगे,
नाम न लो रुकने-झुकने का ।
जीवन-दीप जलाओ, ऐसा,
नाम नहीं ले जो बुझने का ।।

ऐसे काम करो जीवन में,
जिससे नाम अमर हो जाए ।
युगों-युगों तक सारी दुनिया,
याद करे गुण-गाथा गाये ।।

● डॉ॰ त्रिलोकी सिंह

ग्रा-हिन्दूपुर, पो-करछना, इलाहाबाद (उ॰प्र॰)



कहां क्या है ?

जीवन में कुछ करना सीखो (कविता)	–डॉ॰ त्रिलोकी सिंह	3
कुरआन ज्योति		5
दुआएं (हदीस मंजरी)		6
झूठे एवं अनर्गल आरोपों से बचें (संपादकीय)		7
सच्चा, सनातन धर्म है इस्लाम (आपके पत्र)		8
इस्लामी सद्क्रान्ति (आस्था)	–मुफ़्ती तंज़ीम आलम क़ासिमी	13
समलैंगिकता और उदारवाद ! (फेसबुक उवाच)	–डॉ॰ मुहम्मद अहमद	17
आर॰एस॰एस॰ का अस्ली खेल (सामयिक)	–डॉ॰ रामबहादुर वर्मा	19
उपेक्षित न हो समाज सुधार (मुद्दा)	–भरत डोगरा	21
पहचान पत्र (कहानी)	–डॉ॰ मुहम्मद दाऊद	23
ग़ज़ल	–दरवेश भारती	24
हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) महानतम व्यक्तित्व (विशेष आयोजन)	–संपादन प्रभाग	26-27
स्नेह और सहिष्णुता के प्रचारक (विशेष आयोजन)		31
जनप्रतिनिधियों पर होना चाहिए मतदाताओं का अंकुश (विमर्श)	–रोशनलाल अग्रवाल	39
सक्षम नेतृत्व की तलाश (अभिमत)	–हर्ष वी॰ पंत	41
लूटो खाओ होड़ लगी है (कविता)	–रोहित यादव	42
कैसे दूर हो भारतीय अर्थव्यवस्था की बदहाली ? (अर्थ-उपभोक्ता)	–डॉ॰ विकास मानव	43
पुलिस सुधार की अनदेखी क्यों ? (दृष्टिकोण)	–प्रकाश सिंह	45
फ़ायदेमन्द है हरी चाय (स्वास्थ्य चर्चा)	–ज्योतिर्मय आनंद	47
मनुष्य के क़द का राज़ (बालवीथी)	–विशाल सन्नी	49

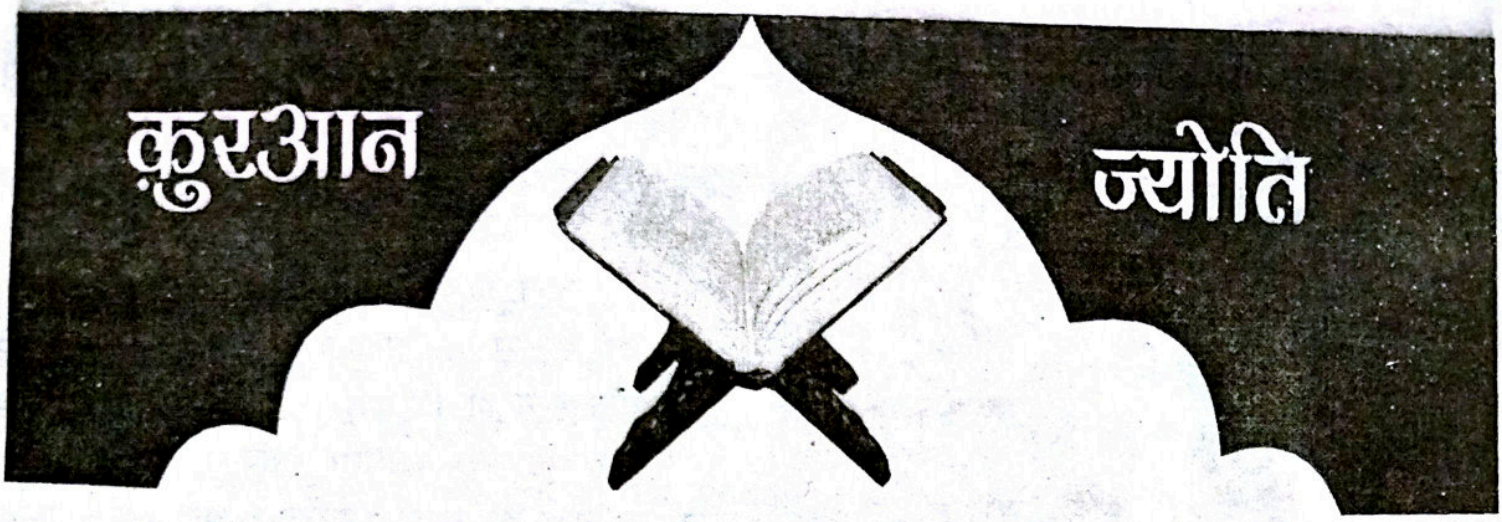

(49) इनमें से कोई है जो कहता है कि "मुझे छूट दे दीजिए और मुझको फ़ित्ने में न डालिए"[48]– सुन रखो ! फ़ित्ने ही में तो ये लोग पड़े हुए हैं[49] और जहन्नम ने इन अधर्मियों को घेर रखा है ।[50]

(50) तुम्हारा भला होता है तो इनको रंज होता है और तुम पर कोई मुसीबत आती है तो ये मुंह फेरकर ख़ुश-ख़ुश पलटते हैं और कहते जाते हैं कि अच्छा हुआ हमने पहले ही अपना मामला ठीक कर लिया था । **–क़ुरआन, 9 : 49-50**

48. जो मुनाफ़िक़ बहाने कर-करके पीछे ठहर जाने की इजाज़तें मांग रहे थे, उनमें से कुछ ऐसे ढीठ भी थे जो अल्लाह के रास्ते से पीछे क़दम हटाने के लिए धार्मिक और नैतिक ढंग के हीले-बहाने खोजते थे । चुनांचे उनमें से एक व्यक्ति जद्द बिन क़ैस के बारे में रिवायतों में आया है कि उसने नबी (सल्ल॰) की सेवा में आकर कहा कि मैं एक हुस्नपरस्त (सौन्दर्य प्रिय) आदमी हूं, मेरी क़ौम के लोग मेरी इस कमज़ोरी को जानते हैं कि औरत के मामले में मुझसे सब्र नहीं हो सकता । डरता हूं कि कहीं रूमी औरतों को देखकर मेरा क़दम फिसल न जाए इसलिए आप मुझे आज़माइश में न डालें और इस जिहाद में सम्मिलित होने में मुझे विवश समझें ।

49. अर्थात नाम तो फ़ित्ने से बचने का लेते हैं, मगर वास्तव में निफ़ाक़ और झूठ और पाखंड का फ़ित्ना बुरी तरह उन पर छाया हुआ है । अपने नज़दीक यह समझते हैं कि छोटे-छोटे फ़ित्नों की संभावना से परेशानी और भय प्रकट करके ये अल्लाह से बड़े डरने वाले साबित हुए जा रहे हैं, हालांकि वास्तव में कुफ़्र व इस्लाम के निर्णायक संघर्ष के अवसर पर इस्लाम के समर्थन से पहलू बचाकर ये इतने बड़े फ़ित्ने में पड़ रहे हैं जिससे बढ़कर किसी फ़ित्ने के बारे में सोचा नहीं जा सकता ।

50. अर्थात अल्लाह के डर (तक़्वा) के इस दिखावे ने उनको जहन्नम से दूर नहीं किया, बल्कि निफ़ाक़ (कपटाचार) की इस लानत ने उन्हें जहन्नम के चंगुल में उलटा फंसा दिया ।

For Information On
City Shops, Roads, Restaurants, Magazine, Schools and much more.
Syed Shahbaz Alam Barvi
Business Development Director (09049185093)
Visit us:
www.shoppinglanes.com

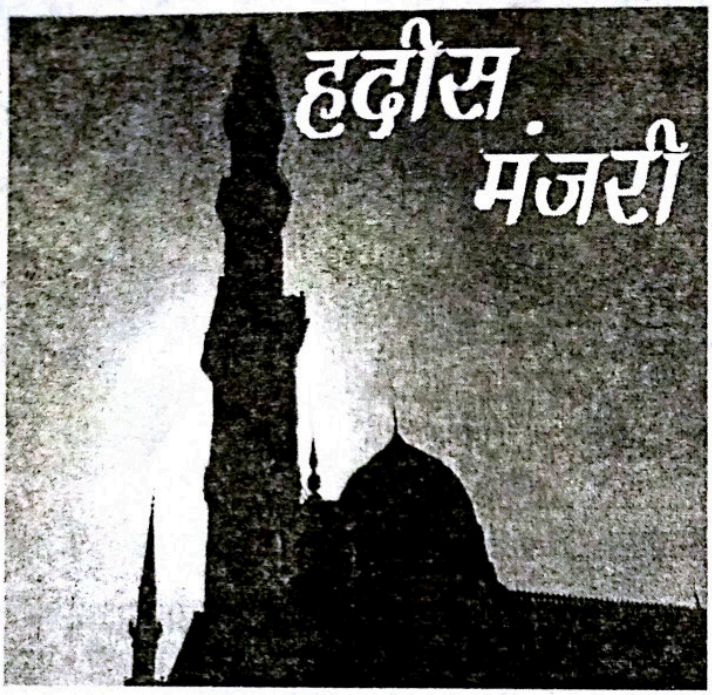

दुआएं

● हज़रत आइशा (रज़ि॰) से रिवायत है कि नबी (सल्ल॰) अपनी प्रार्थना में कहा करते थे : "ऐ अल्लाह, मैं पनाह मांगता हूं उस कर्म की बुराई से बचने के लिए जो मैंने किया और उस कर्म की बुराई से बचने के लिए भी जो मैंने नहीं किया ।"

—मुस्लिम

● हज़रत इब्न उमर (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) की एक प्रार्थना यह भी थी : "ऐ अल्लाह, मैं तुझसे पनाह मांगता हूं तेरे अनुग्रह के अंत से बचने के लिए और इससे बचने के लिए कि तेरी प्रदान की हुई शांति एवं सुरक्षा परिवर्तित हो जाए और इससे बचने के लिए कि अचानक तेरा प्रकोप हो और तेरे सभी प्रकोप से बचने के लिए ।"

—मुस्लिम

● हज़रत ज़ैद बिन अरकम (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) यह प्रार्थना किया करते थे : "ऐ अल्लाह, मैं तुझसे पनाह मांगता हूं लाचारी, आलस, कंजूसी और जरा-जीर्णता से बचने के लिए और क़ब्र की यातना से बचने के लिए । ऐ अल्लाह, मेरी आत्मा को उसकी धर्मपरायणता प्रदान कर और उसे निखार दे । तू ही सबसे अच्छा उसको निखारने वाला है, तू ही उसका संरक्षक-मित्र और उसका स्वामी है । ऐ अल्लाह मैं तुझसे पनाह मांगता हूं बचने के लिए उस ज्ञान से जो लाभकारी न हो, और उस दिल से जिसमें (अल्लाह का) भय न हो, और उस मन से जो भरता न हो, और उस प्रार्थना से जो स्वीकार न हो ।"

—मुस्लिम

● हज़रत इब्न अब्बास (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) यह प्रार्थना किया करते थे : "ऐ अल्लाह, मैंने अपने-आपको तुझे सौंपा, तुझ पर ईमान लाया, तुझ पर भरोसा किया, तेरी ओर रुजू किया, और तेरे ही बल पर मैं (सत्य के विरोधियों से) लड़ा और तुझ से ही फ़ैसला चाहता हूं । अतः तू क्षमा कर दे वे सब गुनाह जो मुझसे पहले हुए हों और जो पीछे हुए, जो मैंने छिपकर किये, जो मैंने खुलकर किये और जिनके बारे में तू मुझसे अधिक जानता है, तू ही आगे बढ़ाने वाला है, और तू ही पीछे डालने वाला है, तू ही पूज्य है ।"

कुछ रिवायतों में ये शब्द और आये हैं : "और न कोई ताक़त है और न शक्ति किन्तु अल्लाह ही के द्वारा ।"

—बुख़ारी, मुस्लिम

● हज़रत आइशा (रज़ि॰) से रिवायत है कि नबी (सल्ल॰) इन शब्दों के साथ प्रार्थना किया करते थे : "ऐ अल्लाह, मैं तेरी पनाह मांगता हूं आग (दोज़ख़) की आज़माइश से और दोज़ख़ की यातना से और अमीरी और ग़रीबी की बुराई से बचने के लिए ।"

—अबू दाऊद, तिरमिज़ी । और कहा कि यह हदीस 'हसन सहीह' है । ये शब्द अबू दाऊद के हैं ।

('रियाज़ुस्सालिहीन' से)

इस्लाम-परिचय : हिन्दी वेबसाइटें

www.islamdharma.org
www.islamic videos.com
www.islamicwebdunia.com
www.quranhindi.com

झूठे एवं अनर्गल आरोपों से बचें

किसी भी सभ्य समाज में आतंकवाद के लिए कोई जगह नहीं है । यह मानवता के भी ख़िलाफ़ है । इस्लाम सहित कोई भी धर्म इसका हामी और समर्थक नहीं । धार्मिक अतिवाद सर्वथा निंदनीय एवं त्याज्य है, लेकिन देखा जा रहा है कि हमारे प्रिय देश में पिछले कुछ वर्षों से फासीवादियों और सांप्रदायिक तत्वों का एक ऐसा तबक़ा उभरा है, जो एक धार्मिक समुदाय के बीच अन्य धार्मिक समुदाय के बारे में झूठा प्रचार और दुष्प्रचार तथा हिंसात्मक कार्रवाइयां भी करता है । यह अत्यंत अफ़सोस की बात है कि इन तत्वों का राजनीतिक प्रभाव भी सामने है । भाजपा समेत संघ परिवार के नेता एवं कुछ अन्य उनके पैरोकार जन दुष्प्रचार के काम में बड़े मनोयोग से लगकर देश का अम्न-चैन भंग करते और क़ानून को खुलेआम हाथ में लिए फिरते हैं, फिर भी क़ानून से बचे रहते हैं ! बाल ठाकरे भी ज़िन्दगी भर आग उगलने के बावजूद बचे रहे, हालांकि उनका सीधा संबंध संघ परिवार से न था । राज ठाकरे और उनके एम०एन०एस० के लोग मुंबई की क़ानून-व्यवस्था के लिए आज भी चुनौती बने हुए हैं । अभी हाल में मुंबई के टोल नाकों पर इस पार्टी ने ऊधम मचाकर क़ानून- व्यवस्था को हाथ में लिया । तोगड़िया, उमा भारती, साध्वी ऋतंभरा और नरेन्द्र मोदी जैसे अनेक चेहरे हैं, जो विशेषकर मुसलमानों के प्रति झूठा प्रचार कर अपना उल्लू सीधा करते हैं । मोदी को तो भाजपा ने अपना प्रधानमंत्री-उम्मीदवार घोषित कर दिया है, लेकिन इनके हाथ गुजरात दंगों से सने हुए हैं । इनके मुस्लिम विरोधी बयान भी बहुत ही आपतिजनक और निंदनीय रहे हैं । अशोक सिंघल और प्रवीण तोगड़िया विभिन्न प्रकार के अनर्गल आरोप बहुत पहले से लगाते आ रहे हैं और अब ये भाजपाई सरकार वाले राज्यों में सरकारी मंच से भी मुसलमानों के सिलसिले में निराधार बातें उछालते रहे हैं ।

पिछले कुछ सालों में इन लोगों ने अपने इसी जनसंख्या विज्ञान को फिर से दोहराना शुरू कर दिया है, लेकिन अब वे इसे नये रंग में लपेट कर लाए हैं । पहले ये लोग मुसलमानों द्वारा अपनी जनसंख्या बढ़ाने का हौवा ही खड़ा करते थे, अब उन्होंने ने इसमें कथित "लव-जिहाद" का डर भी जोड़ दिया है । ज़ाहिर है कि जब किसी समुदाय के ख़िलाफ़ झूठी बातें वह भी जान-बूझकर फैलायी जाएंगी, तो उनमें असंतोष पैदा होगा ही और समाज में उनकी तस्वीर बिगड़ेगी, जो अनेक समस्याओं का वाहक बनेगी और बन भी रही है । इसके कुपरिणामों में बेक़सूर मुसलमानों की गिरफ़्तारियों का मसला भी शामिल है । पिछले कुछ सालों में बड़ी संख्या में बेगुनाह मुसलमानों को जेल में डाला गया, जिनमें से कई आज भी हास्यस्पद सुनवाई का सामना कर रहे हैं । राज्यों की पूर्वाग्रह और अन्यायपूर्ण कार्रवाई अविश्वास पैदा करने के साथ-साथ पूरे समुदाय को बदनाम करने की कोशिश है । इससे विलगाव और असंतोष की भावना पैदा होना असहज नहीं है । अत: आज सांप्रदायिक नफ़रत और अन्याय के दुष्चक्र को तोड़ने की अति आवश्यकता है । साथ ही जो लोग नफ़रत की खेती करते हैं, उन्हें ठीक से न्याय का सामना करवाने एवं उन्हें अलग-थलग करने की आवश्यकता है ।

सच्चा, सनातन धर्म है इस्लाम

अल्लाह पाक सबसे बड़ा, तत्वदर्शी, हिकमत वाला, अफ़ज़ल और पवित्र है । उसके बड़कपन का गुणगान हो, इसी उद्देश्य से उसने सृष्टि की रचना की । सूरज, चांद, तारे बनाए, रात और दिन की व्यवस्था निर्धारित की, फिर अपने बन्दों को पैदा किया ताकि उसका हम्द व सना (गुणगान) हो सके । अल्लाह अपने राजसिंहासन पर आसीन होकर सृष्टि की व्यवस्था चला रहा है और इस पूरी कायनात को अपने घेरे में लिए हुए है जैसा कि क़ुरआन मजीद में है–

''अल्लाह वह शाश्वत जीवंत सत्ता जो समूची सृष्टि को संभाले हुए है, उसके सिवा कोई खुदा नहीं है । वह न सोता है और न उसे ऊंघ लगती है । ज़मीन और आसमानों में जो कुछ है उसी का है । कौन है जो उसके यहां उसकी अनुमति के बिना सिफ़ारिश कर सके ? जो कुछ बन्दों के सामने है उसे भी वह जानता है और जो कुछ उससे ओझल है उसे भी वह जानता है और उसके ज्ञान में से कोई चीज़ उनकी पकड़ में नहीं आ सकती सिवाय इसके कि किसी चीज़ का ज्ञान वह स्वयं ही उनको देना चाहे । उसकी हुकूमत आसमानों और ज़मीन पर छायी हुई है और उसकी सुरक्षा उसके लिए कोई थका देने वाला काम नहीं है । बस वही एक महान और सर्वोपरि सत्ता है ।''

(क़ुरआन, 2:255)

सर्वप्रथम अल्लाह पाक ने फ़रिश्तों एवं जिन्नों को पैदा किया, फिर आदम (अलैहि०) को मिट्टी से पैदा किया और उसमें जान डाला । फिर उन्हें हर चीज़ के नाम बताए और ज्ञान सिखाया । फ़रिश्तों एवं आदम (अलैहि०) के बीच एक प्रश्न किया जिसका उत्तर फ़रिश्ते नहीं दे सके और आदम (अलैहि०) ने उनके प्रश्न का उत्तर बता दिया । तब अल्लाह पाक ने फ़रिश्तों से कहा आदम को सजदा करो । सब फ़रिश्ते सजदा किये मगर इबलीस ने सजदा करने से इन्कार कर दिया । तब अल्लाह ने उससे पूछा कि तूने क्यों नहीं सजदा किया तो उसने उत्तर दिया–''आपने हमको आग से पैदा किया है और आदम को मिट्टी से'' मैं उनसे अफ़ज़ल हूं तब अल्लाह पाक ने उस शैतान मरदूद को लानत की तौक पहना दी और कहा, ''तू जहां भी जाएगा धिक्कारा ही जाएगा । जैसा कि क़ुरआन करीम में है–

''फिर जब हमने फ़रिश्तों को हुक्म दिया कि आदम के आगे झुक जाओ तो सब झुक गये मगर इबलीस ने इन्कार किया । वह अपनी बड़ाई के घमंड में पड़ गया और अवज्ञाकारियों में शामिल हो गया ।''

तब इबलीस ने कहा मैं आपके बन्दों को बहका कर रहूंगा इसके लिए मुझे क़ियामत तक की मोहलत चाहिए । तब अल्लाह ने कहा जो मेरा बन्दा होगा वह तेरे बहकावे में नहीं आएगा । फिर अल्लाह पाक ने आदम (अलैहि०) के बाईं पसली से हज़रत हव्वा को पैदा किया फिर आदम (अलैहि०) से कहा तुम और तुम्हारी बीवी दोनों जन्नत में रहो और यहां जी भरकर जो चाहो खाओ मगर उस पेड़ के पास न फटकना वरना ज़ालिमों में गिने जाओगे । अंततः शैतान ने उन दोनों को उस पेड़ का प्रलोभन देकर अल्लाह के आदेश के पालन से हटा दिया और उन्हें उस हालत से निकलवाकर छोड़ा, जिसमें वे थे ।

अल्लाह ने हुक्म दिया कि अब तुम सब यहां से उतर जाओ, तुम एक-दूसरे के शत्रु हो यानी इन्सान के दुश्मन शैतान और शैतान के दुश्मन इन्सान । अब तुम्हें एक निश्चित समय तक ज़मीन में ठहरना और वहीं गुज़र-बसर करना है, जैसा कि क़ुरआन पाक में है–

''ऐ ईमान लाने वालों तुम पूरे के पूरे इस्लाम (ईश्वर की आज्ञाकारिता) में आ जाओ और शैतान की पैरवी न करो कि वह तुम्हारा खुला दुश्मन है ।'' (2:208)

हज़रत आदम (अलैहि०) और उनकी बीवी ने अल्लाह से मग़फ़िरत की दुआ की कि ऐ परवरदिगार हमें माफ़ कर वो नहीं तो हम तबाह हो जाएंगे । इस पर अल्लाह पाक ने उनकी दुआ क़बूल की और कहा अब तुम दोनों इसी धरती पर अपनी दुनिया बसाओ और जो मेरी कोई हिदायत पहुंचे उसका पालन करो । समस्त दुनिया के लोग आदम (अलैहि०) की औलाद हैं ।

इस तरह अल्लाह ने प्रत्येक व्यक्ति के लिए जीवन की एक अवधि और आख़िरत की एक अवधि निश्चित की और उनको इख़्तियार और आज़ादी बख़्श दी, जैसा कि क़ुरआन मजीद में है–

"हमने इन्सान को एक मिश्रित वीर्य से पैदा किया ताकि उसकी परीक्षा लें और इस उद्देश्य के लिए हमने उसे सुनने और देखने वाला बनाया । हमने उसे रास्ता दिखा दिया, चाहे शुक्र करने वाला बनें या कुफ़्र (इन्कार) करने वाला ।" (76:2,3)

शुरू में दुनिया के सारे लोग एक ही तरीक़े पर थे बाद में लोगों में मतभेद पैदा हुआ और लोग अनेक समुदायों में बंट गये तथा अपने अलग-अलग पंथ बना लिए । इसलिए अल्लाह पाक ने हर समुदाय के लिए रसूल (संदेशवाहक) और किताब अवतरित की । क़ुरआन मजीद में है–

"हर समुदाय के लिए हमने इबादत का एक तरीक़ा निश्चित किया हैं जिसकी वह पैरवी करता है । अत: ऐ नबी वे इस मामले में तुम से झगड़ा न करें तुम अपने रब की ओर दावत दो निश्चय ही तुम सीधे रास्ते पर हो ।"

(क़ुरआन, 22:67)

अर्थात जिस तरह पहले नबी (संदेशवाहक) अपने-अपने दौर के समुदायों के लिए इबादत का तरीक़ा लाए ये उसी तरह इस दौर के समुदायों के लिए तुम इबादत का एक तरीक़ा लाए हो । अब किसी को तुम से झगड़ने का अधिकार प्राप्त नहीं है क्योंकि इस दौर के लिए इबादत का सही तरीक़ा यही है ।

लगभग एक लाख चौबीस हज़ार पैग़म्बर आये हैं जिनमें हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) आख़िरुज़्ज़मा नबी (आख़िरी नबी) हैं । अब आपके बाद कोई नबी आने वाला नहीं है । हर नबी (संदेष्टा) एक विशेष समुदाय की ओर भेजा गया लेकिन आप (सल्ल०) पूरी दुनिया के लिए ईशदूत बनाकर भेजे गये, जैसा कि क़ुरआन और हदीसों में है:–

"ऐ नबी हमने तुमको तमाम ही इन्सानों के लिए शुभ सूचना देने वाला और डराने वाला बनाकर भेजा है मगर अधिकतर लोग जानते नहीं । (क़ुरआन, 34:28)

"पहले हर नबी एक ख़ास क़ौम की ओर भेजा जाता था और मैं तमाम इन्सानों के लिए भेजा गया हूं ।" (बुख़ारी, मुस्लिम जाबिर बिन अब्दुल्लाह की रिवायत)

अत: नबी (ईशदूत) हमारे लिए एक आदर्श हैं इसलिए हमें उनके बताए हुए तरीक़े (सुन्नत) पर अमल करना चाहिए ।

इस्लाम में दाख़िल होने के लिए किसी क़ौम व जाति के लिए कोई प्रतिबंध नहीं है और न ऊंच-नीच छूआछूत आदि का भेदभाव है । इस्लाम (ईश्वर की आज्ञाकारिता) में आ जाने पर सारे इन्सान समकक्ष, समभाव हो जाते हैं । क़ुरआन पाक में है–

"(विश्वास करो कि यहां ठेकेदारी किसी की भी नहीं है) मुसलमान हो गया यहूदी साबी हो या ईसाई जो भी अल्लाह और अंतिम दिन पर ईमान लाएगा और अच्छे कर्म करेगा निस्संदेह उसके लिए न किसी डर की जगह है और न दुख की । (5:69)

इन्सान की ज़िन्दगी की अवधि ख़त्म होते ही वह मरकर इस दुनिया से अपने परवरदिगार (परमात्मा) के पास पहुंच जाता है। इस अवधि में वह जो भी नेकी या बदी का आमाल (कर्म) लेकर जाएगा उसी पर उसकी आख़िरत की ज़िन्दगी होगी, यानी उसी आधार पर उसको जन्नत (स्वर्ग) या जहन्नम (नरक) मिलेगा । क़ुरआन मजीद में है–

"उस दिन की रुसवाई और मुसीबत से बचो जबकि तुम अल्लाह की ओर वापस होगे वहां हर आदमी को उसकी कमाई हुई नेकी या बुराई का पूरा-पूरा बदला मिल जाएगा और किसी पर कदापि अन्याय न होगा ।" (2:281)

इससे यह बात साफ़ हो जाती है कि अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) क़ी सुन्नत (तरीक़ा) अपना कर एक ईश्वर की बन्दगी करना ही वास्तविक एवं आदि सनातन धर्म है ।

श्यामनारायण चौहान
ग्राम-बिशुनपुरा, पो-मथेला,
ज़िला-चन्दौली (उ०प्र०)

सबका प्रभु एक ही है

अल्लाह ने इन्सान को पैदा किया और उसके ऊपर सबसे बड़ा एहसान यह किया कि उसने इन्सान को क़ुरआन प्रदान किया । अल्लाह का आदेश है कि इन्सान क़ुरआन के माध्यम से सोच-विचार करे । अत: इन्सान को क़ुरआन की सहायता से निरीक्षण करना चाहिए ।

अधिकतर लोग क़ुरआन को सिर्फ़ पढ़ते हैं, परन्तु उसके अर्थ पर ध्यान नहीं देते । चूंकि क़ुरआन अरबी भाषा में है, अत: ग़ैर-अरबी लोगों को क़ुरआन का अनुवाद पढ़ना

चाहिए तथा उसमें सोच-विचार करना चाहिए ।

कुरआन में सोच-विचार करने पर यह सिद्ध होता है कि सबका प्रभु एक है । ज़मीन और आसमानों में इस बात की अनगिनत निशानियां हैं, परन्तु लोग इन निशानियों पर ध्यान नहीं देते हैं ।

इन निशानियों को देखकर और इन पर सोच-विचार करके लोगों को चाहिए कि एक अल्लाह पर ईमान लाएं तथा उसके साथ किसी को शरीक न ठहराएं । क्योंकि ज़मीन और आसमानों की व्यवस्था को देखने पर तो यही पता चलता है कि इन्हें बनाने वाला एक है । इसी प्रकार ज़मीन और आसमानों के बीच जो कुछ भी है, उसे देखकर भी यही ज्ञात होता है कि इन्हें बनाने वाला एक अल्लाह ही है, जिसका कोई साझी नहीं ।

उदाहरण के लिए रात और दिन के एक-दूसरे के बाद आने-जाने से भी यही पता चलता है कि दोनों का प्रभु एक ही है । यदि रात का प्रभु अलग होता और दिन का प्रभु अलग तो रात और दिन के आने-जाने की व्यवस्था ही बिगड़ जाती ।

इसी प्रकार अल्लाह ने ज़मीन को फैला रखा है तथा उस पर पहाड़ों के खूंटे गाड़ दिये हैं । इससे यही पता चलता है कि ज़मीन और पहाड़ों का प्रभु एक ही है, अन्यथा ज़मीन इन्सानों को लेकर डोल जाती और पहाड़ उसको डोलने से रोकने में कोई मदद नहीं करते ।

एक और उदाहरण है कि ज़मीन पर अलग-अलग फल पाये जाते हैं, जो एक ही पानी से सिंचित होते हैं परंतु फिर भी इनका स्वाद अलग-अलग होता है । इस पर सोच-विचार करने पर भी यही सिद्ध होता है कि यह सब अपने-आप नहीं हो रहा है, बल्कि एक अल्लाह का इन पर नियंत्रण है ।

इसी प्रकार जब पानी बरसता है तो मुर्दा ज़मीन जीवित हो उठता है और हरी-भरी हो जाती है । यदि पानी और ज़मीन के प्रभु अलग-अलग होते तो वे दोनों अपनी-अपनी सृष्टि को लेकर अलग हो जाते और ज़मीन कभी हरी-भरी नहीं हो पाती, अर्थात सबका प्रभु एक ही है ।

अबरार अहमद (लाखेरी वाले)
जे०पी० कालोनी, रंगपुर रोड, कोटा, राजस्थान

कन्या भ्रूण हत्या : एक भयंकर सामाजिक बुराई

नवम्बर 2013 अंक प्राप्त हुआ । 'कान्ति' के अंक में शीर्षक 'कन्या भ्रूणं-हत्या एवं घटता लिंगानुपात एक गंभीर प्रश्न को मैंने सरसरी दृष्टिकोण से अध्ययन किया । रचयिता डॉ० श्री जनकसिंह मीणा के विचारों का पूर्णतया मैं समर्थक हूं ।

अधिकांश समाजों में लड़की के जन्म को ही अपशगुन माना जाता है । ऐसा नहीं है कि अशिक्षित परिवारों में माना जाता है । मेरी व्यक्तिगत राय में उच्च शिक्षा प्राप्त लोग इसके लिए पूर्ण ज़िम्मेदार हैं । वे समझदार होते हुए भी लिंग परीक्षण करवाने में और भ्रूण-हत्या में भी नहीं सकुचाते हैं । इससे ज्ञात होता है कि लड़की के जन्म लेने पर इतनी प्रसन्नता नहीं होती है, जितना कि लड़का होने पर ।

भ्रूण-हत्या एक भयंकर सामाजिक बुराई है । अधिकांश डॉक्टर भी इसके लिए पूर्णतया साझीदार है कारण धन पिपासा व निर्दयता है ।

समय रहते समस्त बुद्धिजीवी, राजनीतिज्ञ, समाजसेवी, अर्थशास्त्री आदि को जाग्रत होना होगा तथा उन्हें समाज के समस्त वर्गों में यह भावना जाग्रत करनी होगी कि भ्रूण-हत्या कठोर पाप है तथा इसे समय रहते इस कुत्सित रोग को जड़-मूल से नष्ट करना होगा, ताकि भविष्य में विकसित समाज उत्पन्न हो सके ।

मासिक पत्रिका 'कान्ति' के जनवरी 2014 में शीर्षक 'सरदार पटेल और धर्मनिरपेक्ष भारत, रचयिता डॉ० रामबहादुर वर्मा का अध्ययन किया । सरदार वल्लभ भाई पटेल के

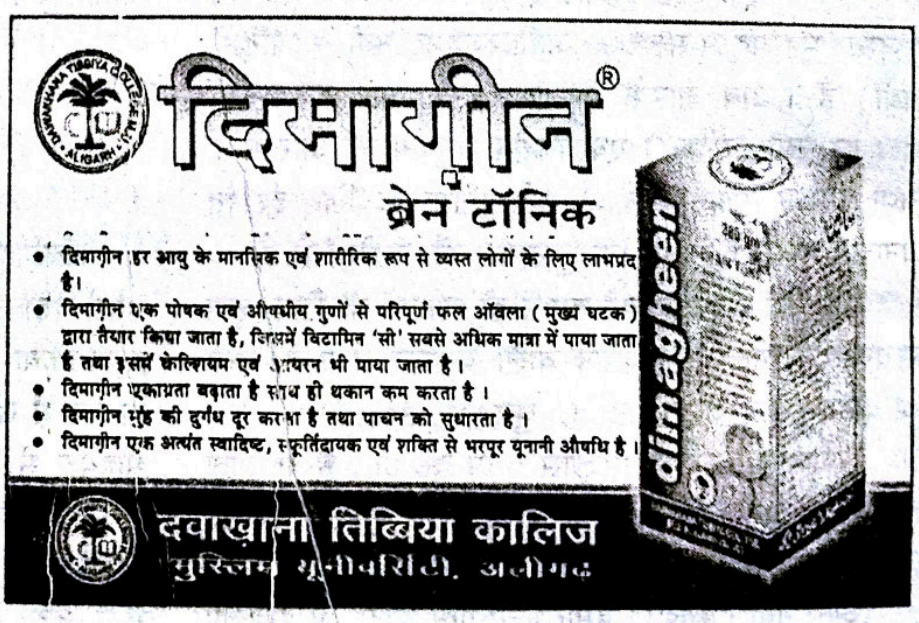

जीवन की चारित्रिक विशेषताओं की मुझे जानकारी प्राप्त हुई। मैं डॉ० रामबहादुर वर्मा के विचारों का पूर्णतया समर्थक हूं।

सरदार पटेल की लौह-पुरुष के रूप में सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि चाहे काम छोटा हो या बड़ा उसको पूरे दृढ़निश्चय के साथ करते थे। उनका मानना था कि कोई व्यक्ति या दल मनुष्य के जीवन को ख़त्म नहीं कर सकता, उसे नष्ट नहीं कर सकता है, यह तो प्रभु की इच्छा पर निर्भर करता है। प्रभु जब और जैसे चाहेंगे उसी के अनुसार यह होगा। उनकी मर्ज़ी के बिना कुछ भी संभव नहीं है।

सरदार वल्लभ भाई पटेल ने संगठन के कार्यों में पूरी निष्ठा एवं दृढ़ता के ऐसे क़दम बढ़ाये जिससे एकता स्थापित हुई तथा उनका नेतृत्व भी उन्होंने सफलतापूर्वक किया। चाहे वे स्वस्थ रहे हों या अस्वस्थ राष्ट्र को मज़बूत करने का पूरा प्रयत्न किया। 15 दिसम्बर 1950 को उन्हें रात्रि में दिल का दौरा पड़ा तथा वे मूर्छित हो गये और उनका निधन हो गया।

रामस्वरूप झैवर

शास्त्रीनगर विस्तार, भीलवाड़ा (राज०)

उच्च विचारों वाली पत्रिका

'कान्ति' मासिक का नवम्बर 2013 अंक पढ़ा, कोटि-कोटि बधाई। 'कान्ति' पत्रिका पढ़कर ऐसा लगता है कि समाज से कुरीतियां दूर करने का आपका सद्प्रयास है। आप समाज को भाईचारे की ओर अग्रसर कर रहे हैं।

इस अंक में 'सहशिक्षा, पर्दा और इस्लाम', 'आदमी और पंचतत्व' आदि लेख बहुत अच्छे हैं। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना।

अंजना रस्तोगी

बढ़ई चौक, बदायूं (उ०प्र०)

क़ानून का दुरुपयोग

मैं आपकी मासिक पत्रिका 'कान्ति' सदैव पढ़ता रहता हूं। मुझे आपकी यह पत्रिका अत्यंत पसन्द है। इसे पढ़कर ही मैं लिखने को प्रेरित हुआ हूं। आपकी मासिक पत्रिका 'कान्ति' के माध्यम से मैं लोगों से यही अपील करना चाहता हूं कि लोग ''डी०पी० एक्ट क़ानून'' (दहेज हत्या) का दुरुपयोग करके निर्दोष परिवारों का भविष्य बर्बाद न करें। क्योंकि इसी क़ानून के दुरुपयोग का मैं स्वयं शिकार हूं जिसके कारण मेरा व मेरे दो मासूम बच्चों का भविष्य बर्बाद हो गया है।

मुहम्मद अकबर

जिला-कारागार, कानपुर नगर (यू०पी०)

मंगल कामना

आगामी नववर्ष आपको,
सुखमय-मंगलकारक हो।
प्रसारित हो वह दिव्यज्ञान जो,
पल में तिमिर-विनाशक हो॥
उन्नति-पथ प्रशस्त हो अनुदिन,
अब तक हैं जो काम अधूरे।
ऐसी प्रबल शक्ति-मति दें प्रभु,
वे निर्बाध शीघ्र हों पूरे॥
'दो हज़ार चौदह' का प्रतिपल,
नव ऊर्जा से युक्त रहे।
सतत आपका सक्रिय तन-मन,
आधि-व्याधि से मुक्त रहे॥
ईश-कृपा का सतत वृष्टि से,
पूरी हों मन की इच्छाएं।
अपनी है यह मनोभिलाषा,
सौ वर्षों का जीवन पाएं॥

डॉ० त्रिलोकी सिंह

हिन्दूपुर, करछना, इलाहाबाद (उ०प्र०)

'कान्ति'

अंतर्मन हर्षित हुआ, पाकर यह नव अंक।
रचनाएं अति श्रेष्ठ हैं, कहता 'शरद' निःशंक॥
संपादन भी उच्चतम, सामग्री भी ख़ूब।
पाठक पढ़ता इसलिए, गहराई में डूब॥
अभिनंदन स्वीकारिये, प्रियवर मेरा आज।
आगत में भी जाग्रत, करते रहें समाज॥
प्रेमभाव नित बांटते, सद्भावों की बात।
सचमुच में यह पत्रिका, बहुत बड़ी सौग़ात॥

प्रोफ़ेसर शरद नारायण खरे

विभागाध्यक्ष इतिहास, शासकीय महिला महाविद्यालय,
मंडला (म०प्र०)

अनाथ लड़कों की पुकार

VOICE OF ORPHAN BOYS

यतीमख़ाना इस्लामिया (गया)

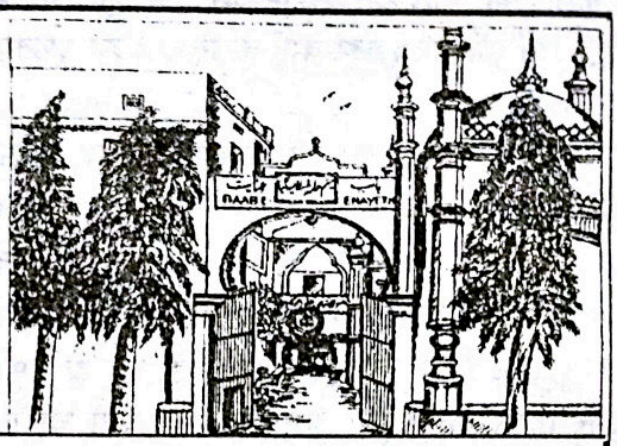

एक परिचय

● दीनी और असरी शिक्षा की अपनी तरह की जानी-मानी रिहाइशी पाठशाला ● 96 वर्षों की सेवाएं ● बहुत से विभाग ● शिक्षा के पड़ाव : प्राथमिक से मैट्रिक तक ● हिफ़्ज़ का विभाग : हिफ़्ज़ के साथ-साथ मैट्रिक ● हर वर्ष बिहार स्कूल बोर्ड परीक्षा का 100 प्रतिशत रिज़ल्ट ● पत्राचार शिक्षा 2013-2014 के सत्र के लिए 11वीं, 12वीं और बी०ए० और लाइब्रेरी साइंस (BLIS) में प्रवेश जारी ● कंप्यूटर की भी शिक्षा ● किफ़ाला स्कीम के तहत एक अनाथ छात्र पर वार्षिक ख़र्च 12000/- रुपये प्रति वर्ष ● कुल वार्षिक ख़र्च 18 लाख से अधिक ● आमदनी का स्रोत : मुस्लिम अवाम के चन्दे ● 100 अनाथ बच्चे जिनका पूरा ख़र्च इदारा ही उठाता है ।

● जिस रूप में संभव हो मदद करके अल्लाह से बड़ा इनाम प्राप्त करें-उदाहरण के लिए ● ज़कात ● सदक़े ● अतिया ● पैदावार की ज़कात ● कुरबानी की खाल ● एक अनाथ बच्चे का वार्षिक ख़र्च ● अपने या किसी बुजुर्ग के नाम पर कमरा या हॉल बनवाना आदि ।

● याद रखें यहां हर वर्ष ऑडिट (Audit) भी कराया जाता है । आप खुद यतीमख़ाना इस्लामिया पहुंच कर बराबरी का व्यावहारिक नमूना अपनी आंखों से देखें कि किस प्रकार अनाथ और मां-बाप वाले बच्चे मिल-जुलकर रहा करते हैं ।

नोट : इनायत टेक्निकल इंस्टीट्यूट (Technical Institute) की इमारत के निर्माण का काम अंतिम पड़ाव पर है।

यह इदारा आप से उदार सहायता की अपील करता है ।

नोट : यह इदारा विदेशी मुद्रा के क़ानून FCRA के तहत भी रजिस्टर्ड है ।

Foreign Donors विदेशी चन्दा देने वाले

अब आप विदेश से BANK A/c No. 300402010000187

BANK CODE NO. UBININBBJAM,

UNION BANK OF INDIA (MAIN BRANCH, GAYA)

में अपनी रक़म भेज सकते हैं

चेक या ड्राफ्ट पर केवल यह लिखें-THE GAYA MUSLIM ORPHANAGE

चेक, ड्राफ़्ट, मनीऑर्डर या ख़त भेजने का पता

Hon. SECRETARY, THE GAYA MUSLIM ORPHANAGE

At+P.o : CHERKI-824237, Distt : GAYA (BIHAR) INDIA

LOCAL DONARS मक़ामी चन्दा देने वाले

BANK A/C NO. : 10581, UNION BANK OF INDIA (MAIN BRANCH, GAYA)

Bank IFS Code No. : UBIN 0530042

CORE BANKIN G A/C NO.: 300402010010581, Mobile : 9955655960, 09801213022

E-mail : gmocde@yahoo.co.in, Website : www.gmogaya.com

नोट : कोर बैंकिंग वाले हज़रात E-mail या डाक से अपना मुकम्मल पता भेज दिया करें ताकि उसी पते पर रक़म की रसीद रवाना की जा सके ।

अध्यक्ष : डॉ० फ़रासत हुसैन एज़ाज़ी नाज़िम : डॉ० मुहम्मद एहतिशाम रसूल

इस्लामी सद्क्रान्ति

❖ मुफ़्ती तंज़ीम आलम क़ासिमी

हज़रत ईसा (अलैहि०) का ज़माना गुज़रे पांच सौ वर्ष से कुछ ज़्यादा हो गया था । उस दौरान न कोई धार्मिक नियम-सिद्धांत था और न ही कोई धर्मोपदेशक, जो लोगों को अल्लाह के आदेशों से अवगत कराये और जिनके कारण बन्दों का संबंध खुदा से मज़बूत और सुदृढ़ हो । इंजील के रूप में जो ईश्वरीय क़ानून उन्हें अल्लाह के द्वारा प्रदान किया गया था, वह उनकी मनोइच्छाओं व स्वार्थपरायणता का शिकार हो चुका था । उन्होंने इच्छानुसार अल्लाह की किताब में परिवर्तन कर दिया । क़ानून की जो दफ़ा उनके मिजाज़ के विरुद्ध थी, उनके धार्मिक गुरुओं ने कुछ सांसारिक हितों के लालच में उसमें आसानी पैदा कर दी या उसे वहां से हटाकर अलग कर दिया । धीरे-धीरे आज़ादी इतनी बढ़ी कि वे निरंकुश हो गये ।

उनके दिल में खुदा की धारणा तो थी, लेकिन वह केवल एक निष्प्राण शरीर की तरह मृत्यु-पश्चात पारलौकिक जीवन और खुदा के सामने अपने अच्छे व बुरे कर्मों की जवाबदेही का एहसास उनमें ख़त्म हो गया था, ज़ाहिर है कि किसी को अल्लाह की पकड़ का एहसास न हो तो उसके लिए हर सीमा रेखा ख़त्म हो जाती है ।

हज़रत ईसा (अलैहि०) के जाने के लम्बे समय के बाद अल्लाह के संदेश को विशुद्ध रूप में न होने के कारण शैतान को अवसर मिला । उसने लोगों के लिए अनेक बुराइयों और निर्लज्जता की राहें हमवार कीं । इसका परिणाम यह हुआ कि पूरी दुनिया बुराई में डूब गयी, विशेष-रूप से अरब प्रायद्वीप बुराइयों और निर्लज्जता का स्रोत बन गया । ईर्ष्या, लालच, धोखा, झूठ-फ़रेब, ग़ीबत, चुग़ली, ज़ुल्म-अत्याचार, लूट-मार, क़त्ल, शराब, बेशर्मी, कन्या-हत्या, लड़ाई-झगड़े, जूआ आदि कोई भी ऐसी बुराई न थी, जो अरब में न पायी जाती थी । मानो वे दरिन्दों से भी बदतर हो गये थे और बैतुल्लाह (ख़ाना-ए-काबा) जिसका सम्मान अज्ञानकाल में सारे लोग किया करते थे, उसकी केन्द्रीयता के कारण दूसरे देश और क्षेत्रों के लोग बैतुल्लाह की ज़ियारत करने मक्का आते थे । यहां की मूर्ति पूजा और दूसरी बुराइयों की धारणा उनके मन-मस्तिष्क में वास कर जातीं और फिर इस तरह दूसरे देशों व क्षेत्रों में भी वह सारी बुराइयां पैदा हो गयीं ।

तात्पर्य यह कि पूरी दुनिया कमोबेश अज्ञानता और अनेक दूसरी बुराइयों के घटाटोप अँधियारों में इस तरह डूब गयी थी कि ऐसा महसूस होता था कि अब रोशनी की शमा यहां कभी नहीं जलेगी और नेकी, भलाई तथा ईशपरायणता प्राचीन क़िस्से-कहानियां बन जाएंगी । मानव-इतिहास में शायद ही किसी दौर में इस तरह की निराशा व मायूसी हुई हो ।

अल्लाह तआला इन सारी चीज़ों को देख रहा था । उसे अपने बन्दों से मां से भी ज़्यादा मुहब्बत व ममता है । इस तरह उन्हें हैवानियत व अमानुषिता में छोड़ देना, उसकी रहमत के शान के ख़िलाफ़ थी, इसलिए अल्लाह ने इन्सानों के मार्गदर्शन हेतु दुनिया में नबी भेजने का निर्णय लिया । इस निर्णय के परिणामस्वरूप अन्तिम महाईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का जन्म 23 अप्रैल सन 571 ई० मक्का नामक शहर में हुआ । चालीस वर्ष की आयु में अल्लाह तआला ने आपको नबी बनाया । अल्लाह के आदेशानुसार आप (सल्ल०) ने मक्कावासियों को सत्य मार्ग पर चलने के लिए इस्लाम की दावत देना शुरू किया । फिर एकेश्वरवाद के आह्वान का ऐसा सफ़र शुरू हुआ कि सत्य मार्ग में हज़ारों ख़ौफ़नाक रुकावटें पैदा हो गयीं, लेकिन आप (सल्ल०) की दयालुतापूर्ण वार्तालाप और सद्व्यवहार ने सारी बाधाएं दूर कर दीं । मक्का के वही लोग जो आप (सल्ल०) के नबी बनाए जाने से पूर्व गुमराही और अमानुषिता में लिप्त थे, आप (सल्ल०) की मेहनत, लगन, नेककर्म और सत्यवादिता से वे न केवल सत्य मार्ग के गामी बने, बल्कि हिदायत के सूरज और चांद बन गये, जिनको देखकर क़ियामत तक आने वाली नस्लें अपमान और गुमराही से

मुक्ति पा सकती हैं ।

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की दूरदर्शिता के कारण दुनिया में ऐसा परिवर्तन आया, जिसका उदाहरण अंबिया (अलैहि०) के इतिहास में नहीं मिलता । आप (सल्ल०) के प्रभावकारी आह्वान और प्रचार-प्रसार ने क्या गुल खिलाए और दुनिया में किस तरह की क्रान्ति व हलचल पैदा हुई कि अनेकेश्वरवादी और पश्चिमी इतिहासकार भी आश्चर्यचकित हैं । इसकी कुछ झलकियां इस तरह हैं–

● ईश-भय और अल्लाह के सम्मुख अपने कर्मों के जवाबदेही का एहसास, एक ऐसा बिन्दु है, जिसके चारों ओर जीवन चक्र घूमता है । जब एक इन्सान अल्लाह की पकड़ से आज़ाद हो जाता है, तो फिर उसे कोई रोकने वाला नहीं होता है । ईश-भय वह आंतरिक शक्ति है, जो इन्सान को उसकी सीमाओं से गुज़रने से रोकती है । अह्ले अरब, बल्कि दुनिया में अमूमन एकेश्वरवादी की मौलिक धारणा कम हो गयी थी या केवल औपचारिक रूप से उनके दिलो-दिमाग़ में अल्लाह के अस्तित्व की एक कल्पना थी । मरने के बाद दुबारा जीवित किये जाने और कर्मों के अनुसार हिसाब-किताब को वे केवल एक मज़ाक़ समझते और कहते कि यह केवल एक पागलपन की बात है । यही वह मूल कारण है कि नुबूवत से पूर्व सारी बुराइयों ने धीरे-धीरे जन्म ले लिया और अन्ततः सारी दुनिया अज्ञानरूपी अंधकार में डूब गयी ।

अपनी नुबूवत के बाद हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने ईश-भय और मृत्यु-पश्चात पारलौकिक जीवन में अल्लाह के सामने हिसाब-किताब की धारणा उनके दिलो-दिमाग़ में बिठाया, जिसके कारण लोगों में हलाल-हराम, अच्छे-बुरे में अन्तर करने की योग्यता प्राप्त हुई और अरब में सच्चाई व न्याय का ध्वज लहराए जाने लगा । निस्संदेह यह आश्चर्य की बात है कि अभी कुछ दिनों पहले की बात थी, हर व्यक्ति स्वतंत्र था, दिलों में कोई भय नहीं, लेकिन किस तूफ़ान ने उनके दिल की दुनिया का पन्ना पलटा और नुबूवत के बाद ऐतिहासिक क्रान्ति पैदा हुई । वह क्रान्ति थी ईश-भय व पारलौकिक जीवन की मौलिक धारणा ।

हज़रत उमर (रज़ि०) का शासन काल है, एक बार यात्रा के दौरान उनको भूख लगी । दूर तक कोई बस्ती नज़र न आयी । तलाश करते-करते उनकी नज़र बकरियों के एक झुंड पर पड़ी । उसके चरवाहे से पीने के लिए दूध मांगा । चरवाहे ने यह कहते हुए अपनी विवशता प्रकट की कि यह बकरियों का झुंड मेरा नहीं है, मैं तो केवल एक देख-रेख करने वाला हूं । हज़रत उमर (रज़ि०) ने इम्तिहान के नियत से कहा कि एक बकरी मेरे हाथ बेच दो, मालिक जब पूछेगा तो कह देना कि भेड़िया खा गया । चरवाहे ने कहा, 'शहज़ादे! अगर मैंने अपने मालिक से झूठ बोल भी दिया तो अल्लाह कहां है ? जो मुझे देख रहा है । हज़रत उमर (रज़ि०) ने उसकी ईमानदारी को देखते हुए फ़रमाया, 'जब तक तुम्हारे जैसा इन्सान इस उम्मत के अन्दर मौजूद है, उस वक़्त तक इस उम्मत पर कोई परेशानी नहीं आ सकती ।'

चरवाहे का संबंध किसी प्रतिष्ठित व अमीर ख़ानदान से नहीं था । वह एक साधारण इन्सान था, मगर वह कौन-सा भय था कि जंगल और आबादी से दूर मैदान में भी वह चरवाहा एक बार झूठ बोलने पर भी राज़ी न हुआ । इसमें उसका बड़ा फ़ायदा था और बात भी बुद्धि से परे न थी कि जंगलों में अक्सर भेड़िए बकरियों को खाते ही रहते हैं, लेकिन ख़ुदा की पकड़ का एहसास उसके दिल में बैठा हुआ था, जिसके कारण वह गबन से दूर रहा । ख़ुलफ़ाए-राशिदीन, प्रतिष्ठित सहाबा (रज़ि०) व सम्मानित मुसलमानों की आश्चर्यचकित घटनाएं इस क़दर हैं कि उनकी गणना करना मुश्किल है । आप (सल्ल०) के नबी बनने के बाद आम मुसलमानों का यह हाल था ।

अरबवासी अपने आपको इबराहीमी व इस्माईली कहते, मगर वास्तव में उनका संबंध वास्तविक ख़ुदा से बिल्कुल ख़त्म हो चुका था । कुछ लोग नास्तिक थे, वे कहते थे कि सांसारिक व्यवस्था अपने आप प्राकृतिक रूप से चल रही है । ख़ुदा का कोई अस्तित्व नहीं है । कुछ ख़ुदा को मानने वाले थे, लेकिन क़यामत और जज़ा व सज़ा को नहीं मानते थे । कुछ लोग ख़ुदा और पारलौकिक जीवन में कर्मों के हिसाब से मिलने वाले दंड और पुरस्कार को भी मानते थे, लेकिन नुबूवत के इन्कारी थे । उनका विचार था कि अगर कोई पैग़म्बर हो सकता है तो उसको फ़रिश्ता होना चाहिए । अरब का इतिहास हमें बताता है कि अक्सर वहां मूर्तिपूजक थे । वे मूर्तियों को ख़ुदा नहीं समझते थे, बल्कि कहते थे कि ये ख़ुदा तक पहुंचने का माध्यम हैं । ख़ाना-ए-काबा में 360 मूर्तियां रखी हुई थीं, उनमें सबसे बड़ी मूर्ति हुबल थी, जो काबा की छत पर स्थापित की गयी थी । उन्होंने अलग-अलग ज़रूरतों के लिए हर एक-एक

मूर्ति को नामज़द कर दिया था ।

अरब के हर क़बीले की अलग-अलग मूर्ति थी, लात, उज़्ज़ा, मनात, वद, सवाअ, यग़ूस व यऊक़ मशहूर मूर्तियों के नाम हैं । इनके अतिरिक्त वहां अग्निपूजक व तारों की पूजा करने वाले क़बीले भी आबाद थे । हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने दुनिया को इस नादानी से ख़बरदार किया और मूर्तिपूजा को छोड़कर एक खुदा की इबादत करने की दावत दी । तत्पश्चात एकेश्वरवाद का ऐसा वातावरण स्थापित हुआ कि लोग मूर्तिपूजा से ऐसे विरक्त हुए कि मूर्तिपूजक, मूर्तिभंजक बन गये और अपने हाथों से मूर्तियों को तोड़कर फेंक दिया, मक्का विजय के अवसर पर अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के सच्चे साथियों ने अपने हाथों से ख़ाना-ए-काबा को मूर्तियों से पाक किया, लेकिन उनका सिर अल्लाह के अतिरिक्त किसी और के सामने न झुका ।

● आप (सल्ल०) को नबी बनाए जाने से पूर्व मालदार और धनी लोग निर्धन व असहाय लोगों पर बहुत अत्याचार करते, जो चाहते वह करते । स्त्रियों का पेट फाड़ डालना, लड़ाइयों में लोगों को जीवित जला देना, अबोध बच्चों को तलवार की नोक पर रखकर मार डालना उनके लिए आम बात थी । दया और सहानुभूति से उन्हें कोई मतलब न था । उनका दिल पत्थर हो गया था । अत: नबी बनने के बाद आप (सल्ल०) ने उन्हें सबसे पहले मानवता का पाठ पढ़ाया । मुहब्बत व भाईचारे की शिक्षा दी । एक-दूसरे के सुख-दुख में साथ देने को बड़े पुण्य का काम बताया । अत: इसका प्रभाव यह हुआ कि इस्लाम क़ुबूल करने के बाद यही लोग खुद तो न खाते, मगर दूसरों को खाना खिलाते और उनके दर्द को अपना दर्द समझते ।

एक बार एक भूखा व्यक्ति आप (सल्ल०) की सेवा में हाज़िर हुआ और उसने कहा कि मैं बहुत भूखा हूं । आप (सल्ल०) ने घर में मालूम किया कि कुछ खाने को है, उत्तर मिला कि केवल पानी है । आपने उपस्थितजनों को संबोधित करके फ़रमाया कि कोई है, जो इस सज्जन को अपना मेहमान बनाए । उपस्थित जनों में हज़रत अबू तलहा (रज़ि०)ने कहा कि या रसूलुल्लाह (सल्ल०) मैं मेहमान को अपने घर ले जाने के लिए हाज़िर हूं । वह मेहमान को अपने घर ले गये, मगर वहां पर भी खाना बहुत कम था । अबू तलहा ने अपनी बीवी से कहा कि चिराग़ बुझा दो और वही खाना मेहमान के सामने रख दो । बीवी ने वैसा ही किया। अबू तलहा (रज़ि०) मेहमान के साथ इस तरह हाथ चलाते रहे मानो वे खाना खा रहे हों । इस तरह मेहमान ने पेटभर खाना खा लिया ।

● मदीना के दो क़बीले और और ख़ज़रज में इस्लाम से पहले आपस में घोर दुश्मनी थी । आपसी पक्षपात की बुनियाद पर एक व्यक्ति अपने क़बीले के लोगों का साथ देता, ज़रा-ज़रा-सी बात पर लड़ाई-झगड़े, मार-काट की नौबत आ जाती, जो वर्षों तक चलती रहती । अत: बुआस की प्रसिद्ध लड़ाई जो 120 वर्ष तक चली । बकर और तग़लब की लड़ाई का नाम 'हरबे बसूस' है । लड़ाई की जड़ यह थी कि एक व्यक्ति का ऊंट खेत में चला गया । खेत वाली औरत ने उसे मारा । ऊंट वाले ने गुस्से में आकर औरत की छाती काट डाली । इस बात पर 494 ई० से लेकर 535 ई० तक बराबर लड़ाई चलती रही, जिसमें कुल मिलाकर 70 हज़ार आदमी मारे गये । 'हर्बे दाहिस' जो सन 568 ई० से लेकर 630 ई० तक जारी रही । इसकी बुनियाद यह थी कि एक बार घुड़दौड़ का मुक़ाबला था । दाहिस नामक घोड़ा आगे बढ़ रहा था । किसी ने उसके घोड़े को बिदका दिया । इसी बात पर ऐसी लड़ाई हुई कि क़बीले के क़बीले कट मरे । सत्य और झूठ से उन्हें कोई मतलब न था, वे केवल क़बीले व ख़ानदान की बुनियाद पर एक-दूसरे का साथ देते । इस्लाम आने के बाद ख़ानदानी और क़बाइली पक्षपात ख़त्म हो गया । इस्लाम की शिक्षा और हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के सद्व्यवहार ने सदियों से टकराने वाले क़बीलों को मानवता व भाईचारे के सूत्र में पिरो दिया । कुरआन में अल्लाह तआला फ़रमाता है–

"सब मिलकर अल्लाह की रस्सी को मज़बूती से पकड़ लो और विभेद में न पड़ो । अल्लाह के उस एहसान को याद रखो जो उसकी ओर से तुम पर हुआ है । तुम एक-दूसरे के दुश्मन थे, उसने तुम्हारे दिल जोड़ दिये और उसके अनुग्रह व कृपा से तुम भाई-भाई बन गये ।"

(कुरआन 3:103)

● निर्दयता बहुत-सी बुराइयों की जननी होती है । इस्लाम से पहले लोगों के दिल रहम व करम (दयालुता) से खाली थे, जिसके कारण बड़े से बड़े अपराध को वे सरलता से अंजाम देते, उन्हीं में से एक कन्या-हत्या और अबोध बच्चियों को जीवित ज़मीन में दफ़न कर देने की समस्या थी ।

अरब का एक व्यक्ति शमास बिन क़ैस ने अपनी सात बच्चियों को जीवित दफ़न कर दिया था, यह एक आम परम्परा थी । अब्बा, अब्बा कहकर पुकारती हुई बच्ची को वे कुएं में डाल देते थे । उन्हें बेटी के जन्म से शर्म महसूस होती थी, जिसके कारण वे इस तरह की निर्दयतापूर्ण कार्य करते थे । इस्लाम ने बेटियों को अल्लाह की रहमत बताया और उनके साथ सद्व्यवहार करने वालों के लिए स्वर्ग की ख़ुशख़बरी दी । मां के क़दमों के नीचे जन्नत (स्वर्ग) और बीवी के साथ अच्छा व्यवहार करने वाले को पसन्दीदा बताया । मर्द और औरत एक शरीर के दो भाग हैं और दोनों के लिए अलग-अलग आदेश हैं । यह इस्लाम का इतना बड़ा एहसान है कि कोई भी धर्म इसकी बराबरी का दावा नहीं कर सकता ।

● शराब सारी बुराइयों की जड़ है, इससे बुद्धि भ्रष्ट होती है । फिर गाली-गलौज, मारपीट, क़त्लो-ग़ारत और बहुत-सी बुराइयां अस्तित्व में आती हैं । नुबूवत से पूर्व लोगों में चाय की तरह शराब पीने का चलन था । अल्लाह तआला ने धीरे-धीरे उसको हराम (अवैध) क़रार दिया । इसके कारण बहुत-सी बुराइयां ख़त्म हो गयीं । जुआ और द्यूतक्रिया उनका प्रिय खेल था । समय का उनके नज़दीक कोई महत्व न था । आप (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया–

"इस्लाम की विशेषता अनर्थक व व्यर्थ चीज़ों का परित्याग करना है ।" इस धारणा के बाद द्यूतक्रिया और जुआ की कोई गुंजाइश नहीं रहती । आप (सल्ल०) ने जुआ खेलने वालों को बहुत सख़्ती के साथ मना किया है कि अकारण दूसरों के माल हड़पने का यह ज़रिया और दुश्मनी का कारण बने । नुबूवत के बाद की दुनिया इस शैतानी हरकत से पाक हुई ।

● बुराइयों का जब ज़ेहन बनता है, तो चारित्रिक व नैतिक पतन की सारी सीमाएं मिट जाती हैं और शर्म नाम की कोई चीज़ नहीं रहती है । यही कारण था कि नुबूवत से पूर्व लोग अपनी सौतेली मां से बाप के मरने के बाद शादी कर लेते और बाप की विवाहिता स्त्री उस बेटे को विरासत में मिलती थी । सगी बहनों से एक साथ शादी वैध थी । उनके यहां पत्नियों की कोई सीमा न थी । बेहयाई व बेशर्मी की यह हालत थी कि सबसे मशहूर शायर अमरुल-क़ैस अपने क़सीदे में अपनी फूफी जात बहन के साथ बदकारी का क़िस्सा मज़े ले-लेकर बयान करता था ।

नुबूवत के बाद नियम व क़ानून बनाए गये, जिससे इन्सानियत ज़िन्दा हुई । बेहयाई की जगह शर्म व हया ने ली और उन्हें एहसास दिलाया कि यह काम शैतानी है, जिसके तुम सदियों से शिकार हो । कुदृष्टि, व्यभिचार और दामपत्य जीवन की जो धाराएं इस्लामी धर्मशास्त्र में वर्णित हैं, उन सबका संबंध हया व शर्म से है और यही एक इन्सान का आभूषण है । लूटमार, हत्या, लोभ-लालच और चोरी-डकैती का रिवाज आम था । लोग अपने जान-माल को महफ़ूज़ नहीं समझते थे । जब इस्लामी चेतना लोगों के अन्दर जागृति हुई तो लोभ, लालच, ईर्ष्या, लूटमार और चोरी-डकैती को लोगों ने जड़ से उखाड़ फेंका । सनआ यमन से एक बूढ़ी औरत बहुत सारा माल-दौलत लेकर मदीना आती, मगर उस माल को लूटने वाला कोई नहीं मिलता ।

हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि०) को क़ाज़ी नियुक्त किया, लेकिन साल भर उनके पास कोई मुक़द्दमा नहीं आया । यह मनभावन और शान्तिमय-वातावरण किसके कारण अस्तित्व में आया, किसने लोगों के दिलों से लड़ाई-झगड़े की भावना को ख़त्म किया । यह इस्लाम की ही स्प्रिट (देन) थी, जिसके कारण दुनिया में शान्तिमय व क्रान्तिकारी वातावरण पैदा हुआ ।

● इस्लाम से पूर्व अरब में मानव-समानता का भेदभाव पाया जाता था । एक ग़ुलाम को अपने मालिक के साथ खाने-पीने या उसके बराबर खड़ा होने का अधिकार नहीं था । इस्लाम ने मानवीय आधारों पर सबको एक समान अधिकार दिये । इस्लाम की नज़र में कोई ऊंच-नीच, छोटा-बड़ा और श्रेष्ठ नहीं है, श्रेष्ठता है तो केवल तक़वा व ईशपरायणता के आधार पर । अतः जंगे बद्र में जो क़ैदी मुसलमानों के द्वारा बंदी बनाए गये थे, उनका बयान है कि उनके मुस्लिम आक़ा ख़ुद भूखे रहते, मगर उन्हें भरपेट खाना खिलाते । उनके सोने व आराम करने की पूरी व्यवस्था करते । वे उनके साथ अख़्लाक़ से ऐसे पेश आते थे कि ग़ुलामों को भी कभी-कभार शर्म आने लगती थी ।

जाति-बिरादरी, कुल, वंश और छोटे-बड़े की सारी दीवारें इस्लाम ने गिरा दीं । वहां पर रहन-सहन, संस्कृति-सभ्यता, आचार-विचार, शिक्षा, कला-कौशल व शिष्टता का अभाव था । नुबूवत के बाद इस्लामी शिक्षाओं के प्रभाव से लोगों के अन्दर ऐसा परिवर्तन आया कि देखते ही देखते पूरा अरब अम्न व शान्ति का गहवारा बन गया ।

समलैंगिकता और उदारवाद !

■ डॉ॰ मुहम्मद अहमद

समलैंगिकता के समर्थन में एक बार फिर आगे आये कैथोलिक ईसाइयों के सबसे बड़े धर्मगुरु 17वें पोप फ्रांसिस ने विगत 14 जनवरी को 'स्टेट ऑफ़ द वर्ल्ड' नामक अपने वार्षिक उद्बोधन में दुनिया भर में बच्चों के अधिकारों की वकालत करते हुए पोप ने कहा कि गर्भपात के बारे में सोचकर भी डर लगता है । इसके शिकार मासूम कभी दिन की रोशनी नहीं देख पाते । रोमन कैथोलिक चर्च के रूढ़िवादी लोग पोप की उदारवादी बातों की यह कहकर उचित आलोचना करते रहे कि इस प्रकार के समर्थन से समाज का तानाबाना बिखर जाएगा एवं नैतिक मूल्यों को अनावश्यक रूप अघात लगेगा । पोप बैनेडिक्ट 16वें के त्याग पत्र के बाद 19 मार्च 2013 को 76 वर्षीय पोप फ्रांसिस पोप बने थे । वे शुरू से ही समाज से गहरा सरोकार रखने वाले कई विषयों पर अपनी तथाकथित उदारवादी टिप्पणी करते आये हैं । उन्होंने गर्भपात, गर्भ-निरोधक और समलैंगिकता के प्रति बार-बार नरम रुख़ अपनाया, जिसके कारण उनकी आलोचना की जाती रही ।

ज़ाहिर है, पोप महोदय की यह तथाकथित उदारवादी नीति समाज के सच्चे शुभचिंतकों को परेशान करने वाली है । कोई भी बुराई समझौता-प्रियता से नहीं रोकी जा सकती । इसके लिए जहां समझाने-बुझाने और उपदेश-नसीहत की ज़रूरत है, जहां दंडात्मक कार्रवाई भी दरकार है, अन्यथा समाज का अस्ल स्वरूप ही बिगड़ जाएगा । वास्तव में यह एक विकृत, स्वच्छन्द और अमर्यादित सोच है ।

अभी हाल में उन्होंने समलैंगिकता की घटनाओं पर फिर इसी रुख़ का इज़हार किया था । वे गर्भपात पर भी तथा-कथित उदारवाद के चलते खुलकर कुछ कहने से बचते रहे, अर्थात समाज को इस कुप्रवृत्ति को सहन करने के लिए परोक्ष रूप से प्रेरित करते रहे ! कुछ समय पहले इटली से प्रकाशित 'जेसुइट' नामक पत्रिका को दिये विस्तृत साक्षात्कार में पोप फ्रांसिस ने कहा कि "चर्च ने अपने आपको छोटी-छोटी बातों के दायरे और मानसिक संकीर्णता के नियमों में बांध लिया है । हमें इनकी निंदा करने के मामले में इतना भावुक नहीं होना चाहिए । पादरियों को रूढ़िवादी न बनकर बदलावों का स्वागत करना चाहिए । फ्रांसिस का मत है कि चर्च को नियम क़ायम रखने और साथ ही इनमें उदारता लाने के लिए अनिवार्य रूप से मध्य मार्ग खोजना होगा । उन्होंने कहा कि जब समलैंगिकों ने उनसे यह बात कही कि चर्च द्वारा हमेशा उनकी निंदा की जाती है और वे सामाजिक रूप से आहत महसूस करते हैं तो उन्होंने कहा कि चर्च ऐसा नहीं करना चाहता । इससे पहले भी पोप महोदय समलैंगिकता का समर्थन करते रहे हैं ।

उन्होंने पिछले वर्ष जुलाई में यह बात दोहराई कि कोई समलैंगिक है और नेकी कमाने के लिए ईश्वर को चाहता है तो बीच में जज बनने वाला मैं कौन होता हूं । हर किसी को अपनी ज़िंदगी अपने तरीक़े से जीने का पूरा अधिकार है । हम उसमें अड़चन नहीं डाल सकते । लोगों की भलाई के लिए धर्म को अपने विचार व्यक्त करने का अधिकार है लेकिन ईश्वर ने हमें जन्म के समय से ही स्वतंत्रता प्रदान कर दी है, अत: किसी व्यक्ति के जीवन में आध्यात्मिक रूप से हस्तक्षेप करना संभव नहीं है ।

ज़ाहिर है, पोप महोदय की यह तथाकथित उदारवादी नीति समाज के सच्चे शुभचिंतकों को परेशान करने वाली है । कोई भी बुराई समझौता-प्रियता से नहीं रोकी जा सकती । इसके लिए जहां समझाने-बुझाने और उपदेश-नसीहत की ज़रूरत है, जहां दंडात्मक कार्रवाई भी दरकार है, अन्यथा

समाज का अस्ल स्वरूप ही बिगड़ जाएगा। वास्तव में यह एक विकृत, स्वच्छन्द और अमर्यादित सोच है। एक मनोरोग है, जिसकी उचित चिकित्सा करायी जानी चाहिए। इस पाशविक रोग के उपचार में होम्योपैथिक दवाएं लाभकारी सिद्ध हो सकती हैं।

कोई भी धर्म इस कुवृत्ति का समर्थन नहीं करता। ऋग्वेद (8/48/5,6), यजुर्वेद (4/28), यजुर्वेद (3/45), ऋग्वेद (10/5/6), यजुर्वेद (20/15,16), ऋग्वेद (10/5/6), अथर्ववेद (6/45/1) आदि में चरित्र निर्माण पर विशेष बल दिया गया है। यजुर्वेद (3/45) में स्पष्ट कहा गया है–'ग्राम, वन, सभा और वैयक्तिक इन्द्रिय व्यवहार में हमने जो पाप किया है, उसको हम अपने से अब सर्वथा दूर कर देते हैं। ऋग्वेद (7/21/5) में है कि दुराचारी व्यक्ति कभी भी प्रभु को प्राप्त नहीं कर सकता। मनुस्मृति में समलैंगिकता बड़ी बुराई मानते हुए ऐसा करने वाले को दंड और प्रायश्चित दोनों का प्रावधान किया गया है।

यह कुप्रवृत्ति बाइबल के भी ख़िलाफ़ है, मगर पोप महोदय इसकी परवाह नहीं करते! इसमें समलैंगिकता को पाप कर्म बताया गया है और इसकी उत्पत्ति पाप से बतायी गयी है (बाइबल, उत्पत्ति 19:1-13, लैव्य व्यवस्था 18:22, रोमियो 1:26, 27, 1 कुरिन्थियों 6:9)। इस्लाम इस कुप्रवृत्ति पर प्रभावकारी रोक लगाता है। कुरआन में वर्णित है कि हज़रत लूत ने अपनी क़ौम से कहा, "ऐ मेरी क़ौम के लोगो, क्या तुम वह प्रत्यक्ष अश्लील कर्म करते हो, जिसे दुनिया में तुम से पहले किसी ने नहीं किया ? तुम स्त्रियों को छोड़कर पुरुषों से कामेच्छा पूरी करते हो, बल्कि तुम नितांत मर्यादाहीन लोग हो (कुरआन, 7-80, 81)।

फ़ार्म–4
नियम–8

प्रकाशन	:	'कान्ति', D-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025
प्रकाशन अवधि	:	मासिक
प्रकाशक, मुद्रक	:	**ख़लील अहमद**
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	D-105, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025
सम्पादक	:	**डॉ॰ मुहम्मद अहमद**
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	एफ 101, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव-II, शाहीन बाग़, जामिया नगर, नयी दिल्ली-110025
स्वामित्व	:	**दावत ट्रस्ट (रजि॰)** D-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025
बोर्ड ऑफ ट्रस्टीज		
चेयरमैन	:	**मौलाना सैयद जलालुद्दीन उमरी** दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025
सेक्रेट्री	:	**जनाब मुहम्मद अहमद** दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

सदस्य : 1. **जनाब टी॰के॰ अब्दुल्लाह मौलवी,** इलाथन कण्डी हाउस, पोस्ट-पालीरी, वाया-वुन्टियाड़ी, ज़िला कालीकट, केरल, 2. **जनाब मुहम्मद जाफ़र,** दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025, 3. **प्रो॰ के॰ ए॰ सिद्दीक़ हसन,** दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025, 4. **जनाब नुसरत अली,** दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025, 5. **जनाब एजाज़ अहमद असलम,** दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025, 6. **जनाब मुन्तबा फ़ारूक़,** दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली-110025, 7. **जनाब रफ़ीक़ अहमद,** दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025, 8. **डॉ॰ वक़ार अनवर,** दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025, 9. **जनाब परवाज़ रहमानी,** 1353, बाज़ार चितली क़ब्र, दिल्ली-110006, 10. **डॉ॰ सैयद क़ासिम रसूल इलयास,** 632/9, ज़ाकिर नगर, नयी दिल्ली-110025

मैं ख़लील अहमद, एतद्द्वारा घोषित करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं।

हस्ताक्षर

ख़लील अहमद

आर०एस०एस० का असली खेल

❖ डॉ० रामबहादुर वर्मा

2014 के लोकसभा चुनाव में जीत हासिल करने के उद्देश्य से मतदाताओं को लुभाने के लिए आर०एस०एस० तथा उसके आनुषंगिक संगठन भारतीय जनता पार्टी हर तरह की पैंतरेबाज़ी कर रहे हैं। दो दशक पूर्व आर०एस०एस० व भाजपा ने मंडल अर्थात केन्द्रीय सेवाओं में पिछड़े वर्गों को दिये गये आरक्षण के विरोध में मंदिर कार्ड (राम मंदिर का निर्माण) चला था तथा इस मुद्दे पर विश्वनाथ प्रताप सिंह की सरकार गिरा दी थी। पर अब आर०एस०एस० व भाजपा मंदिर तथा मंडल दोनों को एक साथ साधने का करतब दिखा रहा है। केन्द्रीय गृहमंत्री पद पर रहते हुए आर०एस०एस० को गैरकानूनी घोषित कर प्रतिबंध लगाने वाले सरदार पटेल की 'लौह पुरुष छवि' को संघ के कट्टर स्वयंसेवक नरेन्द्र मोदी से जोड़ कर उन्हें ''छोटा सरदार'' बताया जा रहा है। इस तरह संघ परिवार के विभिन्न संगठन भाजपा को सत्ता में बिठाने के लिए तरह-तरह से जनता को रिझाने व वरग़लाने की कोशिश में लगे हैं।

भाजपा व आर०एस०एस० के अन्य आनुषंगिक संगठन अलग-अलग सुरों में इसलिए बात करते हैं जिससे जनता को उनके इरादों के बारे में सही-सही पता लग सके और भ्रम की स्थिति बनी रहे। अपने उद्देश्य के बारे में आर०एस०एस० चाहे जितना कुहासा फैलाए पर यह बात पूरी तरह स्पष्ट है कि उसका एकमात्र लक्ष्य हिन्दू राष्ट्र की स्थापना करना है। हिन्दू राष्ट्र की स्थापना को आर०एस०एस० ने अपना एकमात्र उद्देश्य माना है और संघ परिवार के सारे संगठन अलग-अलग तरीक़े से उसी लक्ष्य की पूर्ति के लिए कार्य करते हैं।

आर०एस०एस० के संस्थापकों तथा उसके परवर्ती विचारकों के वक्तव्यों एवं रचनाओं से पूरी तरह स्पष्ट है कि उनका 'हिन्दू राष्ट्र' ब्राह्मणवादी श्रेष्ठता पर आधारित होगा। वे मनु को अपना स्रोत मानते हैं, जिन्होंने मनुस्मृति में ब्राह्मणों को देवताओं का दर्जा दिया था तथा समाज में उनकी श्रेष्ठता की वकालत की थी। मनु ने शूद्रों (दलितों तथा पिछड़ी जातियों) को हिन्दू जाति व्यवस्था में सबसे निचले पायदान पर रखा था। शूद्रों के साथ जो व्यवहार निर्धारित किये थे, वे अमानवीय व अपमानजनक थे।

आर०एस०एस० के वैचारिक शिखर पुरुष तथा लगभग चार दशकों तक सरसंघ चालक रहे माधवराव सदाशिव गोलवलकर, जिन्हें संघ परिवार के लोग 'गुरु जी' कहकर संबोधित करते हैं, ने खुले तौर पर वर्ण व्यवस्था व जाति व्यवस्था का समर्थन किया था। अपनी पुस्तक 'बंच ऑफ थाट्स' (विचार नवनीत) में वे लिखते हैं–'ब्राह्मण सिर है, क्षत्रिय हाथ है, वैश्य जांघ है और शूद्र पैर है। इसका अर्थ है वे लोग जिनके लिए इस तरह की चार वर्णों की व्यवस्था है अर्थात हिन्दू है। यही हमारे ईश्वर हैं। इसी समझ से प्रेरित होकर आर०एस०एस० ने हिन्दू कोड बिल के प्रस्तावित संशोधनों का विरोध किया था। यही समझ आज संघ परिवार को मनुस्मृति की दुहाई देने के लिए प्रेरित करती है। विश्व हिन्दू परिषद, जो कि आर०एस०एस० का आनुषंगिक संगठन है, ने बार-बार ज़ोर देकर कहा है कि मनुस्मृति में सबके लिए न्याय की व्यवस्था है। मनु ने युगो-युगो तक उनकी ज़रूरतों को हिसाब में लिया था और अपनी आचार संहिता तैयार की थी। मनुस्मृति सभी युगों, सभी कालों के लिए और समूची मानवता के लिए है। यह है संघ परिवार की समझ।

संघ परिवार के हिन्दू राष्ट्र की सामाजिक व्यवस्था मनुस्मृति पर आधारित है। मनु की प्रशंसा करते हुए गुरु गोलवलकर ने उन्हें विश्व का पहला व महानतम क़ानून बनाने वाला बताया है जिन्होंने अपनी संहिता में विश्व के सभी लोगों को निर्देश दिया है कि वे हिन्दुस्तान जाकर ज्येष्ठ ब्राह्मण के पवित्र चरणों में बैठकर अपने कर्तव्यों की शिक्षा लें। जाति व्यवस्था के रूप में समाज के विभाजन को मज़बूती से स्थापित करने के बाद मनुस्मृति व्यवस्था देती है कि, ''ब्राह्मणों की सेवा ही शूद्र के लिए सर्वोच्च धर्म है।

इसके अलावा वह जो कुछ करेगा उसका फल उसे नहीं मिलेगा ।'' मनुस्मृति में स्पष्ट कहा गया है कि ब्राह्मण शूद्र को अपने भोजन का बचा जूठा अंश, अपने पुराने कपड़े, अपने अनाज का ख़राब भाग और घर के टूटे-फूटे बर्तन दे । शूद्र को संपदा नहीं एकत्रित करनी चाहिए । भले ही उसमें इसकी योग्यता क्यों न हो, क्योंकि एक शूद्र जो संपत्ति एकत्रित करता है, ब्राह्मण के मन में क्षोभ जगाता है ।

महिलाओं के लिए भी मनुस्मृति में अमानवीय बर्ताव की व्यवस्था है । मनुस्मृति में कहा गया है कि 'बचपन में स्त्री पिता के अधीन होगी, युवावस्था में पति के और जब पति न हो तो बेटों के अधीन । वह स्वतंत्र न हो । बिस्तर और बैठक, आभूषण, वासना क्रोध, चालबाज़ी, दुर्भावनापूर्ण प्रकृति और दुराचार, यही मनु ने महिलाओं की विशेषता बतायी हैं । मनु ने यह भी कहा है–''महिलाएं अपने पतियों के प्रति बेवफ़ा होती हैं, भले ही कितनी मुस्तैदी से उनकी रखवाली की जाए ।'' विधवा विवाह के प्रतिबंध का विधान भी मनुस्मृति में है ।

आर०एस०एस० के आनुषंगिक संगठन भारतीय जनता पार्टी के पूर्व अध्यक्ष व सिद्धांतकार (उस समय भाजपा का नाम भारतीय जनसंघ था) दीनदयाल उपाध्याय ने भी कहा– ''चार जातियों की हमारी अवधारणा यह कहती है कि वे विराट पुरुष के चार अंग हैं । विराट पुरुष के सिर से ब्राह्मण, हाथों से क्षत्रिय, पेट से वैश्य और पैरों से शूद्र बने । इस आधार से वर्णव्यवस्था की उत्पत्ति हुई । यदि इस विचार को ध्यान में नहीं रखा गया तो जातियां अनुपूरक होने के बजाय संघर्षरत हो जाएगी । इससे व्यवस्था का स्वरूप बिगड़ जाएगा ।'' उपाध्याय के अनुसार वर्णव्यवस्था में कोई दोष नहीं है । इस व्यवस्था में बिगाड़ आ गया है, उसे दुरुस्त करने की आवश्यकता है । क्या तथाकथित उच्च जातियों के प्रति भाजपा की पक्षधरता का इससे बड़ा प्रमाण और क्या हो सकता है ।

आर०एस०एस० जिस हिन्दू राष्ट्र का निर्माण करना चाहता है, उसमें अल्पसंख्यकों को वह दूसरे दर्जे का नागरिक बनाना चाहता है । गुरु गोलवलकर ने अपनी पुस्तक 'बंच ऑफ़ थाट्स' में देश के तीन शत्रु गिनाये हैं । वे हैं ईसाई, मुसलमान व कम्युनिस्ट । वे इन तीनों को देशद्रोही तथा राष्ट्र के लिए संकट मानते हैं । उनके मत से मुसलमानों तथा ईसाइयों का राष्ट्रीय तादात्मीकरण तभी हो सकता है जब वे हिन्दुत्व के सिद्धान्तों जीवन पद्धतियों को अपना लें । जातियों को वे सामाजिक एकता के लिए ज़रूरी मानते हैं । गोलवलकर ने 'बंच ऑफ़ थाट्स' में लिखा है कि जाति व्यवस्था भंग होने के कारण ही भारत मुसलमानों के आक्रमण का शिकार हुआ । इस प्रकार गुरु गोलवलकर हिन्दू राष्ट्र के लिए जातियता (और जातीय श्रेष्ठता भी) को आवश्यक मानते हैं ।

आर०एस०एस० का गठन ही तब हुआ जब महाराष्ट्र में जोतिबाफूले, शाहू जी महाराज, डॉ० भीमराव अम्बेडकर ने ब्राह्मणवाद का विरोध कर दलितों तथा पिछड़ी जातियों को इससे दूर रहने को कहा । डॉ० अम्बेडकर के अनुयायियों ने तो 'मनुस्मृति' जलाकर हिन्दू धर्म से संबंध विच्छेद तक की घोषणा की । इस प्रकार महाराष्ट्र के कट्टर ब्राह्मणवादी लोगों को ज्योतिबा फूले, शाहू जी महाराज, डॉ० अम्बेडकर के आन्दोलन शूल की तरह चुभते थे । इसलिए नागपुर (महाराष्ट्र) में ही आर०एस०एस० के माध्यम से हिन्दूवादी (ब्राह्मणवादी) शक्तियों को अपने ढहते क़िले को बचाने तथा अपना वर्चस्व पुनः क़ायम करने की योजना बनायी । यह कोई संयोग नहीं है कि कोई भी दलित या पिछड़ा आज तक आर०एस०एस० का सरसंघचालक नहीं बना ।

ब्राह्मणवाद तथा मनुवाद की रक्षा के लिए आर०एस०एस० ने हिन्दूराष्ट्र का नारा दिया जिससे कि दलितों एवं पिछड़ों को भी जो कि हिन्दुओं में बहुसंख्यक हैं, को अपने पीछे लामबंद करे । हिन्दुओं को एकजुट करने के लिए मुसलमानों तथा ईसाइयों की देशभक्ति पर संदेह पैदा कर उन्हें आक्रमण का निशाना बनाया, जिससे कि उसका पिछड़ा एवं दलित विरोधी चेहरा छिपा रहे । वे पिछड़ी जातियों एवं दलितों के एक हिस्से को भ्रमित करने में सफल भी रहे ।

उन्होंने डॉ० अम्बेडकर के बनाए संविधान की आलोचना की, क्योंकि वह संविधान मानव समानता तथा धर्मनिरपेक्षता का उद्घोष करता था । इसीलिए आज भी आर०एस०एस० भारतीय संविधान का विरोध करता है तथा ऐसा शासन विधान चाहता है जो कि भारत को हिन्दू राष्ट्र बना सके । आवश्यकता है कि हिन्दुत्व हिन्दू राष्ट्र की आड़ में मनुवादी मूल्यों की संरक्षक तथा पक्षधर आर०एस०एस० तथा उसके राजनीतिक मुखौटे भारतीय जनता पार्टी की असलियत को पहचाना जाए वरना भारतीय लोकतंत्र को इसकी भारी क़ीमत चुकानी पड़ेगी ।

उपेक्षित न हों समाज सुधार

❖ भारत डोगरा

हाल के समय में आर्थिक प्रगति के मुद्दे ही हावी रहे हैं, जबकि समाज सुधार के सरोकार पीछे छूट रहे हैं । इस स्थिति में यह ज़ोर देकर कहना ज़रूरी है कि दुख-दर्द कम करने के लिए समाज सुधार के मुद्दे बहुत ज़रूरी हैं व समाज सुधार की सही प्राथमिकताएं तय होनी चाहिए । समाज में जाति, धर्म, लिंग, रंग, नस्ल आदि पर आधारित सब तरह के भेदभाव को दूर करने की संवैधानिक ज़िम्मेदारी को उच्च प्राथमिकता मिलनी चाहिए । क़ानून के पालन के साथ इसके लिए जन अभियान के रूप में भी प्रयास करने चाहिए ।

सांप्रदायिकता फैलाने के किसी भी कुप्रयास को रोकना चाहिए । सांप्रदायिकता का दुष्प्रचार करने व हिंसा फैलाने वाले किसी भी व्यक्ति या संगठन के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई होनी चाहिए । सभी नागरिकों को अपने धर्म का पालन करने का पूरा अधिकार है, पर दूसरे धर्मों की क्षति या अपमान करने का कोई अधिकार नहीं है । राज्य को सब धर्मों को समानता के आधार पर देखना चाहिए व धर्मनिरपेक्षता की संवैधानिक ज़िम्मेदारी सावधानी से निभानी चाहिए । जो कार्य निश्चित तौर पर सामाजिक सुधार के दृष्टिकोण से किये जाते हैं, उसके लिए समाज में पर्याप्त स्वतंत्रता मिलनी चाहिए ।

सरकार को स्वयं भी दहेज, हर तरह के नशे, अश्लीलता, बाल विवाह, अंधविश्वासों, धर्म की आड़ में शोषण व भ्रष्टाचार की बुराईयों को दूर करने के लिए सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए । नयी तकनीकों जैसे टी॰वी॰ से फैलते अंधविश्वासों पर भी रोक लगनी चाहिए । परिवार, मुहल्ले, गांव समुदाय इन सभी स्तरों पर आपसी मेलजोल बढ़ाने, सहयोग व सद्भावना से मिलकर रचनात्मक कार्य को प्रोत्साहित करना चाहिए । परिवार में टूटने व बिखराव रोकने के प्रयास होने चाहिए । त्योहार व उत्सव मनाने में बड़ी कुरीतियां आ गयी हैं जिनसे समाज व पर्यावरण की क्षति होती है तो सरकार व समुदायों के परस्पर प्रयास से बुराइयों पर रोक लगनी चाहिए । अच्छी परंपराओं की रक्षा के साथ कुरीतियों व अंधविश्वासों का विरोध भी ज़रूरी है । सब तरह के नशे को समाप्त करने के लिए सरकार व समुदायों के परस्पर सहयोग से प्रयास तेज़ होने चाहिए । शराब की दुकानों संबंधी नियम ऐसे होने चाहिए कि गांवों में शराब का चलन न बढ़े तथा अन्य सभी नियमों का भी पालन हो । सरकार को शराब की बिक्री को अपनी आय बढ़ाने का साधन नहीं बनाना चाहिए । मादक पदार्थों की तस्करी, नशा बढ़ाने में लगे अपराधियों, माफ़िया व भ्रष्टाचार के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई होनी चाहिए। सिगरेट, बीड़ी, गुटके व तम्बाकू के अधिक उपयोग को नियंत्रित करने के प्रयास तेज़ होने चाहिए ।

समाज में महिलाओं की बराबरी सुनिश्चित करने व हर तरह के लिंग आधारित भेदभाव दूरे करने को उच्च प्राथमिकता मिलनी चाहिए । भ्रूण हत्या को दूर करने व कन्या शिशु को बेहतर माहौल प्रदान करने के विविध प्रयास आगे बढ़ने चाहिए । छात्राओं को शिक्षा की सब ज़रूरी सुविधाओं में विशेष प्रोत्साहन मिलना चाहिए । महिलाओं के विरुद्ध अपराधों व यौन शोषण को रोकने के बहुपक्षीय प्रयासों को उच्च प्राथमिकता मिलनी चाहिए । पंचायत राज व शहरी विकेन्द्रीकरण में 50 प्रतिशत व राज्य/ राष्ट्रीय स्तर पर विधायिका में कम से कम 33 प्रतिशत आरक्षण महिलाओं के लिए सुनिश्चित होना चाहिए । भूमि व आवास संपत्ति पति-पत्नी दोनों के नाम होने चाहिए व एकल महिलाओं की हक़दारी अलग से सुनिश्चित होनी चाहिए, पर कृषि में उत्तराधिकार नियम ऐसे नहीं हो सकते हैं कि गांव की भूमि का स्वामित्व निरंतरता से गांव के बाहर जाए । विकास संबंधी महिलाओं की समझ को व्यापक स्तर पर समझने व उससे सीखने के प्रयास करने चाहिए । सभी सार्थक क्षेत्रों में महिलाओं को आगे आने के बेहतर अवसर मिलने चाहिए । (विविधा फ़ीचर्स)

मुनअम पब्लिक स्कूल

(सी०बी०एस०ई०, दिल्ली से सम्बद्धता प्राप्त, 10+2, इंग्लिश मिडियम विद्यालय)
महाराजगंज, पो० दादपुर, जिला हजारीबाग, झारखण्ड।

नामांकण सुचना

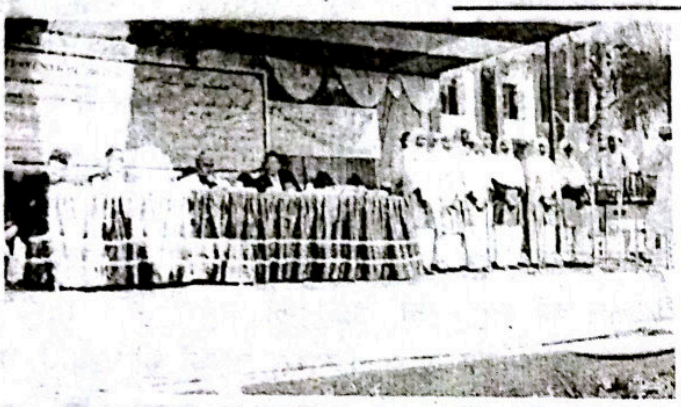

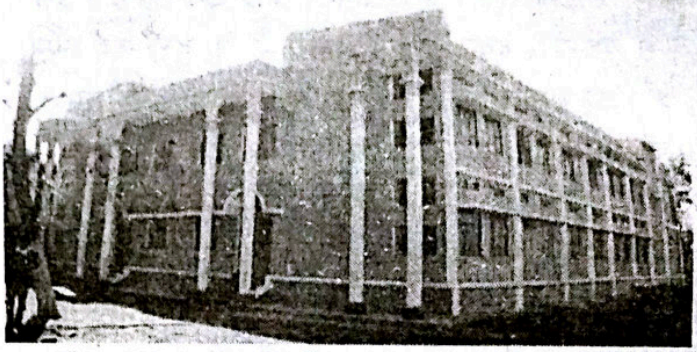

हजारीबाग के प्राकृतिक सौन्दर्य से भरपुर पहाडी क्षेत्र में स्थापित, विशाल कैम्पस में फैला एक अति-आधूनिक शैक्षणिक संस्था जहां छात्र-छात्राओं के लिए माडर्न स्कूल की तमाम सुविधाएं उपलब्ध हैं।

सफलता का सत्रहवां साल - मुस्लिम लडकीयों के लिए नायाब तोहफा

लडकीयों के लिए 100 बेड का शानदार हॉस्टल

सत्र 2013-2014 *के लिए छात्रावास में रह कर शिक्षा प्राप्त करने के इच्छुक छात्र-छात्राएं* 150/- रू0 *अदा कर के फार्म एंव प्रास्पेक्टस स्कूल काउंटर से प्राप्त करें या* 175/- रू0 *का ड्राफ्ट भेज कर डाक से भी प्राप्त किया जा सकता हैं। विशेष जानकारी हेतु सम्पर्क करें -*

मो0 09431530878, Website : munammission.org
E-mail-munam_school2000edu@yahoo.com

एस0एम0 नईम
डायरेक्टर
एम0ए0, बी0एड

वकील अहमद
प्रिन्सिपल
बी0एस0सी0, बी0एड

पहचान पत्र

डॉ॰ मुहम्मद दाऊद
(नगीना, बिजनौर)

कहानी

सुबह सब ही लोग उठ गये पर छोटू वहीं अपनी कोठरी में पड़ा था। उसके पड़ोसी ज़हीरा से न रहा गया, बोला देखें तो सही मामला क्या है, शायद रात देर से सोया हो इस वजह से न उठ सका हो दरवाज़े पर कई आवाज़ें दीं और दरवाज़ा भी खटखटाया पर कोई जवाब नहीं मिला, अब और ज़ोर से दरवाज़ा बजाया। इसी शोर में आस-पास के लोग भी जमा हो गये। सब ने ज़ोर-ज़ोर से आवाज़ लगायी कोई उत्तर नहीं आया, आख़िर सब ने दरवाज़ा तोड़ने का फ़ैसला किया। लेकिन बाले ने यह राय दी भैय्या मामला गंभीर है चौधरी साहब को बुलाओ जो कुछ करना है उनके सामने करना। ऐसा न हो कि कोई ऐसी वैसी बात हो और हमारे गले पड़ जाएं। बात ठीक थी, दो तीन आदमी चौधरी के पास पहुंचे। चौधरी साहब ने पहले तो ढंग से बात ही नहीं की दूसरे वे थके हुए भी बहुत थे।

कल उन्होंने सारे दिन ग़रीबों को कम्बल और लेहाफ़ बांटे। अपने इस कारनामे पर वे खुश भी बहुत थे, सारी बस्ती में उनकी सख़ावत का चर्चा था। कोई कह रहा था ग़रीबों का हमदर्द अगर कोई हो तो ऐसा हो, कोई कहता था चौधरी साहब इन्सान के रूप में देवता हैं देवता।

कड़ाके की सर्दी क्या शुरू हुई चौधरी साहब ने अपनी तिजोरी ही खोल दी, सारी बस्ती में तो चर्चा थी ही अख़बारों में भी ख़ूब आया, अगर किसी ने यह कहा कि पहचान-पत्र की शर्त मुनासिब नहीं तो उसकी आवाज़ दब कर रह गयी बहरहाल सब मिलकर चौधरी साहब के पास पहुंचे और उन्हें सारी कहानी की जानकारी दी और जो कुछ हो आपके सामने हो ख़ुदा न करे कोई ऊंच-नीच हो गयी तो कौन संभालेगा। सारी बस्ती में आपके अलावा और है ही कौन जो हम ग़रीब बेसहारा लोगों का ध्यान रखता हो। काफ़ी हुज्जत के बाद चौधरी साहब चलने पर आमादा हुए इतने में यह ख़बर सारे मुहल्ले में फैल गयी कि छोटू की कोठरी अभी तक बन्द है। लोहे के छोटे-बड़े औज़ार लाकर दरवाज़ा तोड़ा गया, देखा तो छोटू और उसका छोटा बच्चा दोनों एक-दूसरे से चिमटे पड़े हैं और दोनों की मौत हो चुकी है। यह ख़बर कि छोटू और उसके बच्चे की मौत सर्दी के कारण हो गयी। स गांव में ख़बर फैल गयी। लोगों का छोटू की कोठरी पर तांता बंध गया।

कोई कह रहा था कल तो चौधरी साहब ने सारे ग़रीबों को लिहाफ़ और कम्बल बांटे है, "कहीं किसी की इस कड़ाके की सर्दी में मौत न हो जाए और वही हुआ जिसका डर था। समझ में नहीं आता छोटू कैसे रह गया। लिहाफ़ तो बड़ी बात है उसके पास तो क़म्बल भी नहीं निकला। एक-दूसरे ने कहा भय्या तुम्हें कुछ पता भी है, तीन-चार दिन पहले उसका लिहाफ़ जल गया था। एक दिन बाप-बेटे दोनों ताप रहे थे आग का एक पतंगा लिहाफ़ पर जा पड़ा। अन्दर ही अन्दर रूई सुलगती गयी जब पता चला तो ढेर सारा लिहाफ़ जल चुका था। ख़ैर यह तो जो कुछ होना था हो गया मगर जब हमने उससे कहा जा चौधरी साहब के यहां इतने लिहाफ़ कम्बल बंट रहे हैं तू भी ले आ, तो उसने कहा मैं तो उनके यहां गया था। वे मुझे ख़ूब जानते हैं मैंने तो कई साल उनके यहां काम भी किया है पर छूटते ही उन्होंने मुझसे पहचान पत्र मांगा।

मैंने कहा वह तो मैं नहीं लाया। चौधरी साहब एक दम बिगड़ गये मुझे गालियां ही नहीं दी बाहर भी निकलवा दिया। मैं हरगिज़ चौधरी साहब के पास नहीं जाऊंगा। चाहे मर जाऊं। घासी राम की यह बात सबने बड़े ग़ौर से सुनी और इस हट पर सब ही अफ़सोस करने लगे कि रात-दिन की पहचान के बाद भी पहचान पत्र मांगना कुछ अच्छी बात नहीं है। रमज़ानी ने तो यहां तक कह दिया चौधरी साहब आज जिस हवेली में बिराजमान हैं छोटू के बड़े ताऊ की ही तो थी। उनके हालात बिगड़ गये और कौड़ियों के भाव चौधरी साहब ने पूरी हवेली ख़रीद ली। आज उनकी औलाद पर बुरा वक़्त पड़ा तो एक लिहाफ़ के लिए

पहचान-पत्र मांग रहे थे । कोई बड़ा दान करते तो जाने क्या मांगते । जितने मुंह उतनी ही बातें । बात पुलिस थाने तक भी पहुंच गयी । सर्दी के कारण जहां-तहां से मौतों की ख़बरें आ रही थीं । काफ़ी कहने सुनने के बाद पोस्ट मार्टम की बजाय पंचायत नामे पर बात टिक गयी और पंचायतनामा भर दिया गया । अब बात क्रिया कर्म की थी वह भी कोई मामूली ख़र्च की बात न थी । सबके कहने-सुनने से चौधरी साहब ने उसकी भी हामी भर ली और लाश को कोठरी से बाहर निकाला गया ।

नहलाने-धुलाने के लिए जब छोटू के हाथ पैर सीधे किये जाने लगे तो उसके एक हाथ की मुट्ठी बन्द थी और उसमें कोई कागज़ का टुकड़ा मालूम होता था ।

सबने काफ़ी ज़ोर लगाया । पर मुट्ठी न खुली । चौधरी साहब ने एक मोटी-सी गाली दी "अबे तुम ज़िन्दा के हाथ क्या खोलते, जब तुम मुर्दा के हाथ ही नहीं खोल पा रहे तो । सब एक तरफ़ हटो चौधरी साहब ने दांत भींच कर जो ज़ोर लगाया तो मुट्ठी खुल गयी पर यह देखकर सब दंग रह गये उसकी मुट्ठी में वह कागज़ का टुकड़ा उसका पहचान-पत्र था ।

ग़ज़ल

ईमान की ज़मीं पे खड़े हो सको, अगर,
सौ मुश्किलों में आएंगी आसानियां नज़र ।
शोले उगलती धूप से पाना हो पर मफ़र,
पास आओ मेरे, कहता है ये इक घना शजर ।
चिपका के होंठों पर हंसी पढ़ डाली एक-एक,
दरकार जिसकी थी नज़र आयी न वो ख़बर ।
किस मस्अले पे हो गयी इतनी तनातनी,
महफ़िल में बौखलाया हुआ है बशर-बशर ।
कुछ ज़ायक़े में ख़ूब तो बेज़ायक़ा हैं कुछ,
चखकर तो देखिए ये सियासत के हैं समर ।
हर काम में त्रिशंकु का रुत्बा मिला उसे,
करता रहा जो शख़्स हमेशा अगर-मगर ।
अपने ज़वाल को भी जो कहते रहें उरूज,
'दरवेश' रहम आये न क्यों उनके हाल पर ।

'दरवेश' भारती
डी-38, निहाल विहार, नांगलोई, नयी दिल्ली-41

साहित्य समाचार

राष्ट्रीय प्रतिभा सम्मान हेतु प्रविष्टियां आमंत्रित

अ०भा० साहित्य संगम, 261/3, ताम्बावती मार्ग, आयड़, उदयपुर-313001 सम्पूर्ण देश के प्रतिभाशाली साहित्यकारों, कवियों, लेखकों एवं सम्पादकों से वर्ष-2014 (प्रथम) के राष्ट्रीय सम्मानार्थ प्रविष्टियां आमंत्रित करता है । संस्था के संरक्षक प्रसिद्ध साहित्यकार एवं कवि श्री देवेन्द्र कुमार मिश्रा ने यह जानकारी देते हुए बताया कि सम्मानोपाधियों में कवि-कुलाचार्य, कवि-सम्राट, अक्षरादित्य, कलम-कलाधर, काव्य-कुमुद, काव्य-कौस्तुभ, काव्य-कल्पतरु, काव्य-कुमुदिनी, काव्य-कल्पेश, काव्य-कलावंत, काव्य-कलानिधि, काव्य-किरण, काव्य-कादम्बिनी, काव्य-कदम्ब, काव्य-कल्पज्ञ, काव्य-केसरी, साहित्य-सागर, साहित्य-सुघट, साहित्य-सरोज, साहित्य-संजीव, साहित्य-संजय, साहित्य-सुदर्शन, साहित्य-सुधाकर, साहित्य-सुरभि, साहित्य-सौरभ, साहित्य-सरताज एवं साहित्य-सर्वज्ञ की सम्मानोपाधियां उनके साहित्यिक योगदान के आधार पर प्रदान की जाएंगी । इच्छुक प्रतिभागी अपनी श्रेष्ठ पुस्तक (कृति) हिन्दी, संस्कृत, उर्दू, गुजराती, राजस्थानी, मराठी एवं अंग्रेज़ी भाषा में मुद्रित की दो प्रतियां, अपना संक्षिप्त परिचय, एक रंगीन फ़ोटो तथा स्वयं के दो पतायुक्त पोस्टकार्ड 25/- रुपये के छोटे पोस्टेज टिकट (एक-एक रुपये वाले) के साथ 31 मार्च 2014 तक पंजीकृत डाक अथवा कोरियर द्वारा उपरोक्त पते पर भिजवाकर प्रतिभागी बन सकते हैं । कोरियर से भिजवाते समय कार्यालय का फ़ोन नं० 2411029 या मो० 94137-63991 अवश्य लिखें ।

लेखकों एवं रचनाकारों से

"कान्ति" में प्रकाशनार्थ जो रचनाएं हमें मिलती हैं, उनकी स्वीकृति/अस्वीकृति की सूचना अथवा रचनाओं की वापसी के लिए अपना पता लिखा लिफ़ाफ़ा डाक टिकट सहित अवश्य भेजें । इसके अभाव में रचनाओं के विषय में हम आपको जानकारी देने में असमर्थ हैं । ध्यान रहे कि पर्याप्त डाक टिकट लगाकर प्रकाशनार्थ सामग्री भेजें, ताकि डाक, बैरंग न हो । आशा है, आपका सहयोग मिलता रहेगा । **-संपादक**

خطبات

مولانا سید ابوالاعلیٰ مودودیؒ

موجودہ عہد کے لسانی وفکری مزاج کو سامنے رکھتے ہوئے اسلام کے بنیادی ارکان کی اہمیت وضرورت پر دل نشیں اور آسان انداز میں یقین آفریں کتاب۔

اردو

اول	[حقیقتِ ایمان]		16.00
دوم	[حقیقتِ اسلام]		16.00
سوم	[حقیقتِ صوم وصلوٰۃ]		22.00
چہارم	[حقیقتِ زکوٰۃ]		18.00
پنجم	[حقیقتِ حج وجہاد]		24.00
خطبات مکمل		100.00 [PB]	125.00 [HB]

ہندی

اول	[ایمان کی حقیقت]	19.00
دوم	[اسلام کی حقیقت]	18.00
سوم	[نماز، روزہ کی حقیقت]	23.00
چہارم	[زکوٰۃ کی حقیقت]	18.00
پنجم	[حج کی حقیقت]	17.00
خطبات مکمل		95.00

انگریزی

Fundamentals of Islam - I	28.00
Fundamentals of Islam - II	30.00
Fundamentals of Islam - III	28.00
Fundamentals of Islam - IV	26.00
Fundamentals of Islam - V	30.00
Fundamentals of Islam	130.00 PB 160.00HB

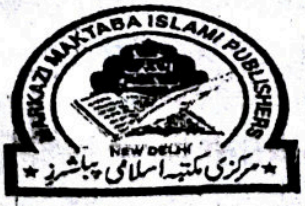

مرکزی مکتبہ اسلامی پبلشرز، نئی دہلی ۲۵

D-307, Dawat Nagar, Abul Fazl Enclave, Jamia Nagar, New Delhi-110025

Phone: 26971652, 26954341, 26946447(D) Fax: 26947858

E-mail: mmipublishers@gmail.com • **Website:** www.mmipublishers.net

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०)

● संपादन प्रभाग

'इन्साइक्लोपीडिया ब्रिटानिका' में उल्लिखित है–"समस्त पैग़म्बरों और धार्मिक क्षेत्र के महान व्यक्तित्वों में मुहम्मद सबसे ज़्यादा सफल हुए हैं।" (पृष्ठ 21)

विश्व प्रसिद्ध अंग्रेज़ विद्वान माइकल एच० हार्ट ने विश्व के 100 महापुरुषों के जीवन पर 'द हंड्रेड' शीर्षक एक कालजयी ग्रंथ लिखा। इस पुस्तक में श्री हार्ट ने अल्लाह के अन्तिम रसूल विश्वनायक हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) (570-632 ई०) को विश्व के 100 महापुरुषों में से पहले स्थान पर रखा। श्री हार्ट ने मानव-इतिहास तथा संपूर्ण विश्व पर महापुरुषों के व्यक्तिगत प्रभावों को अपने चयन का आधार माना, उनके विचार में हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) मानव-इतिहास के सर्वाधिक प्रभावशाली महापुरुष हैं। उनके शब्दों में :

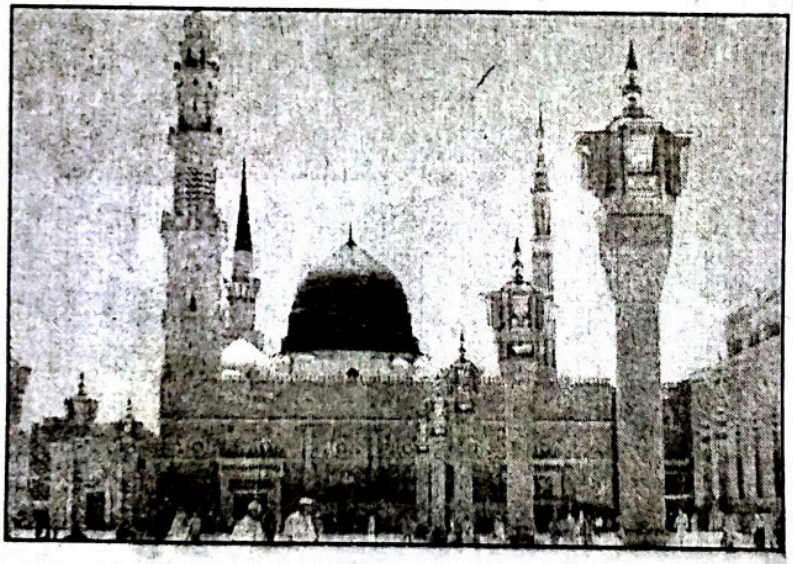

'इस पुस्तक का अत्यंत विचारोत्तेजक तथ्य मेरे द्वारा निर्धारित क्रमांक में हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को हज़रत ईसा (अलैहि०) से भी ऊंचा स्थान देना है, क्योंकि मेरे विचार में ईसाई धर्म की स्थापना और विकास में हज़रत ईसा का जितना व्यक्तिगत प्रभाव पड़ा था, उसकी अपेक्षा इस्लाम धर्म की पुनर्स्थापना और विकास में हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का व्यक्तिगत प्रभाव बहुत अधिक था।...' मेरे द्वारा मानव इतिहास के सर्वाधिक प्रभावशाली महापुरुषों की सूची में हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को प्रथम स्थान देने पर कुछ पाठक ताज्जुब कर सकते हैं और कुछ सवाल भी कर सकते हैं। परन्तु मानव-इतिहास में वे एकमात्र ऐसे महापुरुष थे, जो धार्मिकता और धर्मनिरपेक्षता दोनों स्तरों पर सर्वाधिक सफल हुए हैं।

उच्च कुल में जन्मे और पले-बढ़े हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने विश्व के सबसे बड़े धर्मों में से एक–इस्लाम की पुनर्स्थापना तथा ऐसी हिकमत के साथ उसका प्रचार-प्रसार किया कि इसके आधार पर विश्व के सर्वाधिक प्रभावशाली तथा महानतम राजनेता और समाज-सुधारक बन गये। आप (सल्ल०) के देहांत के तेरह-चौदह सौ वर्ष बाद भी आप (सल्ल०) का प्रभाव सर्वाधिक सशक्त, प्रबल और व्यापक बना हुआ है।

प्रस्तुत में उल्लिखित अधिकांश महापुरुषों को सभ्यता एवं संस्कृति के प्रमुख केन्द्रों, अत्यंत सुसभ्य अथवा राजनैतिक दृष्टि से उन्नत धुरी राष्ट्रों में जन्म लेने तथा पलने-बढ़ने का सुअवसर और लाभ प्राप्त हुआ है, परन्तु हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) दक्षिणी अरब के मक्का शहर में 570 ई० में पैदा हुए थे, जो क्षेत्र उस समय दुनिया का पिछड़ा इलाक़ा था। वह इलाक़ा व्यापार, कला और ज्ञान के केन्द्रों से बहुत दूर था। वे मात्र छह वर्ष की उम्र में अनाथ हो गये थे। वे बचपन से ही अपने परिवेश में अत्यंत सुशील और दुर्लभ व्यक्तित्व के धनी थे। इस्लामी रिवायतों के अनुसार वे पढ़े-लिखे नहीं थे। उनकी आर्थिक स्थिति तब सुधरी, जब उन्होंने 25 वर्ष की आयु में एक धनी विधवा हज़रत ख़दीजा (रज़ि०) से शादी की। जब वे 40 वर्ष की अवस्था को पहुंचे तो उनमें असाधारण एवं विलक्षण लक्षण प्रकट हुए कि वे महत्वपूर्ण और महान व्यक्ति हैं।

बर्नार्ड शा अपनी किताब 'इस्लाम सौ साल के बाद' में कहते हैं–

महानतम, अद्वितीय व्यक्तित्व

पूरी दुनिया शीघ्र ही इस्लाम को स्वीकार कर लेगी । अगर वह उसे उसके स्पष्ट नाम के साथ स्वीकार न करे, तो उसे (किसी दूसरे) नाम से अवश्य स्वीकार करेगी । एक दिन ऐसा आएगा कि पश्चिम के लोग इस्लाम धर्म को गले से लगाएंगे । पश्चिम पर कई सदियां गुज़र चुकी हैं और वह इस्लाम के संबंध में झूठ से भरी हुई किताबें पढ़ता चला आ रहा है । मैंने मुहम्मद (सल्ल०) के बारे में एक किताब लिखी थी, किन्तु अंग्रेज़ कुरीतियों और परम्पराओं से हटकर होने के कारण वह ज़ब्त कर ली गयी ।'

जार्ज बर्नार्ड शा ने जनवरी 1933 में भारत आगमन पर लाहौर नगर में "द लाइट" के प्रतिनिधि से हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के बारे में अपने विचार यूं प्रकट किये थे–

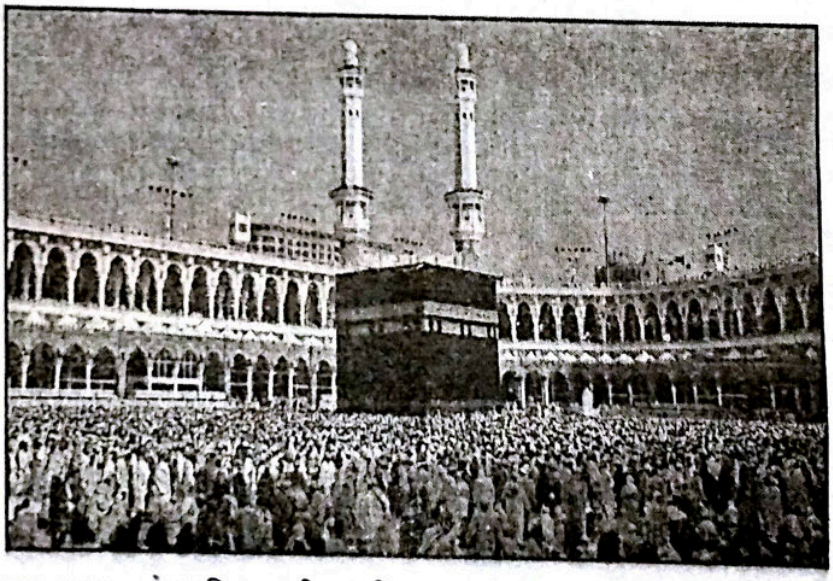

'मैंने हज़रत मुहम्मद के जीवन का अध्ययन किया है वह एक महान व्यक्ति थे, मेरे विचार से उन्हें मानवता का मुक्ति-दाता कहना चाहिए । मुझे विश्वास है कि यदि उनके जैसा इन्सान वर्तमान में संसार का अधिनायक बन जाता तो दुनिया की सारी जटिल समस्याओं का समाधान हो जाता और तमाम इन्सान सुख शान्ति की दौलत से मालामाल हो जाते ।'

जार्ज सेल, जिन्होंने कुरआन का अंग्रेज़ी भाषा में अनुवाद किया है, अपने प्राक्थन में लिखते हैं–

मुहम्मद (सल्ल०) ने विशुद्ध ढंग से अपना धर्म प्रचार किया, अत: मदीना जाने से पूर्व उनके साहसिक प्रयत्नों की सारी सफलता ज़ोर-ज़बरदस्ती से नहीं बल्कि निश्चित रूप से प्रेरणा द्वारा प्राप्त की गयी है । उकवा के स्थान पर दूसरी बार वफ़ादारी का शपथ लेने से पूर्व, उन्हें किसी बल प्रयोग का क़तई कोई आदेश नहीं था, और क़ुरआन में अनेकों स्थान पर जिनके बारे में उनका दावा था कि ईश्वर की ओर से अवतरित होते हैं, उसके अंश जो उनके मक्का के निवास काल में अवतरित हुए उन्होंने घोषणा की कि उनका कार्य केवल धर्म प्रचार है और इसको न मानने की स्थिति में आने वाली यातनाओं से डराना है । उन्हें इस धर्म को मानने के समय लोगों पर ज़ोर-ज़बरदस्ती का कोई अधिकार नहीं है, लोग मानते हैं या नहीं मानते हैं, इससे उनको कोई मतलब नहीं यह केवल अल्लाह का काम है । और उन्होंने अपने अनुयायियों को बल-प्रयोग के बदले उनके ईमान के कारण दिये गये दुखों को धैर्य से सहन करने की सलाह दी और जब स्वयं उनके सामने वह स्थिति उत्पन्न हुई तो उसका प्रतिशोध करने के बजाय वे अपने जन्म स्थान को छोड़कर मदीना चले गये । (पृ० 34)

जार्ज सेल के उक्त उद्धरण का मूल पाठ इस प्रकार है–

Hitherto Muhammad has propagated his religion by fair means so that the whole success of his enterprise before his flight to Meding, must be attributed to persuation only and not to compulsion, For before this second bath of fealty or inauguration of Aaba, he had no permission to use any force at all and in several places of the Koran, which he pretended were revealed during his stay at Mecca, he declared his business was only to preach and admonish that he had no authority to compell any person to embrace his religion and that whether people believed or

not was not his concern but belonged to use force that he exhorted them to bear patiently there injuries which were offered them to on account of their faith, and when presented himself chose rather to quit place of his birth and retire to Madina them to make any resistence."

(George Sale-Translation of Koran Page 34)

यह तो उन दिनों की बात है जब इस्लाम को शक्ति और सत्ता प्राप्त न थी । अब यह देखिए कि जब इस्लाम विजयी हुआ, तो इस समय आप (सल्ल०) की नीति और व्यवहार का क्या रंग रहा ।

Sir William Muir (1819-1905) The Life of Mohammad में लिखते हैं–

मक्का वाले जिस तरह एक लम्बे समय तक आपके दावों के विरुद्ध हठधर्मी से जंग करते रहे उस पर विजय प्राप्त करने वाला कोई भी व्यक्ति अपने अपमान का बदला आग और ख़ून के रूप में इस तरह लेता कि उसके चिन्ह हमेशा के लिए अमिट हो जाते, परन्तु मुहम्मद (सल्ल०) ने केवल कुछ अपराध व्यक्तियों को छोड़कर जीवन माफ़ी की घोषणा की और अतीत में तमाम अपमान, हंसी मज़ाक़ और उनके पहुंचाए गये दुखों की कड़वी यादों को बड़ी विनम्रता के साथ भुला दिया बल्कि अपने कट्टर दुश्मनों के साथ उदारता व मित्रता का व्यवहार किया ।

उन्होंने अब्दुल्लाह बिन और मदीना के अन्य अमैत्री संबंध में सहनशीलता दिखलायी है, वह कम अहम नहीं है, जिन्होंने लगातार कई वर्षों तक उनके उपदेशों को विफल करने का प्रयास किया और उनका विरोध करते रहे–उन्होंने यह सब भुलाकर पूरी दयालुता एवं दयाशीलता व विनम्रता के साथ उन क़बीले वालों के समर्पण को स्वीकार किया जो उससे पूर्व उनकी विजय के समय उनके सबसे बड़े शत्रु थे ।

दरअस्ल यही मुहम्मद (सल्ल०) की कामयाबी का राज़ है । जब तक कमज़ोर हों धैर्यता के साथ दृढ़ संकल्प होकर परिस्थिति का मुक़ाबला करें और जब विजय प्राप्त हों तो उदारता के साथ अपने दुश्मनों को माफ़ कर देना । मैं मानता हूं कि बाद के मुसलमानों ने इस नीति का पालन नहीं किया । नहीं तो इस समय दुनिया का नक्शा ही दूसरा होता ।

यह सब कुछ अचानक नहीं हुआ । न यह कोई जादूगरी थी और न तो धोखाधड़ी, बल्कि इन सबके पीछे एक अद्भुत व्यक्तित्व, एक ठोस चरित्र, एक मनमोहक आचरण, पहाड़ जैसी सहनशीलता और समुद्र जैसी उदारता थी । हर बात के पीछे एक व्यावहारिक थी, सरल और अनुसरण योग्य सरल सीधी शिक्षाएं थीं जिनको मानना और अपनाना मुश्किल न था; और आज भी वे शिक्षाएं जीवंत हैं ।

विश्व के महान चिंतक और विचारक कार्लायल (Carlyle) ने उन बहुत-सी ग़लतफ़हमियों का खंडन करते हुए लोगों को एक निष्पक्ष दृष्टिकोण अपनाने का सुझाव दिया है । उन्होंने लिखा है–

मुहम्मद (सल्ल०) के प्रति हमारा वर्तमान अनुमान कि वह एक छल करने वाले पाखंडी, एक झूठे अवतार थे और उनके द्वारा चलाया गया धर्म मात्र धोखा और झूठ का पुलिन्दा है किसी भी व्यक्ति के लिए वास्तव में कितना लचर और अमान्य हैं । मुहम्मद के बारे में कही जाने वाली अनेकानेक झूठी बातें स्वयं हमारे लिए शर्म का कारण है । मुहम्मद तो उन महान आत्माओं में से थे जिनकी महानता को कोई दूसरा नहीं पा सकता, उन्होंने अकेले ही केवल दो दशकों के भीतर लड़ाकू क़बीलों और जाहिल बद्दुओं को बेहद (अत्यंत) सभ्य और कुशल क़ौम में बदल दिया ।

किस प्रकार एक व्यक्ति ने अकेले ही आपस में लड़ते-झगड़ते क़बीलों और बद्दुओं को एक सशक्त और सुसभ्य राष्ट्र में बदल दिया और वह महान कार्य उसने केवल 23 वर्ष की छोटी सी अवधि में पूरा किया ।

(Hero and Hero worship)

Major Arthur Leonard आपके अद्भुत और महान व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए कहता है–

यदि कभी मनुष्य ने इस धरती पर ईश्वर को पाया है, यदि कभी मनुष्य ने एक अच्छे और महान आशय के साथ ईश्वर के सेवार्थ अपना जीवन समर्पित किया है तो निश्चित रूप से वह व्यक्ति अरब के ईशदूत हैं, वह न केवल महान हैं, बल्कि महानतम हैं, सबसे सत्यनिक व्यक्ति, जिसने इस धरती पर जन्म लिया ।

"If over man on this earth found God, if ever man devoted his life to God's service with a good and great motive, it is certain that the prophet of Arabia was that man not only gret but the greatest i.e. truest man that humanity has ever produced."

('Islam and her moral and spiritual value')

जर्मनी की 'लोरा वेस्सिया वागलियेरी' (Laura Veccia Vaglieri) अपनी पुस्तक इस्लाम 'Apologia dell's Islamismo' में लिखती है : ''मुहम्मद (सल्ल०) ने अपनी पूरी जवानी के दिनों में जबकि कामेच्छा अपनी चरम सीमा पर होती है और जबकि आप ऐसे समाज-अरब समाज में रह रहे थे जहां शादी एक सामाजिक संस्था के रूप में अनुपस्थित थी और जहां अनेक पत्नियों से शादी करना ही नियम था और तलाक़ देना अत्यंत सरल था, इसके बावजूद आपने केवल एक औरत से शादी की । वह ख़दीजा हैं, जिनकी आयु पैग़म्बर (सल्ल०) की आयु से बहुत बड़ी थी, और आप पचीस साल तक उनके मुख़्लिस और प्रिय पति रहे, और दूसरी शादी उस समय तक नहीं की जब तक ख़दीजा (रज़ि०) की मृत्यु न हो गयी और आपकी आयु पचास साल को पहुंच गयी ।

पैग़म्बर (सल्ल०) की इन शादियों में से हर एक शादी का कोई न कोई राजनीतिक या सामाजिक कारण अवश्य था, जिन औरतों से आपने शादियां कीं उसका उद्देश्य परहेज़गार और सदाचारी औरतों को सम्मान देना और कुछ क़बीलों और ख़ानदानों के साथ वैवाहिक संबंध स्थापित करना था ताकि इस्लाम को फैलाने के लिए एक नया रास्ता निकाल सकें ।''

एडवर्ड गिबन अपनी पुस्तक The Decline & Fall of the Roman Empire में लिखता है, ''मुहम्मद ने शान-शौकत और बादशाह के तौर-तरीक़ों को हमेशा नफ़रत की नज़र से देखा, मुहम्मद ने अपने नगर के आम आदमी की भांति ही जीवन गुज़ारा, उन्होंने स्वयं आग जलायी, फ़र्श झाड़ा और भेड़ों का दूध भी दूहा । उन्होंने अपने कपड़े भी ठीक किये और जूते भी ।''

जेम्स ए० मिकेनर अपनी पुस्तक Islam the Misunderstood Religion में अपने विचार यूं प्रकट करता है–''मुहम्मद की त्वचा का रंग बिल्कुल हज़रत ईसा की तरह सुनहरा-सफ़ेद और चमकदार था, मगर वह सभी अन्य लोगों को गले लगाते थे । अफ़्रीक़ा के काले, चीन के पीले, मलेशिया के बादामी और तुर्की के गोरे किसी में कोई भेदभाव न था । मुहम्मद ने सदैव यही शिक्षा दी कि मुसलमान अन्य धर्म वालों के साथ सौहार्दपूर्ण व्यवहार करें ।''

जोस्ताफ़ लुबोन एक प्रसिद्ध फ्रांसीसी लेखक है, वह अपनी पुस्तक ''इस्लाम की संस्कृति'' में लिखता है कि यहूदियों व ईसाइयों के प्रति मुहम्मद (सल्ल०) की सहनशीलता बहुत महान थी इस प्रकार की सहनशीलता आप से पूर्व किसी धर्म संस्थापक विशेषकर यहूदी और ईसाई धर्मों के संस्थापकों में नहीं मिलती ।

''स्पीजेच ऑफ़ मुहम्मद'' में प्रसिद्ध इतिहासकार लीन पोल लिखते हैं–''हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का व्यक्तित्व दया और शौर्य का समिश्रण है, वह वर्षों तक अपने देशवासियों की शत्रुता का सामना करते रहे । मुहम्मद इतने सुशील थे कि वह हर एक से प्रसन्न मुद्रा के साथ मिलते थे । इनकी निष्कपट मित्रता, सहानुभूति, उदारता, वीरता और शौर्य प्रशंसनीय है ।''

डॉ० स्प्रिंगर एक कट्टर ईसाई था, परन्तु हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के पवित्र चरित्र से प्रभावित होकर अपनी पुस्तक–''लाइफ़ ऑफ़ मुहम्मद'' के पृष्ठ 82 पर लिखता है–''उसके (मुहम्मद के) विचारों में सदैव ख़ुदा की कल्पना रहती थी और उसको निकलते हुए सूर्य, बरसते हुए पानी और उगती हुई हरियाली में ख़ुदा का हाथ दिखायी देता था । उसे बादल की गरज, पानी की कल-कल, चिड़ियों की चहचहाट में ख़ुदा की ही वाणी सुनायी देती थी और उसे सुनसान जंगलों तथा पुराने खंडरों में ख़ुदा के प्रकोप के चिन्ह दिखायी देते थे ।

(लाइफ़ ऑफ़ मुहम्मद, पृष्ठ 82, 1854 में इलाहाबाद से प्रकाशित)

याक्स डाड ने अपनी पुस्तक ''मुहम्मद, बुद्ध और मसीह'' में लिखा है–''मुहम्मद का चरित्र उत्तम था उनके निकट संसार की बड़ाई महत्वहीन थी । उनकी सेवा में हर कोई स्थान पा सकता था । उनका व्यक्तित्व सुख और कल्याण का स्रोत था ।''

अनाथ लड़कियों की पुकार

VOICE OF ORPHAN GIRLS

मुस्लिम लड़कियों का यतीमख़ाना (गया)

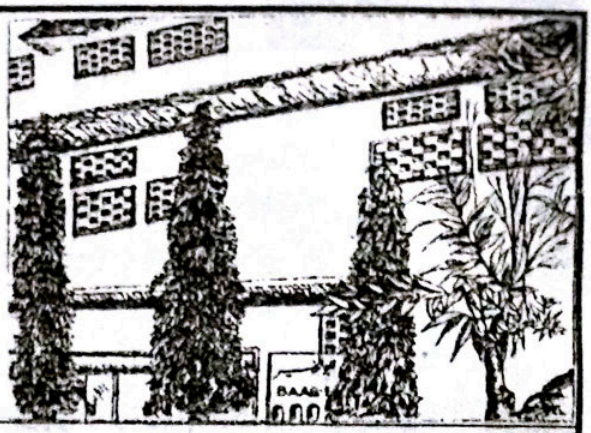

संक्षिप्त परिचय

लड़कियों के लिए आधुनिक और इस्लामी तालीम से लैस राष्ट्रीय स्तर का एक आदर्श रिहाइशी इदारा

● 27 वर्षीय सेवाएं ● 19 विभाग ● शिक्षा : प्राथमिक से मैट्रिक तक ● पत्राचार शिक्षा I.A., B.A. एवं Library Science ● 9 छात्राओं ने हिफ़्ज़ के साथ मैट्रिक पास किया ● प्रौढ़ शिक्षा ● वोकेशनल सेन्टर ● कटिंग और सिलाई: 8 बैच 88 छात्राएं ● ज़री वर्क्स : 5 बैच 53 छात्राएं ● 1993 ई॰ से 2013 ई॰ तक 71 अनाथ बच्चियों और 51 मां-बाप वाली बच्चियों ने मैट्रिक पास किया ● वार्षिक ख़र्च : 24 लाख रुपये से अधिक ● आमदनी का स्रोत : मुस्लिम अवाम के चन्दे ● इदारा 120 अनाथ बच्चियों का सारा ख़र्च पूरा करता है ● किफ़ाला स्कीम के तहत एक यतीम बच्ची का वार्षिक ख़र्च 12,000/- रुपये है–आप भी एक अनाथ बच्ची का ख़र्च उठा कर सवाब में शरीक हों ।

सहायता के विभिन्न रूप : ● ज़कात ● सदक़े ● अतिया ● पैदावार की ज़कात ● दीनी किताबें ● ज़मीन की ख़रीदारी और क़र्ज़ की अदायगी ● स्टाफ़ की मासिक आय के लिए 1,00,000/- रुपये से अधिक ● मां-बाप या रिश्तेदारों के नाम कमरा या हॉल बनवाना और निर्माण कार्यों के लिए ईंटें, सीमेंट, सरिया और अन्य सामग्री या उसका मूल्य देना ● यहां प्रतिवर्ष हिसाब चेक किये जाते हैं और ऑडिट होता है । ● इदारा में खुद आकर बराबरी का नमूना देखें कि अनाथ बच्चियां और वे बच्चियां जिनके मां-बाप हैं किस तरह मिलकर रहा करती हैं ।

यह इदारा आप से उदार सहायता की अपील करता है ।

विदेशी चन्दा देने वाले : भारत सरकार से "मुस्लिम लड़कियों का यतीमख़ाना (गया) को विदेशों से चन्दा लेने का इजाज़तनामा प्राप्त हो गया है ।

Foreign Donors विदेशी चन्दा देने वाले

विदेशों में रहने वाले अब BANK A/c No. 300402010009042

BANK CODE NO. UBININBBJAM or IFS Code No. UBIN 0530042

Union Bank of India (Main Branch, GAYA में अपनी रक़म भेज सकते हैं ।

चेक या ड्राफ्ट पर केवल यह लिखें–"THE GAYA MUSLIM GIRLS ORPHANAGE"

Address for correspondence : रक़म भेजने और संपर्क करने का पता

GENERAL SECRETARY, THE GAYA MUSLIM GIRLS ORPHANAGE

At : KOLOWNA, P.O.: CHERKI-824237, Distt.: GAYA (BIHAR) INDIA, Mobile : 9934480190

E-mail : thegayamuslimgirlsorphanage@gmail.com, Website : www.gmgo.org

LOCAL DONORS मक़ामी चन्दा देने वाले

CORE BANKING A/c No. : 300402010007752

BANK IFS CODE-UBI No. 530042 UNION BANK OF INDIA (MAIN BRANCH, GAYA)

नोट : कोर बैंकिंग वाले हज़रात E-mail या डाक से अपना मुकम्मल पता भेज दिया करें ताकि उसी पते पर रक़म की रसीद रवाना की जा सके ।

संस्थापक महासचिव : इक़बाल अहमद ख़ां

स्नेह और सहिष्णुता के प्रचारक

■ स्वामी विवेकानन्द कहते हैं–

''पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) संसार में समानता के संदेशवाहक थे । वे मानवजाति में स्नेह और सहिष्णुता के प्रचारक थे । उनके धर्म में जाति-बिरादरी, समूह, नस्ल आदि का कोई स्थान नहीं है ।''

स्वामी विवेकानन्द इस्लाम के बड़े प्रशंसक थे और इसके भाईचारा के सिद्धान्त से अभिभूत थे । वेदांती मस्तिष्क और इस्लामी शरीर को वह भारत की मुक्ति का मार्ग मानते थे । अल्मोड़ा से दिनांक 10 जून, 1898 को अपने एक मित्र नैनीताल के मुहम्मद सरफ़राज़ हुसैन को भेजे पत्र में उन्होंने लिखा कि, ''अपने अनुभव से हमने यह जाना है कि व्यावहारिक दैनिक जीवन के स्तर पर यदि किसी धर्म के अनुयायियों ने समानता के सिद्धांत को प्रशंसनीय मात्रा में अपनाया है तो वह केवल इस्लाम है–इस्लाम समस्त मनुष्य जाति को एक समान देखता और बर्ताव करता है–यही अद्वैत है । इसलिए हमारा यह विश्वास है कि व्यावहारिक इस्लाम की सहायता के बिना, अद्वैत का सिद्धान्त चाहे वह कितना ही उत्तम और चमत्कारी हो विशाल मानव-समाज के लिए बिल्कुल अर्थहीन है ।''

–विवेकानन्द साहित्य, जिल्द 5, पृ० 415

स्वामी जी ने स्पष्ट शब्दों में कहा है कि, ''भारत में इस्लाम की ओर धर्म परिवर्तन तलवार (बल प्रयोग) या धोखाधड़ी या भौतिक साधन देकर नहीं हुआ था ।''

–विवेकानन्द साहित्य, जिल्द 8, पृ० 330

■ सी० एस० श्रीनिवास ''हिस्ट्री ऑफ़ इंडिया'' में, जो मद्रास से 1937 में प्रकाशित हुई थी, लिखते हैं–

''इस्लाम के पैग़म्बर ने जब एक शासक का स्थान प्राप्त किया तो भी आपका जीवन पूर्व की भांति सादा रहा । आप सुधारक भी थे और विजेता भी । आपने लोगों के अख़्लाक़ को बुलन्द किया । प्रतिशोध लेने को अनुचित ठहराया और खोजबीन के बिना रक्तपात से रोका, विखंडित क़बीलों को एक क़ौम बना दिया और एक ऐसा रिश्ता दिया जो ख़ानदानी रिश्तों से ज़्यादा टिकाऊ था ।

आपने लोगों को पस्ती, द्वेष और पक्षपात में ग़र्क़ पाया, लेकिन उनको सदाक़त का संदेश देकर बुलन्द कर दिया । उनको आपसी ख़ानदानी झगड़े में लिप्त पाया, मगर सहिष्णुता और भ्रातृत्व के रिश्ते में जोड़ दिया । आप एक फ़रिश्त-ए-रहमत बनकर दुनिया में तशरीफ़ लाए ।''

–भारतीय सभ्यता पर मुसलमानों के उपकार , पृ० 31

आदर्श जीवन

■ जगत महर्षि पैग़म्बरे-इस्लाम (सल्ल०) के विषय में महात्मा गांधी के विचार इस प्रकार हैं–

''मैं पैग़म्बरे-इस्लाम की जीवनी का अध्ययन कर रहा था । जब मैंने किताब का दूसरा भाग भी ख़त्म कर लिया तो मुझे दुख हुआ कि इस महान प्रतिभाशाली जीवन का अध्ययन करने के लिए अब मेरे पास कोई और किताब बाक़ी नहीं । अब मुझे पहले से भी ज़्यादा विश्वास हो गया है कि यह तलवार की शक्ति न थी जिसने इस्लाम के लिए विश्व क्षेत्र में विजय प्राप्त की, बल्कि यह इस्लाम के पैग़म्बर का अत्यंत सादा जीवन, आपकी नि:स्वार्थता, प्रतिज्ञा-पालन और निर्भयता थी, आपका अपने मित्रों और अनुयायियों से प्रेम करना और ईश्वर पर भरोसा रखना था । यह तलवार की शक्ति नहीं थी, बल्कि ये सब विशेषताएं और गुण थे जिनसे सारी बाधाएं दूर हो गयीं और आपने समस्त कठिनाइयों पर विजय प्राप्त कर ली ।

मुझ से किसी ने कहा था कि दक्षिण अफ़्रीक़ा में जो यूरोपियन आबाद हैं, इस्लाम के प्रचार से कांप रहे हैं, उसी इस्लाम से जिसने मोरक्को में रोशनी फैलायी और संसार-निवासियों को भाई-भाई बन जाने का सुखद संवाद सुनाया । निस्सन्देह दक्षिण अफ़्रीक़ा के यूरोपियन इस्लाम से नहीं डरते हैं, लेकिन वास्तव में वह इस बात से डरते हैं कि अगर अफ़्रीक़ा के आदि निवासियों ने इस्लाम क़बूल कर लिया तो वे श्वेत जातियों से बराबरी का अधिकार मांगने लगेंगे । आप उनको डरने दीजिए । अगर भाई-भाई बनना पाप है, यदि वे इस बात से परेशान हैं कि उनका नस्ली बड़प्पन क़ायम न रह सकेगा तो उनका डरना उचित है,

क्योंकि मैंने देखा है कि अगर एक जूलो ईसाई हो जाता है तो वह सफ़ेद रंग के ईसाइयों के बराबर नहीं हो सकता। किन्तु जैसे ही वह इस्लाम ग्रहण करता है, बिल्कुल उसी वक़्त वह उसी प्याले में पानी पीता है और उसी तश्तरी में खाना खाता है जिसमें कोई और मुसलमान पानी पीता और खाना खाता है, तो वास्तविक बात यह है जिससे यूरोपियन कांप रहे हैं।''

–जगत महर्षि, पृ० 2

इन्सानियत फिर ज़िन्दा हुई

■ स्वामी लक्ष्मण प्रसाद लिखते हैं–

''आस्था, विश्वास, पूजा-अर्चना, नैतिकता, सामाजिकता के संपूर्ण आवाहक हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के आगमन से पहले दुनिया में कहीं कोई आशा की किरण दिखायी नहीं देती थी, विश्वव्यापी गुमराहियों और भयंकर अंधकार में कहीं सभ्यता और संस्कृति की रोशनी नज़र नहीं आती थी। जब शराफ़त का नामो-निशान मिट चुका था, जब प्रकृति का वास्तविक सौंदर्य और आध्यात्मिकता की सुन्दरता ईश्वर के इन्कार मिथ्याकर्म के अंधकारों में छुप गयी थी, इन्सान ख़ुदा की क़द्र और महत्ता को भूलकर अपने गले में कुकर्म और मूर्तिपूजा की लानत की ज़ंजीर पहन चुके थे, एक बार इन्सानियत मरकर फिर ज़िन्दा हुई। एशिया महाद्वीप के दक्षिण-पश्चिम में एक बड़ा प्रायद्वीप है जो अरब के नाम से मशहूर है। इसी अज्ञानता और बुराई के केन्द्र अरब के फ़ारान पर्वत की चोटियों से एक नूर चमका जिसने दुनिया के हालात को आमूल रूप से बदल दिया। गोशा-गोशा नूरे-हिदायत से जगमगा दिया।

आज से तेरह सौ सदियां पहले इसी गुमराह देश मक्का की गलियों से एक क्रान्तिकारी आवाज़ उठी जिसने जुल्मो-सितम के वातावरण में तहलका मचा दिया। यहीं से मार्गदर्शन का वह स्रोत फूटा जिसने दिलों की मुरझाई हुई खेतियां सरसब्ज़ कर दीं। इसी रेगिस्तानी, चमनिस्तान में रूहानियत का वह फूल खिला जिसकी रूहपर्वर महक ने नास्तिकता की दुर्गन्ध से घिरे इन्सानों के दिल व दिमाग़ों को सुगंधित कर दिया।'' –अरब का चांद' पुस्तक से

एकेश्वरवाद का सदुपयोग

■ हिन्दी के वरिष्ठतम साहित्यकार भारतेन्दु हरिश्चन्द्र लिखते हैं–''जिस समय अरब देशवाले बहुदेवोपासना के घोर अंधकार में फंस रहे थे, उस समय महात्मा मुहम्मद ने जन्म लेकर उनको एकेश्वरवाद का सदुपदेश दिया। अरब के पश्चिम में ईसा मसीह का भक्ति पथ प्रकाश पा चुका था, किन्तु वह मत अरब, फ़ारस इत्यादि देशों में प्रबल नहीं था और अरब जैसे कट्टर देश में महात्मा मुहम्मद के अतिरिक्त और किसी का काम न था कि वहां कोई नया मत प्रकाश करता। उस काल के अरब के लोग मूर्ख, स्वार्थतत्पर, निर्दय और वन्य-पशुओं की भांति कट्टर थे। यद्यपि उनमें से अनेक लोग अपने को इबराहीम के वंश का बतलाते और मूर्तिपूजा बुरी जानते किन्तु समाज पर वश होकर सब बहुदेव उपासक बने हुए थे। इसी घोर समय में मक्के से मुहम्मद चन्द्र उदय हुआ और एक ईश्वर का पथ परिष्कार रूप से सबको दिखायी पड़ने लगा।''

–भारतेन्दु हरिश्चन्द्र समग्र

समस्त मानवजाति के मार्गदर्शक

■ लाला काशीराम चावला 'ऐ मुस्लिम भाई' में लिखते हैं–''समस्त धर्मों के प्रणेता और संस्थापक, बड़े-बड़े घरानों में पैदा हुए और उनकी पैदाइश पर बड़ी धूम-धाम मची, बड़े हर्ष वाद्य बजे। उदाहरणत: हज़रत ईसा (अलैहि०), बुद्ध-भगवान, हज़रत मूसा (अलैहि०) भगवान कृष्ण, भगवान महावीर, गुरु नानक सबका बचपन नितांत लाड-प्यार और शानो-शौक़त से गुज़रा। लेकिन आप (मुहम्मद सल्ल०) के कष्टों का आरंभ जन्म से पहले ही हो चुका था।

अभी आप माता के गर्भ ही में थे कि पिता का देहांत हो गया। छह वर्ष की अवस्था में मातृ-प्रेम से भी वंचित हो गये। दो साल दादा की गोद में खेले और आठवें वर्ष वे भी स्वर्ग सिधार गये और फिर आपके चाचा ने संभाला। इस प्रकार बचपन में शिक्षा-दीक्षा और सुख-शान्ति के समस्त साधन लुप्त हो गये। क्या यह ईश्वरीय चमत्कार नहीं कि ऐसी दशा में पला हुआ व्यक्ति आज़ मानवजाति के एक विशाल समूह का पथप्रदर्शक और नेता स्वीकार किया जा रहा है और उसने अरब जैसे बर्बर देश से निराश्रित अवस्था में संसार-निवासियों को मानवता का सन्देश दिया।

किसे पता था कि ऐसे अप्रसिद्ध परिवार में जन्म लेने वाला अनपढ़ और अनाथ बालक अरब से अज्ञानता का नामो-निशान मिटाने वाला सुधारक बनेगा ? समूचे संसार में

इस्लामी पताका लहराने वाला रसूल होगा कुरआन शरीफ़ का संदेश पहुंचाने वाला नबी होगा ? मूर्खों में महत्वपूर्ण क्रान्ति उत्पन्न करने वाला सुधारक होगा और एक बिल्कुल अनोखे और नवीन धर्म का प्रकाश दिखाएगा ? नितांत अल्प समय में स्वयं अशिक्षित होते हुए भी अपने बौद्धिक ज्ञान से समस्त संसार के एक बहुत बड़े भाग को शिक्षा और ज्ञान से परिपूर्ण कर देगा ? ऐसे ज्ञान से जो विश्व के समस्त मनुष्यों के लिए एक अनुकरणीय आदर्श है ।

आप फ़रमाया करते थे, ''मुसलमान की सबसे पहली निशानी यह है कि वह ईश्वर और क़ियामत के दिन के हिसाब-किताब से डरे ।''

–'ऐ मुस्लिम भाई', पृ॰ 252 से 258 तक

सारे संसार के लिए दयानिधि

■ श्री देवदास गांधी, जो दिवंगत महात्मा गांधी के पुत्र थे, अपने एक निबंध में लिखते हैं–

''एक महान शक्तिशाली सूर्य के समान ईश्वर-दूत हज़रत मुहम्मद ने अरब की मरुभूमि को उस समय रोशन किया, जब मानव-संसार घोर अंधकार में लीन था और जब आप इस दुनिया से विदा हुए तो आप अपना सब काम पूर्ण रूप से पूरा कर चुके थे, वह पवित्रतम काम जिससे दुनिया को स्थायी लाभ पहुंचने वाला था । दुनिया के सच्चे पथ-प्रदर्शक बहुत थोड़े हुए हैं और उनके युगों में एक-दूसरे से बहुत अन्तर रहा है और वे लोग कि जिन्होंने मुहम्मद साहब के जीवन-चरित्र का अध्ययन उसी श्रद्धा के साथ किया है, जिसके वे अधिकारी हैं, इस बात के मानने पर बाध्य हैं कि आप महान धर्म-उपदेशकों में से एक थे । आपकी महानता और गुरुता में उस समय और भी वृद्धि हो जाती है, जबकि आपका चित्र खींचते वक़्त हम उस नितांत आध्यात्मिक और नैतिक ह्रास की पृष्ठभूमि पर भी दृष्टि रखें जो आपके जन्म के समय अरब में विद्यमान थी ।

मुहम्मद साहब एक सभ्य और उन्नतशील वातावरण की पैदावार न थे । आपके समय में एक आदमी भी ऐसा न था जिससे आप ब्रह्मवाद की शिक्षा ग्रहण करते, उस काल में ईश्वरीय धर्म के लिए तो अरब में जगह ही न थी, वह देश अपने अंधकारमय काल से गुज़र रहा था । जब ख़राबी और पतन अपनी सीमा को पहुंच गया तो उस समय आप ईश्वरीय अनुकम्पा बनकर उदित हुए । ऐसी दशा में यदि उन्हें 'रहमतुल्लिल आलमीन' (संसार के लिए दयानिधि) की पदवी दी जाती है, तो इसमें आश्चर्य ही क्या है ?

आपकी आदर्श जीवनी हमें बताती है कि आपने अपने उपदेश और प्रचार का जीवन भर यही नियम रखा कि जो कुछ अपने अनुयायियों को सिखाना चाहते थे, पहले वह सब स्वयं करके दिखा दिया और कभी किसी ऐसे कार्य की शिक्षा न दी जिसका उदाहरण आपने उपस्थित न कर दिया हो ।

आपके पवित्र जीवन में उस समय भी किसी प्रकार का कोई अन्तर नहीं आया, जबकि आप पैग़म्बर के पद पर शोभायमान हो गये । आपने संपूर्ण जीवन उसी सरलता और सादगी से व्यतीत किया । सांसारिक सुख और जीवन के भोग-विलास उस समय भी आपको अपनी ओर आकर्षित न कर सके जब एक से अधिक साम्राज्यों का धन आपके चरणों में अर्पित हो रहा था । आपका भोजन बहुत ही सादा और थोड़ा होता था और उसे भी केवल इसलिए खाते थे कि जीवित रह सकें । चटाइयां और टाट आपके बिस्तर थे और इसी तरह पहनने के कपड़े भी बहुत साधारण होते थे । आपने कभी किसी को कटुवचन नहीं कहा, यहां तक कि लड़ाई के अवसर पर भी दुश्मनों के साथ आपका स्वर कोमल होता था । सत्य यह है कि आपको अपनी इच्छाओं और मनोभावों पर पूरा-पूरा संयम प्राप्त था । गीता में कर्मयोगी के जो गुण बताए गये हैं, वे सबके सब आपमें पूर्णतया मौजूद थे । आप अपने अप्रिय कर्तव्यों को भी सच्चे ईमान और सच्ची वीरता के साथ पूर्ण किया करते थे और इच्छाएं या घमंड कभी आपके पगों में कंपन उत्पन्न नहीं कर सकता था । कर्मयोगी उस व्यक्ति को कहते हैं जो अपने उत्तम विचारों को भी कार्य रूप में परिणत कर दे, और मुहम्मद साहब एक ऐसे ही व्यक्ति थे । एक नश्वर मनुष्य होते हुए भी आप अलौकिक गुण रखते थे । सुख-दुख, हर्ष, क्षोभ, जिनके प्रभावों के अन्तर्गत हम साधारण मनुष्यों के जीवन व्यतीत होते हैं और जो वास्तव में हमारे जीवन में क्रान्ति उत्पन्न कर देते हैं, उनसे यह पवित्र और महान आत्मा कभी प्रभावित न होती थी ।

जो लोग समाज की वर्तमान व्यवस्था और प्रणाली को

परिवर्तित करने में लगे हुए हैं और चाहते हैं कि इससे अच्छे समाज को जन्म दें, उनके दिलों पर जिस बात का गहरा प्रभाव पड़ेगा वह पैग़म्बर साहब का वह उच्च आदर्श है जिसे उन्होंने मेहनत-मज़दूरी के संबंध में क़ायम किया । इस ईशदूत ने ऐसे बहुत-से अनुकरणीय उदाहरण उपस्थित किये हैं, जिन्हें लोगों ने भुला दिया है । उनमें से एक यह है कि आप अपने कपड़ों की स्वयं मरम्मत करते थे । यही नहीं बल्कि अपने जूते भी खुद ही टांकते थे । आप घर के काम-काज में प्राय: अपने सेवकों की सहायाता करते थे । मस्जिद के निर्माण में आपने मज़दूरों के साथ बराबर काम किया है । मज़दूरों के साथ काम करते वक़्त आप उनमें इस प्रकार घुल-मिल जाते थे कि कोई उन्हें पहचान न सकता था ।

बच्चों से आपको विशेष लगाव था और उनके साथ आप बहुत प्रसन्न रहते थे । वे सौभाग्यशाली बच्चे जो आपके जीवनकाल में थे और जिन्हें आपका प्रेम प्राप्त रहा, अपने घरों में इतने प्रसन्न नहीं रहते थे जितना आपके साथ । बच्चों के साहचर्य में उठना-बैठना आपके लिए कोई इत्तिफ़ाक़ी बात न थी, बल्कि यह आपका नियम और कार्यक्रम था कि बच्चों को ढूंढ़कर उनके साथ हो जाते और अपने उत्तम विचार उनके मस्तिष्कों में अर्पित कर देते । क्या शिक्षा और उपदेश का इससे अधिक स्वाभाविक और सरल ढंग कोई और हो सकता है ?

–मासिक 'पेशवा', दिल्ली, जुलाई 1931 ई॰

अनुपम जीवन

■ हिन्दी के प्रख्यात साहित्यकार सरदार पूर्णसिंह 'अध्यापक' साहित्यिक अभिव्यंजनों का प्रयोग करते हुए लिखते हैं–

''देखो, हिरा कन्दरा में एक अनाथ दुनिया से अलग एक अजीब नींद सोता है । जैसे गली में पड़े हुए पत्थर की ओर कोई ध्यान नहीं देता, वैसे ही आम आदमियों की तरह इस अनाथ को कोई न जानता था । एक उदार-हृदया, धन-सम्पन्ना स्त्री की वह नौकरी करता है । उसकी सांसारिक प्रतिष्ठा सिर्फ़ एक मामूली गुलाम की-सी है; मगर कोई ऐसा दैवी कारण हुआ जिससे इस अनजान और बेपहचान की बारी आयी ! उसकी निद्रा खुली, संसार पर मानो हज़ारों बिजलियां गिरीं ! अरब के रेगिस्तान में बारूद की तरह आग लग गयी । इस वीर की आंखों की ज्वाला इन्द्रप्रस्थ से लेकर स्पेन तक प्रज्वलित हुई । उस अज्ञात और गुप्त हिरा की कंदरा में सोने वाले ने एक आवाज़ दी । कुल पृथ्वी भय से कांपने लगी । हां, जब पैग़म्बर मुहम्मद ने 'अल्लाहु अकबर' का गीत गाया, तब कुल संसार चुप हो गया और कुछ देर बाद प्रकृति उसकी आवाज़ की गूंज को सब दिशाओं में उड़ा ले चली । पक्षी अल्लाहु गाने लगे और मुहम्मद के पैग़ाम को इधर-उधर ले उड़े । पर्वत उनकी वाणी को सुनकर पिघल पड़े और नदियां 'अल्लाहु-अल्लाहु' का अलाप करती हुई पर्वतों से निकल पड़ीं । जो लोग उनके सामने आये वे इसके दास बन गये । चन्द्र और सूर्य ने बारी-बारी से उठकर सलाम किया । इस वीर का बल देखिए कि सदियों बाद भी संसार के लोगों का बहुत-सा हिस्सा उसके पवित्र नाम पर जीता है और अपने छोटे-से जीवन को अति तुच्छ समझकर अनदेखे, अनजाने, केवल सुने-सुनाये नाम पर क़ुरबान कर देने को अपने जीवन का सबसे उत्तम फल समझता है ।''

विश्व-बंधुत्व और मानव-समानता के संस्थापक

■ दिल्ली के प्रसिद्ध राष्ट्रीय नेता और दैनिक समाचार-पत्र 'तेज' के निर्देशक लाला देशबंधु गुप्त लिखते हैं–

''हज़रत मुहम्मद साहब एक धार्मिक नेता थे । लगभग उनका संपूर्ण जीवन इस्लाम-प्रचार ही में व्यतीत हुआ । इसलिए उनकी शिक्षा वास्तव में इस्लाम ही की शिक्षा है । किन्तु इसका यह अर्थ कदापि नहीं है कि मुसलमानों के अतिरिक्त और दूसरे लोग उनकी शिक्षा से लाभ नहीं उठा सकते । अरब के अर्द्ध बर्बर बद्दुओं के साथ उन्होंने जो उपकार किये हैं, उन्हें इतिहास भुला नहीं सकता । जो देश अब से डेढ़ हज़ार वर्ष पहले सभ्यता और संस्कृति के नाम से भी अनभिज्ञ था, जहां कला-कौशल की कोई पहुंच न थी, जहां के लोगों का पेशा ही लूटमार, हत्या और रक्तपात था, जहां मूर्तिपूजा और अंधविश्वासों का आधिपत्य था, वह देश आज सभ्य देशों की पंक्ति में खड़ा नज़र आता है, यह उत्तम आदर्श स्थापित करके उन्होंने दुनिया में मानव-समानता के सम्मान पूर्ण भाव को प्रोत्साहन दिया और यह एक ऐसा काम था, जिसने न केवल इस्लामी देशों की काया पलट

कर दी, बल्कि अन्य देशों पर भी मुख्य प्रभाव डाला । आप (सल्ल०) की एक और महान और विशेष कृति यह है कि आपने अरब से दासता की मानवताविहीन प्रथा का अंत करने में प्रगति की और इस्लाम के अनुयायियों को उपदेश दिया कि दासों को मुक्त करना सबसे बड़ा पुण्य कार्य है और यह कि कोई व्यक्ति पैदाइशी दास होने के कारण धार्मिक नेता या उच्च शासक होने से वंचित नहीं किया जा सकता । परन्तु इस्लामी इतिहास साक्षी है कि कई पैदाइशी गुलामों ने 'ख़लीफ़ा' का उच्च पद प्राप्त किया और अपने सुकर्म और उत्तम गुणों के कारण अपने काल में इस्लाम का नेतृत्व किया । –'तर्जुमान', 19 जुलाई, 1933 ई०

सीधी-सच्ची राह दिखाने वाले

■ अविभाजित पंजाब के प्रसिद्ध कांग्रेसी नेता और विद्वान डॉक्टर सत्यपाल लिखते हैं–

''जिस समय हज़रत मुहम्मद उदीयमान हुए, सारे अरब में मूर्तिपूजा ज़ोरों पर थी, हर ओर शिर्क (बहुईश्वर-पूजा) का दौर-दौरा था, ईश्वर का विश्वास लुप्त हो रहा था, अत्याचार, दमन और बलात्, हिंसा के लिए तो अवश्य ईश्वर को पूछ लिया जाता था, लेकिन उसकी उपासना से लोग कोसों दूर थे, कुसंस्कारों और धार्मिक पाखंडों का ज़ोर था । लेकिन ईश्वरीय आज्ञापालन का नाम न था । ऐसे समय में आपने इस ज्ञान से ईश्वर के एकत्व की घोषणा की कि उसकी गूंज से अरब में एक नयी दुनिया आबाद हो गयी । हज़रत को लोगों ने तरह-तरह के कष्ट दिये, क्योंकि आप अद्वितीय ईश्वर का संदेश सुनाते थे । आपको लोगों ने बहुत पेरशान किया, क्योंकि आप लोगों को एक पूज्य की ओर आकर्षित करते थे । लेकिन ऐसे महान और तेजस्वी व्यक्ति इन कठिनाइयों से कब भयभीत होते हैं, जो अपने आपको ईश्वर की गोद में पाते हैं । वे दुनिया वालों को कब ध्यान में लाते हैं, दुनिया से वे कब डरते हैं, जिनके सर पर दुनिया के मालिक का हाथ है ? दुनिया उन्हें ख़रीद नहीं सकती, न वे अपमान से घबराते हैं, न प्रशंसा से मोहित होते हैं । उनकी दृष्टि में इन चीज़ों का कोई मूल्य नहीं होता । साधारण लोग यह ख़याल करते हैं कि हज़रत मुहम्मद साहब एक मुहम्मद एक मुख्य सम्प्रदाय या जाति या देश के पथ-प्रदर्शक हैं । यह सत्य है कि आज करोड़ों मुसलमान दिन में कई बार ईश्वर के इस पवित्र संदेशदाता का नाम श्रद्धा और प्रेम से लेते हैं लेकिन उनसे कहीं बढ़कर वे लोग हज़रत के प्रशंसक हैं, जो यद्यपि मेरे समान उनकी घोषणा में अपनी धीमी आवाज़ शामिल करते हैं और जो दिन-रात हज़रत की इस कृति को याद रखते हैं कि आपने भूली-भटकी दुनिया को नये सिरे से वास्तविक सत्य मार्ग दिखाया और पाठ पढ़ाया । –'तर्जुमान', वाराणसी, जुलाई, 1930 ई०

मानव-जीवन का सर्वोत्तम आदर्श

■ राजा राधा प्रसाद सिंह हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के जन्म दिवस की एक सभा के भाषण में कहते हैं–

''विश्व-भूगोल और इतिहास के पृष्ठ, संसार का कोई भाग और कोना ऐसा उदाहरण पेश नहीं कर सके, जिसमें प्रकृति ने हर समाज, हर समूह, हर वंश और हर जाति के चरित्र और स्वभाव के सुधार और बनाव के लिए नबी, अवतार, पथ-प्रदर्शक, हादी, पैग़म्बर न भेजे हों । 'वलिकुल्लि क़ौमिन हाद' (क़ुरआन मजीद की) यह आयत इस बात की साक्षी है कि प्रकृति ने हर कोने और हर भाग पर चाहे पूरब हो या दक्षिण में कोई न कोई जाति-सुधारक, देश और समाज की उन्नति और नैतिक विकास के लिए अवश्य उत्पन्न किया ।

यदि हम किसी सुधारक, नबी या अवतार के जीवन-चरित्र या जीवन-घटनाओं की पूर्ण खोज करें तो हमारी दृष्टि के सामने उनके जीवन की समस्त घटनाएं और वातावरण नहीं आ सकते । लेकिन यह विशेषता और प्रमुखता सद्गुणों के स्रोत पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद साहब ही को प्राप्त है कि आपकी जीवनी के संक्षिप्त और पिछले अध्ययन से ही आपके जीवन का साफ़ चित्र हमारी आंखों के सामने खिंच जाता है । अगर इस पवित्र आत्मा के जीवन की यत्र-तत्र घटनाओं पर भी प्रकाश डाला जाए, तो इसके लिए भी एक बड़े ग्रंथ की ज़रूरत होगी । यह संक्षिप्त निबंध तो इस बात के लिए किसी तरह भी पर्याप्त नहीं हो सकता कि इस साकार ज्योति और सच्चाई और स्वच्छता की मूर्ति के आदर्शपूर्ण आचार-व्यवहार जिसके संबंध में (क़ुरआन में) ''तुम्हारे लिए हज़रत मुहम्मद का जीवन सर्वोत्तम आदर्श है'' कहा गया है, पेश कर दिये जाएं । इस समय नमूने के तौर पर कुछ प्रमुख और स्पष्ट घटनाएं जिनसे सम्मानित श्रोतागण

की रूह को ताज़गी पहुंचने की प्रबल आशा है, उपस्थित करता हूं।'' –'जगत महर्षि', पृ॰ 293

मेरी आंखें खुल गयीं

■ प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी बाबू मुकुटधारी प्रसाद ने हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) के बारे में कहा–''आप लोगों को यह मालूम हो या न हो, लेकिन सत्य यह है कि इस्लाम और मुहम्मद साहब के संबंध में मेरे विचार पहले उतने अच्छे नहीं थे, जैसा कि आप आज पाते हैं। मेरा दिल उनकी ओर से द्वेष से भरा हुआ था और मुझे मुहम्मद साहब और उनके इस्लाम में कोई गुण दिखायी नहीं देता था। लेकिन जब असहयोग आन्दोलन में जेल गया और वहां आपकी जीवनी का अध्ययन किया तो मेरी आंखें खुल गयीं और मुझे मुहम्मद साहब के अपार गुणों का क़ायल हो जाना पड़ा और इसी कारण आज मैंने यह उच्च पद ग्रहण कर लिया है।

अरब देश के इतिहास से स्पष्ट है कि मुहम्मद साहब के धर्म-प्रचार से पहले अरब समाज नितांत मूर्खता, बर्बरता, पथ-भ्रष्टता, मद्यपान और तरह-तरह के कुकर्मों में लिप्त था। लेकिन मुहम्मद साहब की शिक्षा का यह प्रभाव हुआ कि केवल 23 वर्ष के अल्प समय में इस मूर्ख और बर्बर देश की काया पलट गयी। आपकी शिक्षाएं अगणित हैं। किन्तु इनमें विशेष रूप से जो मुझे अत्यन्त प्रिय हैं और जो हर आदमी के लिए लाभकारी और व्यवहार-योग्य हैं, बयान करता हूं–मैं सबसे पहले समता को लेता हूं। स्वामी हो या दास, धनी हो या निर्धन, गोरा हो या काला इस्लाम ने हर मुसलमान को बराबर का पद दिया है। मुहम्मद साहब की शिक्षा में पारिवारिक नीच-ऊंच के लिए कोई जगह नहीं है, बल्कि नाम और प्रतिष्ठा की कसौटी कर्म और केवल कर्म है।

सज्जनो ! कहा जाता है कि 'इस्लाम तलवार के बल से फैला'। आपको सुनकर आश्चर्य होगा कि मेरा भी यही विचार था। लेकिन वह कौन-सी तलवार थी ? क्या वह लोहे की तलवार थी ? नहीं, वह मुहम्मद साहब की यही अमूल्य सच्चरित्रता, क्षमा-भाव, शुद्ध आचार-व्यवहार उनके महान गुण और उनकी क़ियामत तक न मिटने वाली आदर्श-शिक्षाओं की चमकती-दमकती तलवार थी, जिसने गर्दन काटने की जगह दिलों को एक धागे में जोड़ दिया। इस्लाम की लोकप्रियता और प्रसिद्धि के यही वे कारण हैं, अन्यथा कोई चीज़ जो बलपूर्वक और अत्याचार के आधार पर क़ायम की जाती है, स्थायी और फलदायक नहीं होती। मुहम्मद साहब की अति उत्तम शिक्षा और सदाचार ही के यह चमत्कार हैं कि इस्लाम अब तक क़ायम है और मुझे यह स्वीकार करने में कुछ भी संकोच नहीं है कि मुहम्मद साहब का धर्म ही अपनी शिक्षाओं के आधार पर आज संसार में सबसे अधिक लोकप्रिय है।'' –जगत महर्षि, पृ॰ 62-68

महानतम नेता

■ श्री बी॰एन॰ साहनी, पूर्व संपादक 'हिन्दुस्तान टाइम्स' दिल्ली, अपने एक लेख, 'ग़लत मज़हबों का काफ़िर' में लिखते हैं–''अपने-अपने युग में मुहम्मद (सल्ल॰) ईसा और बुद्ध जैसे महात्माओं के साथ उसी प्रकार का घृणापूर्ण और तिरस्कारयुक्त व्यवहार किया गया जो अधर्मियों (यानी झूठे धर्म उपासकों) की ओर से सच्चे धर्म के प्रवर्तकों के लिए ख़ास है और हज़रत मुहम्मद को इसी प्रकार के धर्म का एक महान अग्रणय नेता समझकर ही मैं इस बात पर मजबूर हुआ हूं कि उनका सम्मान करूं।

यह आप ही का काम था कि अद्वितीय साहस और दृढ़ता के साथ जिसके कारण आप कई बार मौत के मुंह तक पहुंच गये। आपने उस काल के प्रचलित धर्म-सिद्धांतों को तोड़ा और एक ऐसे धर्म की नींव रखी, जिसने उस काल की सभ्यता में भी महत्वपूर्ण क्रान्ति उत्पन्न कर दी और आगे चलकर इस दुनिया के विभिन्न भागों में बसने वाले करोड़ों मनुष्यों के लिए मार्ग-प्रदीप का काम किया।

इस सच्चाई से किसी को इन्कार नहीं हो सकता कि इस्लाम के प्रवर्तक का व्यक्तित्व जितना पवित्र और उत्तम था, उसमें उतनी ही आकर्षण-शक्ति मौजूद थी और आप ऐसे दिल और ऐसे दिमाग़ के मालिक थे, जिसका उदाहरण आज तक इस दुनिया में बहुत कम पाया जाता है। इस पवित्रात्मा पैग़म्बर ने सदियों पहले अपने अनुयायियों के लिए जो जीवन-व्यवस्था बनायी थी, उसमें दो बातें विशेष रूप से हर व्यक्ति का ध्यान अपनी ओर खींच लेती हैं। यह बात कितनी आश्चर्यजनक है कि लोकतंत्र के इस युग में भी हम सामाजिक और बौद्धिक समता के उस उच्च स्तर पर नहीं पहुंच सके हैं, जिसकी कल्पना इस महामहिम पैग़म्बर के

मस्तिष्क में सदियों पहले आ चुकी थी और जिस पर दुनिया के मुसलमानों ने एक क़ौम की हैसियत से अपने दैनिक जीवन में आश्चर्यजनक निष्ठा के साथ अमल किया है ।

राजनीतिक लोकतंत्र में भी बहुत कुछ विशेषताएं हैं और यह वास्तविकता है कि हर ऐसा राजनीतिक विधान जो जनता के उस राज्य के स्थापित करने में पूर्ण स्वतंत्रता न दे जिसके अन्तर्गत वह जीवन व्यतीत करना चाहते हैं, निस्संदेह अन्यायपूर्ण और निरंकुश है । लेकिन केवल राजनीतिक लोकतंत्र से काम नहीं चला करता और लोकतंत्रात्मक जीवन-प्रणाली की इससे पूर्ति नहीं होती । लोकतंत्र का वास्तविक रहस्य जिस चीज़ में निहित है, वह तो यह है कि मनुष्य की दृष्टि में दूसरे मनुष्य की प्रतिष्ठा कितनी है और एक समाज दूसरे समाज के साथ कैसा व्यवहार कर रहा है ?

दुनिया के सारे धर्मों में केवल इस्लाम ही एक ऐसा धर्म है जो इस बात की घोषणा कर सका है कि उसे लोकतंत्र का सच्चा सन्देश और सच्चा सन्देशदाता (पैग़म्बर) मिला है । इस्लाम में सबसे अधिक वर्णनीय वे अधिकार हैं जो उसने स्त्रियों को दिये हैं । यह सत्य है कि जहां तक समाज में स्त्रियों की हैसियत और मर्दों के साथ मेलजोल रखने की स्वतंत्रता का सवाल है, दोनों धर्मों इस्लाम और ईसाइयत ने स्त्रियों को बहुत स्वतंत्रता दे रखी है, लेकिन विरासत (कोड), खुला (पत्नी की मांग पर पति से संबंध-विच्छेद), जायदाद और मिलकियत के वैधानिक अधिकारों के विषय में इस्लाम के संस्थापक और प्रवर्तक ने स्त्रियों को ऐसे स्वत्व प्रदान किये हैं, जिन्हें आज हर देश के धार्मिक अग्रगण्य अपनी स्त्रियों को देने के इच्छुक हैं ।''

–मासिक 'पेशवा' दिल्ली, जुलाई, 1931 ई॰

'पाञ्चजन्य' के पूर्व संपादक श्री तरुण विजय लिखते हैं–''क्या इससे इन्कार है कि पैग़म्बर मुहम्मद एक ऐसी जीवन-पद्धति बनाने और सुनियोजित करने वाली महान विभूति थे जिसे इस संसार ने पहले कभी नहीं देखा ? उन्होंने इतिहास की कायापलट दी और हमारे विश्व के हर क्षेत्र पर प्रभाव डाला । अतः अगर मैं कहूं कि इस्लाम बुरा है तो इसका मतलब यह हुआ कि दुनिया भर में रहने वाले इस धर्म के अरबों अनुयायियों के पास इतनी बुद्धि-विवेक नहीं है कि वे जिस धर्म के लिए जीते-मरते हैं उसी का विश्लेषण और उसकी रूपरेखा का अनुभव कर सकें । इस धर्म के अनुयायियों ने मानव-जीवन के लगभग सारे क्षेत्रों में बड़ा नाम कमाया और हर किसी से उन्हें सम्मान मिला...। हम उन (मुसलमानों) की किताबों का, या पैग़म्बर के जीवन-वृत्तांत का, या उनके विकास व उन्नति के इतिहास का अध्ययन कम ही करते हैं...हम में से कितनों ने तवज्जोह के साथ उस परिस्थिति पर विचार किया है जो मुहम्मद के, पैग़म्बर बनने के समय, 14 शताब्दियों पहले विद्यमान थे और जिनका बेमिसाल, प्रबल मुक़ाबला उन्होंने किया ? जिस प्रकार से एक अकेले व्यक्ति के दृढ़ आत्म-बल तथा आयोजन-क्षमता ने हमारी ज़िन्दगियों को प्रभावित किया और समाज में उससे एक निर्णायक परिवर्तन आ गया, वह असाधारण था । फिर भी इसकी गतिशीलता के प्रति हमारा जो अज्ञान है वह हमारे लिए एक ऐसे मूर्खता के सिवाय और कुछ नहीं है जिसे माफ़ नहीं किया जा सकता ।

पैग़म्बर मुहम्मद ने अपने बचपन से ही बड़ी कठिनाइयां झेलीं । उनके पिता की मृत्यु, उनके जन्म से पहले ही हो गयी और माता की भी, जबकि वह सिर्फ़ छह वर्ष के थे । लेकिन वह बहुत ही बुद्धिमान थे और अक्सर लोग आपसी झगड़े उन्हीं के द्वारा सुलझवाया करते थे । उन्होंने परस्पर युद्धरत क़बीलों के बीच शान्ति स्थापित की और सारे क़बीलों में 'अल-अमीन' (विश्वसनीय) कहलाए जाने का सम्मान प्राप्त किया, जबकि उनकी आयु मात्र 35 वर्ष थी । इस्लाम का मूल-अर्थ 'शान्ति' था...। शीघ्र ही ऐसे अनेक व्यक्तियों ने इस्लाम ग्रहण कर लिया, उनमें ज़ैद जैसे ग़ुलाम भी थे, जो सामाजिक न्याय से वंचित थे । मुहम्मद के ख़िलाफ़ तलवारों का निकल आना कुछ आश्चर्यजनक न था, जिसने उन्हें (जन्म-भूमि 'मक्का' से) मदीना प्रस्थान करने पर विवश कर दिया और उन्हें जल्द ही 900 की सेना का, जिसमें 700 ऊंट और 300 घोड़े थे मुक़ाबला करना पड़ा । 17 रमज़ान, शुक्रवार के दिन उन्होंने (शत्रु-सेना से) अपने 300 अनुयायियों और 4 घोड़ों (की सेना) के साथ बद्र की लड़ाई लड़ी । बाक़ी वृत्तांत इतिहास का हिस्सा है–शहादत, विजय, अल्लाह की मदद और (अपने) धर्म में अडिग विश्वास !

(अंग्रेज़ी दैनिक 'एशियन एज़', 17 नवम्बर 2003 में प्रकाशित आलेख के अंश)

मकतबा अलफहीम मऊ
की नई हिंदी इस्लामी पुस्तकें

मुख्तसर तफसीर अहसनुल बयान	450/=	सुन्नत के मसाइल इकबाल कीलानी	80/=
बुलूगुल मराम	275/=	तौहीद के आंसू	65/=
नबूवत की किरनें मौ० सफीउरहमान मो०	275/=	हमारी दावत किताब व सून्नत	40/=
हुकूकुलएबाद सलाहुददीन यूसुफ	55/=	चेहरे का पर्दा मुस्तहब या वाजिब //	20/=
हुकूकुल औलाद सलाहुददीन यूसुफ	50/=	मुहम्मद(स०) हिन्दू किताबों में	65/=
हुकूकुज़्ज़ौजैन सलाहुददीन यूसुफ	32/=	तावीज़ गंडा की हकीकत	25/=
सैय्यदना अबू बक्र सिद्दीक रज़ि:	25/=	और मैं मर गया	32/=
सैय्यदना उमर फारूक रज़ि:	25/=	मसला उर्स और ग्यारहवीं	25/=
सैय्यदना उसमान गनी रज़ि:	25/=	इस्लाम और इमान के अरकान	80/=
सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि:	25/=	किताबुत्तौहीद	75/=
इस्लाम पर ४० एतेराज़ात और उसके जवाबात	80/=	कुरआन की शीतल छाया	85/=
कुरआन और विज्ञान डा. ज़ाकिर नाइक	50/=	अल्लाह और उसके रसूल की पहचान	50/=
इस्लाम और हिन्दू धर्म में समानताएं //	50/=	जादू का इलाज	85/=
क्या कुरआन ईश्वरीय ग्रन्थ है //	60/=	कलमा-ए-तौहीद अर्थ, महत्तव, फज़ीलत	28/=
विशेष धर्मों में ईश्वर की कल्पना //	28/=	इस्लाम एक नज़र में	50/=
इस्लाम में औरतों के अधिकार //	60/=	इस्लाम खालिस क्या है	22/=
इस्लाम आतंकवाद या भाईचारा //	50/=	इस्लामी अक़ीदा	22/=
मांसाहार उचित या अनुचित //	60/=	मुसलमान का अक़ीदा(पाकेट)	12/=
जन्नत का बयान इकवाल कीलानी	120/=	मासूरह दुआएं	30/=
जहन्नम का बयान इकवाल कीलानी	130/=	हिसनुल मुसलिम(उच्चारण सहित)	40/=
नमाज़ के मसाइल इकबाल कीलानी	120/=	हिसनुल मुसलिम	35/=
तौहीद के मसाइल इकबाल कीलानी	120/=	परदा	35/=

आप घर बैठे किताबें VPP डाक द्वारा मँगा सकते हैं। एकाउंट में रक्म ट्रांस्फर करने पर रजिस्टर्ड डाक द्वारा किताबें भेजने की सुविधा है।

MAKTABA AL-FAHEEM
Raihan Market, 1st Floor, Dhobia Imli Road
Sadar Chowk, Maunath Bhanjan - (U.P.) 275101
Ph.: (O) 0547-2222013, Mob. 9236761926, 9889123129, 9336010224
Email :faheembooks@gmail.com

जनप्रतिनिधियों पर होना चाहिए मतदाताओं का अंकुश

❖ रोशनलाल अग्रवाल

वर्तमान लोकतांत्रिक व्यवस्था को केवल अधूरे या लंगड़े लोकतंत्र का ही नाम दिया जा सकता है, क्योंकि मतदाताओं द्वारा एक बार अपना वोट देकर सांसद या विधायक बना देने के बाद उस पर मतदाताओं का कोई नियंत्रण नहीं रह जाता । चुनाव जीतने के लिए वह अनेक प्रकार के झूठे वादे करके चुनाव तो जीत जाता है किन्तु अपने वादों को पूरा न करने पर उसे किसी प्रकार से दंडित नहीं किया जा सकता । क्योंकि हमारी व्यवस्था में ऐसा कोई क़ानून बनाया ही नहीं गया है । हालांकि जनप्रतिनिधित्व क़ानूनों में उचित प्रावधान करके ऐसे क़ानून आसानी से बनाए जा सकते हैं किन्तु विधायिका के वर्तमान स्वरूप को देखते हुए उससे ऐसी आशा करना उचित नहीं जान पड़ता ।

चुनाव आयोग के पास ऐसी कोई शक्तियां ही नहीं हैं जिसके द्वारा वह लोकतंत्र की मूल त्रुटियों को सुधार सके । वर्तमान विधायिका पर पूरी तरह पूंजीवादी शक्तियां हावी हैं जिनकी नीयत ही ख़राब है । उनकी रुचि पूरी तरह से सत्ता और सम्पत्ति के सारे अधिकार अपने हाथों में रखते हुए शेष पूरे समांज को अपना गुलाम बनाए रखने में ही है । इनकी रुचि समाज में न्याय की स्थापना करने में ही नहीं भले ही देश गृहयुद्ध या विघटन का शिकार क्यों न हो जाए । देश में विद्यमान गंभीर आर्थिक असमानता, सारी सम्पदा व सम्पत्ति का मुट्ठी भर हाथों में केन्द्रित हो जाना और आम आदमी का ग़रीबी, बेराज़गारी, अभाव, भुखमरी और शोषण की आग में जलते रहना पूंजीवादी अन्यायपूर्ण आर्थिक नीतियों का परिणाम है न कि प्रकृति के किसी प्रकोप का ।

पूंजीवादी शक्तियां इस प्रकार के षड्यंत्रों का खुले तौर पर योजनाबद्ध संचालन कर रही हैं । नरेन्द्र मोदी को प्रधानमंत्री बनाने की मुहिम में इसका स्पष्ट आभास होता है ।

स्वतंत्रता के बाद देश की राजनीति को गहराई से प्रभावित करने वाले दल-बदल विरोधी क़ानून का उल्लेख करना यहां उचित लगता है । इस क़ानून ने देश को स्वस्थ लोकतंत्र की दिशा में ले जाने की बजाय राजनीति के गन्दे दलदल में बदल दिया है । इसके कारण देश की पूरी राजनीति का भयानक रूप से केन्द्रीयकरण हुआ है और वह पार्टियों व दलों की दूकानदारी में बदल गयी है । ये पार्टियां लोकहित के वास्तविक मुद्दे उठाने की बजाय लोगों को गुमराह करने वाले और समाज की एकता को भंग करने वाले षड्यंत्र रचते रहते हैं सबसे अधिक चिन्ता की बात तो यह है कि वास्तविक लोकहित का कोई मुद्दा अब इनकी सहमति के बिना लोकसभा या विधानसभाओं में उठाया ही नहीं जा सकता, जिसमें इनकी कोई रुचि नहीं है ।

इनकी रुचि तो केवल लूट-खसोट में है । यही कारण है कि येन-केन प्रकारेण चुनाव जीतकर लोकसभा या विधानसभाओं में पहुंचना ही इनका एकमात्र उद्देश्य रहता है भले ही इसके लिए उन्हें करोड़ों अरबों रुपये ख़र्च करने पड़ें या फिर निर्दोष नागरिक की हत्या करानी पड़े । पूंजीवादी शक्तियां इस प्रकार के षड्यंत्रों का खुले तौर पर योजनाबद्ध संचालन कर रही हैं । नरेन्द्र मोदी को प्रधानमंत्री बनाने की मुहिम में इसका स्पष्ट आभास होता है ।

अत: अब लोकतंत्र को स्वस्थ बनाने की एकमात्र आशा मतदाताओं की समझदारीपूर्ण भूमिका ही हो सकती है । इसके लिए पहले तो उन्हें यह बात समझ में आनी चाहिए कि आज देश की व्यवस्था में मूल रूप से क्या बदलाव होना चाहिए और इस बदलाव को करने के लिए अपने सांसदों और विधायकों को किस प्रकार बाध्य किया जा सकता है । यह बात अच्छी तरह समझ लेनी चाहिए कि व्यवस्था

में किसी भी प्रकार का बदलाव क़ानून बनाकर ही लाया जा सकता है और क़ानून में कोई भी बदलाव करने का एकाधिकार विधायिका के पास है । अत: यदि विधायिका में बैठे मुट्ठी भर लोग चाहेंगे तो ही बदलाव संभव है । उनकी मर्ज़ी सवा अरब नागरिकों की मर्ज़ी से भी भारी है । उनके आगे पूरा समाज असहाय हो जाता है । व्यवस्था की इसी कमज़ोरी का लाभ पूंजीवादी शक्तियां उठा रही हैं । अत: किसी भी दल का कोई व्यक्ति जैसे ही चुनाव जीतता है ये ताक़तें अविलम्ब उस पर अपना जाल फैला देती हैं । दल-बदल विरोधी क़ानून इस काम में उनकी पूरी मदद कर रहा है ।

अत: अब इस मकड़जाल से निकलने के लिए मतदाताओं को किसी राजनैतिक दल द्वारा बनाए गये घोषणा-पत्र पर अपना वोट देने की बजाय न्यायपूर्ण आर्थिक नीतियों के आधार पर अपना घोषणा-पत्र ख़ुद ही तैयार करना चाहिए और उसी उम्मीदवार को अपना समर्थन देना चाहिए जिन्हें वह आर्थिक घोषणा-पत्र मान्य हो । इसके साथ-साथ चुनाव जीतने के बाद कोई सांसद या विधायक मतदाताओं को धोखा न दे सके, इसकी पूरी व्यवस्था होनी चाहिए इसके लिए चुनाव में खड़े होने वाले प्रत्याशियों से घोषणा-पत्र के समर्थन में शपथ-पत्र देने की शर्त लगाना उन पर अंकुश रखने का सही मार्ग है । शपथ-पत्र में मतदाताओं को यह अधिकार दिया गया हो कि घोषणा-पत्र का अक्षरश: पालन न करने पर इसे मतदाताओं के साथ धोखाधड़ी या विश्वासघात माना जाएगा और मतदाता को यह अधिकार होगा कि वह न्यायालय के माध्यम से शपथकर्ता को इस अपराध के लिए दंडित करा सके ताकि उसे न केवल सांसद या विधायक के पद से हाथ धोना पड़े बल्कि झूठा शपथ-पत्र देने के अपराध में जेल में भी रहना पड़े ।

यदि हम मतदाताओं को यह बात समझा पाने में सफल हो जाते हैं तो षड्यंत्रकारियों की कोई भी युक्ति काम नहीं करेगी । चुनाव में खड़ा होने वाला कोई भी उम्मीदवार इसी रास्ते पर चलने के लिए बाध्य किया जा सकेगा । इससे भी अच्छी बात यह होगी कि सच्चे और ईमानदार नागरिक चुनाव में खड़े होने के लिए आगे आने का उत्साह दिखा सकेंगे जिन्हें अपने घोषणा-पत्र के समर्थन में शपथ-पत्र देने में कोई हिचक नहीं होगी । किन्तु स्वार्थी तत्वों के लिए ऐसा कर पाना लगभग असंभव हो जाएगा । क्योंकि उनका उद्देश्य तो मतदाताओं को धोख देकर अपना स्वार्थ पूरा करना है न कि जनसेवा करना । यह उपाय सच्चे और निस्वार्थ नागरिकों को चुनाव क्षेत्र में उतरकर लोकसभा या विधानसभा में जाने में रुचि रखते हैं, के लिए बहुत उपयोगी हो सकता है । इससे मतदाताओं में उनका विश्वास बढ़ेगा और इसका परिणाम प्रत्याशियों के जनसमर्थन में वृद्धि के रूप में सामने आएगा जिससे लोकसभा या विधानसभा में पहुंचने का उनका सपना पूरा हो सकेगा ।

इसलिए जागरूक नागरिकों को चाहिए कि वे घोषणापत्र के पक्ष में व्यापक प्रचार-प्रसार करें ताकि सभी मतदाता इसका महत्व समझ सकें और चुनाव लड़ने का इच्छुक हर व्यक्ति शपथ युक्त घोषणापत्र लेकर ही मतदाताओं से समर्थन पाने की उम्मीद कर सके । इससे राजनैतिक दल भी इसी रास्ते पर चलने के लिए बाध्य हो जाएंगे । इससे अच्छे-अच्छे घोषणा-पत्र जो मतदाताओं को अधिक आकर्षित करने की क्षमता रखते हों, समाने आएंगे तथा सबसे अच्छा घोषणा-पत्र बनाने की होड़ राजनीति में शुरू हो जाएगी । इससे मतदाताओं को कम ख़राब उम्मीदवार चुनने की मजबूरी से मुक्ति मिलेगी और वे सबसे अच्छा जनप्रतिनिधि चुनकर भेज सकेंगे । इससे देश की नकारात्मक राजनीति को सकारात्मक दिशा प्रदान करने में भारी मदद मिलेगी । जनप्रतिनिधि भी मतदाताओं के साथ किये गये वादों को बिना किसी कठिनाई के पूरा कर सकेंगे । इससे उन्हें न केवल आंतरिक आनन्द होगा बल्कि समाज भी उन्हें कृतज्ञतापूर्वक पूरा सम्मान और आत्मीयता प्रदान करेगा । झूठी और षड्यंत्रकारी ताक़तें स्वत: ही प्रभावहीन हो जाएंगी ।

मूल रूप से हमको यह बात समझ लेनी चाहिए कि प्राकृतिक रूप से हर आदमी स्वार्थी होता है । जब भी वह निरंकुश होता है तो उसकी ये पाश्विक प्रवृत्तियां जाग उठती हैं और वह न्यायपूर्ण आचरण करने की बजाय निरंकुश आचरण करने लगता है । इसलिए बात धनबल, बुद्धिबल या सत्ताबल चाहे किसी की भी क्यों न हो, उस पर समाज की लगाम ज़रूरी है । बिना नियंत्रण के हाथी, घोड़ा, ऊंट या बैल आदि से मनचाहा लाभ नहीं लिया जा सकता, उसी प्रकार सशपथ-घोषणा पत्र की लगाम लगाए बिना जनप्रतिनिधियों से व्यापक जनहित के क़ानून बनवाने का उद्देश्य पूरा नहीं हो सकता । न्याय की लगाम ही यह काम कर सकती है ।

सक्षम नेतृत्व की तलाश

■ हर्ष वी॰ पंत

मनमोहन सिंह के देश को अलविदा संबोधन में इसके अलावा कोई बात असाधारण नहीं थी कि वह अपने नौ साल के कार्यकाल में तीसरी बार देश से रूबरू हुए थे । यह बिल्कुल नीरस और फीका संबोधन था और उनसे ऐसी ही अपेक्षा भी थी । देश के प्रधानमंत्री से किसी प्रेरणा की अपेक्षा भी नहीं की जा सकती, किंतु उन्होंने जो भी कहा उससे यही आभास हुआ कि वह अपनी पार्टी में हाशिये पर धकेल दिये जाने के कारण व्यथित हैं । देश को भूल भी जाएं, उनकी पार्टी वाले भी शायद उनकी बात को गंभीरता से नहीं लेते हैं ।

जहां तक भारत का संबंध है तो पिछले कुछ समय से ख़राब ख़बरें पीछा नहीं छोड़ रही हैं । अर्थव्यवस्था संकट में है, सरकार पंगु है और विश्वास का संकट गहरा रहा है । राष्ट्र चौराहे पर है और नेतृत्व गहरी नींद में । राहुल गांधी और सोनिया समेत कांग्रेस का शीर्ष नेतृत्व जनता के साथ घुलने-मिलने में यक़ीन नहीं रखता । वे अपने फ़ैसलों की व्याख्या नहीं करते, वे देश के लोगों के साथ सीधे संवाद नहीं करते, वे यह विश्वास नहीं करते कि आम भारतीयों के साथ संपर्क बढ़ाने की आवश्यकता है । प्रधानमंत्री ने जनमत तैयार करने और शासन की नीतियों के पक्ष में उसे मोड़ने का कोई प्रयास नहीं किया । इसमें आश्चर्य नहीं कि देश के अधिकांश लोग यह मानने लगे हैं कि पिछले तीन वर्षों से देश में शायद ही सरकार काम कर रही है ।

भारत के आर्थिक पारगमन के दौर में यह स्थिति किसी त्रासदी से कम नहीं है । यह भारत का समय होना चाहिए था । पश्चिमी देश अभूतपूर्व आर्थिक संकट से घिरे हैं । यूरोप के संकट ने अधिकांश यूरोपीय देशों के लिए आर्थिक संकट से उबरना असंभव बना दिया है । आने वाले कुछ वर्षों तक इस स्थिति में बदलाव नज़र नहीं आता । अमेरिका भी आर्थिक दलदल में फंस गया है और पुरज़ोर प्रयास के बाद भी वह इससे निकल नहीं पा रहा है । परिणामस्वरूप, विकसित देश अपने घर पर ध्यान केन्द्रित कर रहे हैं । कुल मिलाकर वैश्विक नेतृत्व में खालीपन भर गया है । इन परिस्थितियों में भारत को बढ़त हासिल करनी चाहिए थी, किंतु भारत की कहानी तो शुरू होने से पहले ही ख़त्म होती नज़र आ रही है । पिछले कुछ सालों से घरेलू स्तर पर अफ़रातफ़री मची है । सरकार फ़ैसले नहीं ले पा रही है और न ही योजनाओं का सही ढंग से क्रियान्वयन कर पा रही है ।

बाहरी विश्व के लिए, ख़ासतौर पर भारत के मित्रों और सहयोगियों के लिए यह निराशाजनक समय है । भारत के साथ सामरिक साझेदारी में ख़ासा निवेश करने वाला अमेरिका अतीत के संबंधों की मर्यादा को पाने के लिए संघर्ष कर रहा है ।

पूरब और दक्षिण पूर्व एशिया में सहयोगी देश जो कभी भारत को चीन के ख़िलाफ़ एक महत्वपूर्ण संतुलनकर्ता के रूप में देखते थे, अब हताश होकर अपनी नज़रें फिरा चुका है । अफ़ग़ानिस्तान में भारत के मित्र अपनी वफ़ादारी बदल चुके हैं । उन्हें डर है कि 2014 में नाटो सेनाओं की वापसी के बाद इस क्षेत्र पर पाकिस्तान का सिक्का चलेगा ।

इसके बावजूद भारत के राजनीतिक तंत्र का व्यवहार ऐसा है जैसे कुछ भी ग़लत हुआ ही न हो । भारत नेतृत्व के संकट का सामना कर रहा है और दिक़्क़त की बात यह है कि इससे निपटने के उपाय भी नहीं किये जा रहे हैं । सोनिया गांधी के पास समस्त शक्तियां हैं, लेकिन ज़िम्मेदारी नहीं । मनमोहन सिंह के पास ज़िम्मेदारी है तो शक्ति नहीं । 2009 में निर्णायक जनादेश हासिल करने वाली पार्टी की यह दुर्गति समझ से परे है । आथिकि रूप से, पार्टी ने सरकार को दूसरी पीढ़ी के सुधार कार्यक्रम चलाने की अनुमति नहीं दी । सामाजिक रूप से भ्रष्टाचार इतना फैल चुका है कि अब झेला नहीं जा रहा है । शासन के तमाम संस्थान वैधता हासिल करने के लिए जूझ रहे हैं । राजनीतिक रूप से पार्टी ने पहले कार्यकाल में कमाई हुई

पूरी जमापूंजी गंवा दी है । सरकार के विभागों में कोई समन्वय नहीं है । उनमें राष्ट्रीयता की भावना ख़त्म हो गयी है और सब अपने विभागीय हितों को ढोते नज़र आ रहे हैं । समकालीन भारत के राजनीतिक परिदृश्य में प्रभावी कार्यपालक अधिकारियों और स्वप्नद्रष्टा राजनेताओं का अभाव है ।

अपनी तमाम शुभेच्छाओं के बावजूद प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह देश को सही ढंग से चलाने में विफल रहे हैं और न ही उनके पास देश के भविष्य के लिए कोई दृष्टि है । तो भी, इसमें उनका दोष नहीं है । पिछले आम चुनावों में उन्होंने राजनीतिक पूंजी नहीं कमाई थी । कांग्रेस के नेता के नाते सोनिया गांधी ने यह पूंजी कमाई थी, किंतु वह इस पूंजी को इस्तेमाल करने में विफल रहीं । उनका बेटा राहुल गांधी एक राजनीतिक दायित्व बन गया है । इसलिए भारत की यह सबसे पुरानी पार्टी वंश के एक अन्य सदस्य-प्रियंका की तरफ़ लौट रही है ।

देश में राजनीति की नयी परिभाषा रची जा रही है, जबकि कांग्रेस में कल्पनाशील राजनीति की इच्छाशक्ति ही नहीं रह गयी है । अफ़सोस की बात है कि भारतीयों के सामने कोई विकल्प भी नहीं है । प्रमुख विपक्षी दल भारतीय जनता पार्टी भी नेतृत्व से वंचित है और वह तमाम देशवासियों को अब भी अपने साथ जोड़ पाने में सफल होती नहीं दिख रही है ।

देश के विभिन्न राज्यों में मुख्यमंत्री जैसे ही लोकप्रियता हासिल करते हैं वे राज्यों को अपनी निजी जागीर समझने लगते हैं । क्षेत्रीय दल एक नये क़िस्म का नेतृत्व दे रहे हैं, जो दो प्रमुख राजनीतिक दलों से भी अधिक विफल है । आज की राजनीतिक जमाअत न तो लोगों के अन्दर प्रेरणा और उत्साह का संचार कर रही है और न ही उन समस्याओं को सुलझाने का प्रयास कर रही हैं जिनसे देश घिरा हुआ है । इसे देश में राजनीतिक प्रतिभा का अभाव ही कहा जा सकता है । नेतृत्व के नाम पर लोगों को या तो विभिन्न वंशों की विरासत जैसे गांधी, सिंधिया, सिंह, पायलट, यादव आदि पेश किये जा रहे हैं या फिर नरेन्द्र मोदी, ठाकरे, मायावती जैसे ऐसे लोगों से साबक़ा पड़ रहा है जो लोगों के डर और चिंताओं के साथ खेलते हैं । इस आलोक में आम आदमी पार्टी ज़रूर उम्मीद की किरण जगा रही है, किंतु अभी उसे अपने सामाजिक आंदोलन को शासन के क्रियात्मक कार्ययोजना में बदलना शेष है । इसलिए हैरानी नहीं होती कि भारत अपने आदर्शों की तलाश में फ़िल्म उद्योग या फिर क्रिकेट हस्तियों की तरफ़ देखता है ।

भारत को आज ऐसे नेताओं की सख़्त ज़रूरत है जो न केवल यह विचार रखते हैं कि इस महत्वपूर्ण और नाज़ुक समय में भारत विश्व का नेतृत्व कर सकता है, बल्कि उनमें इस विचार को फलीभूत करने की क्षमता भी हो । निश्चित तौर पर विश्व की सबसे अधिक आबादी वाला देश बनने जा रहा भारत ऐसे नेता तैयार कर सकता है जो बड़े सपने देख सकते हों और भारतीयों में यह भरोसा भी पैदा कर सकते हैं कि इन सपनों को साकार भी किया जा सकता है ।

(लेखक लंदन के किंग्स कॉलेज में प्राध्यापक हैं)

(सा॰ : 'दै॰ जागरण')

लूटो-खाओ होड़ लगी है

नेताओं का यही तमाशा,
नहीं बोलते सच की भाषा ।
संसद में नेता की भाषा,
तोड़ रही जनता की आशा ।
देते हैं उपदेश निराले,
मीत बहुत हैं दिल के काले ।
खादी वाले नेता ठहरे,
हो जाते संसद में बहरे ।
बढ़ता है जब इनका भत्ता,
संसद में चुप रहते नेता ।
जो जनता का माल उड़ाते,
अस्ली नेता वे कहलाते ।
नेताओं में दौड़ लगी है,
लूटो-खाओ होड़ लगी है ।
मीत देश के भाग्य विधाता,
लक्ष्मी से बस रखते नाता ।
इधर कमीशन, उधर दलाली,
नेताओं की रीत निराली ।
अस्ली नेता वह कहलाता,
वादे करके दिल बहलाता ।

रोहित यादव
पत्रकार
सैदपुर, मंडी अटेली-123021 (हरियाणा)

कैसे दूर हो भारतीय अर्थव्यवस्था की बदहाली ?

■ डॉ॰ विकास मानव

आर्थिक विकास का अर्थ होता है पूंजी का संचय । पूंजी के अधिक होने से पूंजी का मूल्य घट जाता है । दूसरी तरफ़ पूंजी की भांति श्रम का मूल्य घटता नहीं है । श्रमिक को दिन में 2400 कैलोरी भोजन, कपड़ा, मकान सब चाहिए ही । यदि पूंजी की भांति श्रम का भी मूल्य घटा दिया जाए तो श्रमिक का क्या होगा ? अत: उद्यमियों के लिए यह लाभकारी हो जाता है कि वे पूंजी का अधिक उपयोग करें तथा श्रम का कम । यदि पूंजीवादी नीति है । परिणाम यह होता है कि आर्थिक विकास के साथ-साथ बेरोज़गारी और फिर ग़रीबी बढ़ती जाती है ।

विश्व बैंक ग़रीबी को लेकर बहुत चिंतित है । बैंक मुक्त बाज़ार अर्थात, नवउदारवाद का पक्षधर है और मुक्त बाज़ार से ग़रीबी उत्पन्न होती है । बैंक स्वयं ग़रीबी का जनक है परन्तु यह ग़रीबी विस्फोटक न हो जाए, इसलिए वह ग़रीबी नियंत्रण पर व्यय बढ़ाने का सुझाव देता है । अन्न वितरण, पेंशन, स्वास्थ्य एवं बेरोज़गारी बीमा प्रभृति योजनाओं हेतु बैंक ऋण देने को तैयार है । बैंक उस मुक्त बाज़ार को छोड़ने को तैयार नहीं है, जो ग़रीबी उत्पन्न करता है । बैंक चाहता है कि एक तरफ़ मुक्त बाज़ार ग़रीबी उत्पन्न करता रहे और दूसरी तरफ़ हम अपने धन को उसके नियंत्रण में बर्बाद करते रहें ।

बाज़ार पर नियंत्रण करके ग़रीबी की समस्या को जड़ से उखाड़ फेंका जा सकता है । ऐसा करना होगा, यदि हम वास्तव में दलितों, अल्पसंख्यकों और पिछड़ों का तनिक भी हित चाहते हैं ।

पूंजीवादी प्रयत्नों पर पर्याप्त प्रतिबंध लगाकर लघु प्रयासों को प्रोत्साहित करना होगा । अवश्य ही वस्तुएं थोड़ी महंगी होंगी, परन्तु इससे देश के बेरोज़गारों को काम मिलेगा । पूंजी को मिलने वाला लाभ उन्हें मिलेगा और वे महंगी वस्तु भी सहजता से ख़रीद सकेंगे । इससे ग़रीबी स्वत: ही दूर होने लगेगी । इस तरह से वस्तुओं को महंगी होने देने और जनता को उसे ख़रीदने के लिए मजबूर करने हेतु विश्व बैंक क़तई तैयार नहीं ।

इसके लिए दो विकल्प हैं । एक यह कि बाज़ार के चरित्र पर नियंत्रण क़ायम किया जाए । पूंजी के अतिशय उपयोग पर प्रतिबंध लगाकर यह तय किया जाए कि पर्याप्त मात्रा में श्रम की मांग बाज़ार में उपलब्ध हो । दूसरा रास्ता यह है कि लोगों को बेरोज़गार और ग़रीब न होने दिया जाए और उन्हें अन्न वितरण आदि ग़रीबी नियंत्रण कार्यक्रमों के ज़रिये पर्याप्त राहत प्रदान की जाती रहे ।

आज इसी पर अमल हो रहा है । जनता के सामने श्रम के जो अवसर मौजूद हैं, वह उनका लाभ लेने की स्थिति में भी नहीं है । सब काम सरकार करेगी । वह ग़रीब है, रहेगा । अपाहिज बनती जा रही है तमाम भारतीय जनता । उसकी मानसिकता निकम्मी हो गयी है । बैंक का दृष्टिकोण है कि बाज़ार के अंतर्गत रहते हुए ग़रीबी को ऋण, सड़कें, बिजली आदि उपलब्ध कराकर उन्हें रोज़गार मुहैया कराने चाहिएं। उसके अनुसार रोज़गार सृजन को वरियता देने की आवश्यकता नहीं है । राहत कार्यक्रमों पर बढ़-चढ़कर अमल होना चाहिए अर्थात अपंग बनाओ बैसाखी लाओ ।

ऋण, सड़कें, बिजली आदि उपलब्ध होने से ग़रीब को रोज़गार मिल जाएगा, यह निश्चित नहीं । संभव है कि इन सुविधाओं के बावजूद पूंजी आधारित बड़े उद्योग ही सफल हों । हिन्दुस्तान लीवर द्वारा भारी मात्रा में पूंजी लगाकर सस्ती साबुन बनाने से अनेक छोटे साबुन कारखाने बंद हो गये, यद्यपि उन्हें ऋण, बिजली, पानी आदि सभी सुविधाएं उपलब्ध थीं । खादी के लिए भी ये तमाम सुविधाएं सुलभ होने पर भी कताई मिलें ही विजेता हैं, दूसरा ख़तरा यह है कि अन्न वितरण आदि योजनाओं में ही देश का धन समाप्त

हो सकता है । ऐसे में सड़कें भी नहीं बन पाएंगी और 'बैसाखी' से भी वंचित होंगे ।

पूंजीवादी प्रयत्नों पर पर्याप्त प्रतिबंध लगाकर लघु प्रयासों को प्रोत्साहित करना होगा । अवश्य ही वस्तुएं थोड़ी महंगी होंगी, परन्तु इससे देश के बेरोज़गारों को काम मिलेगा । पूंजी को मिलने वाला लाभ उन्हें मिलेगा और वे महंगी वस्तु भी सहजता से ख़रीद सकेंगे । इससे ग़रीबी स्वत: ही दूर होने लगेगी । इस तरह से वस्तुओं को महंगी होने देने और जनता को उसे ख़रीदने के लिए मजबूर करने हेतु विश्व बैंक क़तई तैयार नहीं ।

क्रयशक्ति बढ़ाए बिना स्वाभाविक महंगाई (प्रतिवर्ष बढ़ने वाली) का सामना कर पाना भी संभव नहीं । सवाल बाज़ार से टक्कर का है । ऋण, सड़कें, बिजली, उपलब्ध होने से बुनकर का कपड़ा 20 रुपये प्रति मीटर के स्थान पर 20 रुपये में उपलब्ध हो सकता है । यदि मिल का कपड़ा 10 रुपये में ही उपलब्ध हो जाए तो बुनकर को दिये गये उस ऋण की सार्थकता ही क्या रह जाती है ?

यदि श्रम व श्रमिकों को देश के चिंतन के केन्द्र में रखना है तो मुक्त बाज़ार पर अंकुश लगाना ही होगा । पूंजी तथा उपभोक्ता के लाभ को कम किये बिना श्रमिक का उद्धार संभव नहीं है ।

यद्यपि रूस तथा चीने के साम्यवादी मॉडल फेल हो चुके हैं तथापि पद्धति ख़ारिज नहीं होती साम्यवादी देशों ने ग़लती यह की कि बाज़ार को पूर्णतया नकार दिया । पूंजीवादी देश बाज़ार को बिल्कुल स्वच्छंद छोड़ रहे हैं । दोनों ही ग़लत हैं । आवश्यकता इस बात की है कि बाज़ार की सार्थक भूमिका को स्वीकार करते हुए उसे नियंत्रण में रखा जाए । सरकार अध्ययन कराये कि आवश्यक संख्या में रोज़गार उत्पन्न करने के लिए हल्की से हल्की लगाम कौन सी है ? हम देख रहे हैं कि मुक्त व्यापार के कारण पेट्रोल, डीज़ल और अन्य ज़रूरत के सामानों के दाम लगातार बढ़ते जा रहे हैं ।

बुनाई, सॉफ्ट ड्रिंक्स, चीनी उद्योग, काग़ज़ उद्योग आदि तमाम क्षेत्र हो सकते हैं जहां पूंजी पर न्यूनतम प्रतिबंध लगाकर पर्याप्त मात्रा में रोज़गार के अवसर सृजित हो सकते हैं । ग़रीबों को राहत देने के जो प्रयास हो रहे हैं, उन्हें भी जारी रखा जाना चाहिए । देश के हर नागरिक को रोज़गार तभी मिल सकेगा । आर्थिक विकास की वर्तमान अवधारणा की दूसरी ख़ामी सरकारी ख़र्च में प्राथमिकता की है । प्राथमिकता ऋण, सड़कें, बिजली आदि के साथ-साथ ग़रीबों को क़ानूनी सहायता, जीवनयापन के अवसरों की सूचना, अन्तर्राष्ट्रीय बाज़ार में माल बेचने की सुविधा, पेंशन, स्वास्थ्य, बेरोज़गारी बीमा को मिलनी चाहिए ।

समस्या विकट इसलिए है कि हमारी सरकार विश्व बैंक से ऋण लेने के लालच में अपना स्वयं का पैसा भी बर्बाद कर रही है । चूंकि बैंक ग़रीबों को बैसाखी हेतु ऋण देने को तत्पर है, इसलिए सरकार भी उसी दिशा में चल निकलती है । फलत: बाज़ार पर नियंत्रण तो दूर, रोज़गार के अवसर भी उत्पन्न नहीं होते । एक तरफ़ पूंजी का बेलगाम घोड़ा ग़रीबी उत्पन्न करता जाता है, दूसरी तरफ़ सरकार अन्न वितरण आदि के बहाने कंगाल होती रहती है और ग़रीब अपंग । आख़िर कब तक ऐसा चलता रहेगा ?

अपने घर को
इस्लाम के प्रकाश से रोशन कीजिए
स्वयं पढ़िए, अपने प्रियजनों, संबंधियों
और अन्य लोगों को भी पढ़ाइए

कान्ति
स्वस्थ चेतना का वाहक हिन्दी साप्ताहिक अख़बार
सहयोग राशि वार्षिक : Rs. 250/-
आजीवन : Rs. 5,000/-

दावत
www.dawatonline.com
सहयोग राशि वार्षिक : Rs. 600/-
आजीवन : Rs. 10,000/-

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका
कान्ति
www.kanti.in
सहयोग राशि वार्षिक : Rs. 220/-
आजीवन : Rs. 5,000/-

सहयोग राशि वार्षिक स्वदेश में : Rs. 220/- विदेशों में 30 अमेरिकी डॉलर आजीवन : Rs. 5,000/-

ज़िन्दगी-ए-नव
ماہنامہ زندگی نو
www.zindgienau.com

मांगे जाने पर नमूने की प्रति निशुल्क भेजी जाएगी।

MANAGER, DAWAT TRUST,
D-314, DAWAT NAGAR, ABUL FAZL ENCLAVE,
JAMIA NAGAR, NEW DELHI-110025,
TEL.: Dawat: 09818799113, Kanti: 09818799223,
E-mail: dawattrust@yahoo.co.in

पुलिस सुधार की अनदेखी क्यों ?

■ प्रकाश सिंह

डांवाडोल विधि व्यवस्था को किसी राज्य के लिए ठीक नहीं कहा जा सकता । दिल्ली में मुख्यमंत्री केजरीवाल के धरने ने एकबारगी यह इशारा किया कि सारी अव्यवस्था के केन्द्र में पुलिस वाले हैं ।

हंगामे के बाद दो पुलिस वालों को छुट्टी पर भी भेज दिया गया । धरने की शुरुआत से ही यह बात सामने आयी कि यह धरना पुलिस की ज़्यादतियों से लोगों को बचाने के लिए है । लेकिन क्या सचमुच ऐसा था ? राजनीतिक टिप्पणी करने से बचते हुए मैं कहना चाहूंगा कि धरना जिन कारणों से हुआ हो, लेकिन बलि का बकरा पुलिस वाले बने । धरने का कारण भी वाजिब नहीं था ।

दिल्ली सरकार के एक मंत्री ने 15 जनवरी की रात महिला अधिकारों की धज्जियां उड़ाई और सारा ठीकरा पुलिस वालों पर फोड़ दिया । उनका पुलिस पर यह दबाव डालना कि वह रात में अफ़्रीक़ी लोगों के घर में घुसे और बिना सर्च वारंट के सर्च करे, ग़ैरवाज़िब और क़ानून का मज़ाक़ बनाना था । पुलिस कार्रवाई इसलिए भी नहीं कर रही थी कि मामला विदेशी महिलाओं से जुड़ा था और उनके ख़िलाफ़ पुलिस कार्रवाई के लिए सभी क़ानूनी प्रक्रिया अपनानी ज़रूरी होती हैं । मेरा मानना है कि उस स्थिति में पुलिस ने वही किया जो विधिसम्मत है । मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल जब नियमों से परे हटकर पुलिस वालों पर कार्रवाई करने की मांग करते हैं तो यह भी एक तरह का वी॰आई॰पी॰ कल्चर ही दिखाता है ।

> **जब राजनीति में अवांछित लोग आने लगे और जनता यह देखने लगी कि पुलिस बल हमारी कम और इनकी सुरक्षा में अधिक तैनात हैं तो उनका पुलिस तंत्र से मोहभंग हुआ ।**

वी॰आई॰पी कल्चर सिर्फ़ यह नहीं कि आप लालबत्ती वाली गाड़ी पर चलें, हमेशा लाव-लश्कर के साथ दिखें । दरअस्ल, यह एक तरह की मानसिकता है कि जैसा आप चाहें वैसा हो । पुलिस की ज़्यादतियों के ख़िलाफ़ गुस्सा होना सही है लेकिन यह भी याद रखना चाहिए कि पुलिस क़ायदे-क़ानून से हटकर किसी क़ीमत पर काम नहीं कर सकती । किसी के मौखिक तौर पर यह कहने पर कि फ़लां घर में ग़लत हो रहा है, वह तुरंत वहां रेड नहीं कर सकती । जहां तक दिल्ली पुलिस को केन्द्र के नियंत्रण से हटाकर दिल्ली सरकार के नियंत्रण में लाने की बात है, तो इसके लिए एक प्रक्रिया है । ज़रूरी है संसद संविधान में संशोधन करे । लेकिन संसद के पहले दिल्ली विधानसभा को भी इस संबंध में प्रस्ताव पास करना होगा । यह प्रस्ताव ही आगे संसद तक पहुंचेगा ।

आप सड़क पर मांग कर कुछ हासिल नहीं कर सकते । पुलिस को दिल्ली सरकार के नियंत्रण में लाना अभी दूर की कौड़ी है । हालांकि कई बार इस मांग का प्रयोग विशुद्ध राजनीतिक कारणों से होता है । दिल्ली सरकार के नेताओं को यह बात अखरती है कि वे पुलिस का मनचाहा प्रयोग नहीं कर पा रहे । केजरीवाल सरकार से पहले शीला दीक्षित सरकार का भी यही हाल था । वह भी दिल्ली पुलिस को दिल्ली सरकार के नियंत्रण में लाने पर ज़ोर दे रही थी । विडंबना यह है कि पुलिस पर नियंत्रण तो हर कोई चाहता है लेकिन उसमें सुधार की बात कोई नहीं करता । पुलिस विभाग के प्रति सरकारी या कहें राजनीतिक दलों की उदासीनता दिनोंदिन गंभीर होती जा रही है । आज पुलिस में राजनीतिक दबाव और भ्रष्टाचार की समस्या घुन की तरह मौजूद है । पुलिस सुधार राजनेताओं के लिए कोई मुद्दा नहीं है, जबकि पुलिस बलों पर आम नागरिक के घटते विश्वास के पीछे यही लोग निर्णायक भूमिका में हैं ।

राजनीति जैसे-जैसे कलुषित होती गयी, इसने अपने लपेटे में तमाम तंत्रों को लेना शुरू कर दिया । इसी क्रम में पुलिस विभाग का भी राजनीतिकरण हो गया । जब राजनीति

में अवांछित लोग आने लगे और जनता यह देखने लगी कि पुलिस बल हमारी कम और इनकी सुरक्षा में अधिक तैनात हैं तो उनका पुलिस तंत्र से मोहभंग हुआ । जब आप देखते हैं कि पुलिस को घोटाले या अन्य आपराधिक कृत्य करने को कौन बाध्य कर रहा है, तो इसके पीछे राजनीति के अपराधीकरण की पृष्ठभूमि मौजूद होती है । दिल्ली में अभी जो भी हंगामा हुआ उसके केन्द्र में पुलिस ही थी, परंतु नकारात्मक रूप से । लेकिन क्या किसी पार्टी ने खुलकर पुलिस सुधारों की बात की ? वे बस एक-दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप लगाते रहे । राजनीतिक स्तर पर तो छोड़ ही दें, आज पुलिस सुधार के जो प्रयास विभागीय तौर पर भी किये जाते हैं उन्हें किसी न किसी बहाने रोक दिया जाता है । आज हमारे पास पर्याप्त पुलिस बल नहीं है, जबकि पुलिस विभाग की जवाबदेही बढ़ती ही जा रही है । पुलिस आम लोगों के लिए है लेकिन इसकी एक बड़ी संख्या वी॰आई॰पी॰ लोगों की सुरक्षा में लगी है । पुलिस बल की एक बड़ी संख्या नेताओं की चाकरी में लिप्त है । पुलिस बलों के लिए प्रशिक्षण सुविधाओं का भी घोर अभाव है ।

डेढ़ सदी पुराने पुलिस क़ानून की विसंगतियों और पुलिस की छवि में सुधार के लिए सुप्रीम कोर्ट ने भी जो निर्देश दिये, उन पर अधिक ध्यान नहीं दिया गया । कोर्ट के निर्देशों के तहत राज्य सरकार पुलिस बल पर दबाव नहीं बना पाये इसके लिए राज्य सुरक्षा आयोग के गठन की बात कही गयी थी, लेकिन अधिकांश राज्य सरकारों ने इसको अनसुना कर दिया । क्या दिल्ली सरकार पहले ऐसा करने की बात कहती और फिर पुलिस की कमियों की ओर इशारा करती तो यह ज़्यादा बेहतर नहीं होता ? यहां मैं उदाहरण देकर बताना चाहता हूं कि गुजरात सरकार भी अनसुना करने में आगे रही, जबकि इस निर्देश के जारी होने के कुछ ही दिन बाद वहां के कुछ शीर्ष अधिकारी फ़र्ज़ी मुठभेड़ कांड में दोषी पाये गये । चूंकि फ़र्ज़ी मुठभेड़ का मामला राजनीतिक था इसलिए समझा यही जाना चाहिए कि वे अधिकारी बलि के बकरे बने, जबकि अस्ली दोषी तो राजनीतिक आक़ा ही थे ।

सुप्रीम कोर्ट के दिये गये निर्देशों में यह भी शामिल था कि पुलिस महानिदेशक की नियुक्ति संघ लोकसेवा आयोग के तीन अधिकारियों का दल करे, लेकिन राज्य सरकारों ने इस पर भी आनाकानी दिखायी । इसी तरह सुधारों के तहत लोगों की शिकायत सुनने के लिए पुलिस शिकायत प्राधिकरण के गठन और पुलिस बलों के ट्रांसफ़र और प्रोन्नति तय करने के लिए पुलिस इस्टेब्लिशमेंट बोर्ड के गठन की बात की गयी, लेकिन यहां भी राज्य सरकारों का रवैया टालमटोल का रहा है । आज आप किसी भी दिन का अख़बार उठाकर देखें, शायद ही ऐसी ख़बर न छपी हो जो पुलिस वालों की किसी न किसी रूप में आलोचना करती हो । आलोचना सही है लेकिन आप इसके कारणों की भी पड़ताल करें । कई बार तो राजनीतिक दबाव के कारण पुलिस को जान-बूझकर निष्क्रिय रहना होता है । दो साल पहले मुंबई में हुई एक घटना में बलवाइयों पर जब एक डिप्टी कमिश्नर ने कार्रवाई करने की कोशिश की तो मौक़े पर ही कमिश्नर ने उन्हें झाड़ पिला दी ।

कमिश्नर का कहना था कि अगर कार्रवाई होती तो उसकी गंभीर प्रतिक्रिया होती । शायद दिल्ली मामले में भी ऐसा ही हुआ हो, अन्यथा क्या कारण रहा कि धारा 144 लगने के बाद भी हज़ारों लोग जमा हुए । मैं मानता हूं कि यह लोकतंत्र है और लोगों को अपनी बात कहने का अधिकार होना चाहिए, लेकिन क़ानून के ख़िलाफ़ जाकर नहीं । आख़िर हमारे क़ानून भी जनतांत्रिक मूल्यों के आधार पर ही तैयार हुए हैं । पुलिस को अक्सर अपना काम करने से रोकने के लिए राजनीतिक स्तर पर अंकुश लगाया जाता है और समस्या जब विकराल होती है तो सारा ठीकरा पुलिस पर ही फोड़ दिया जाता है । ज़ाहिर-सी बात है कि सत्ता नहीं चाहती की पुलिस बल सुधरे और उसकी नकेल उनके हाथ से छिन जाए । पुलिस को आज भी सत्ताधीश अपनी जागीर ही समझते हैं । न पुलिस को उसका अधिकार दिया जा रहा है और न ही आवश्यक फंड । मैं समझता हूं कि अगर राजनीति जनता की वास्तविक पक्षधर है तो वह हरहाल में पुलिस के राजनीतिकरण व अपराधीकरण के ख़िलाफ़ खड़ी होगी । राजनेताओं को चाहिए कि वे पुलिस सुधारों को पूरे भारत में लागू करने के लिए आगे आएं । इससे पुलिस का राजनीतिकरण रुकेगा जो आज सबसे बड़ी समस्या है । इन सुधारों के बाद पुलिस के प्रशिक्षण और अन्य मसलों से जुड़े सुधार धीरे-धीरे अपने आप हो जाएंगे । ऐसा हो गया तो आप पुलिस को आज से कहीं बेहतर रूप में पाएंगे और तब ग़लत पुलिस वालों की पहचान और उन पर कार्रवाई करना भी आसान होगा । (सा॰ : रा॰ सहारा)

फ़ायदेमन्द है हरी चाय

■ ज्योतिर्मय आनंद

यह सच है कि हरी चाय के सेवन से हृदय रोग और कैंसर जैसे कई गंभीर रोगों की संभावना कम हो जाती है । शोधों से पता चला है कि हरी चाय में मौजूद पोलिफिनोलस रक्त में ट्राइग्लिसराइड के स्तर को कम करती है, जिससे हृदय स्वस्थ रहता है । इससे कोलेस्ट्रॉल भी नियंत्रित रहता है और यह जीवन शक्ति भी बढ़ाती है । हरी चाय फैटी एसिड से मस्तिष्क और जिगर की भी रक्षा करती है । एक अन्य अनुसंधान के अनुसार, यह चाय न केवल हमारे शरीर को सूर्य की अल्ट्रावॉयलेट किरणों से बचाती है, बल्कि हरी चाय त्वचा कैंसर को भी रोकती है । इससे त्वचा निखरती है । हरी चाय में मौजूद एंटी ऑक्सीडेंट कैंसर से बचाता है । जापानी भारी मात्रा में हरी चाय का उत्पादन तथा सेवन करते हैं । यही कारण है कि जापानियों में कैंसर की दर बहुत कम है । चाय के एक कप में 200 मिलीग्राम फ्लेवनाइड एंटी ऑक्सीडेंट मौजूद होता है, जो विटामिन सी और ई से कहीं ज़्यादा शक्तिशाली और प्रभावी है ।

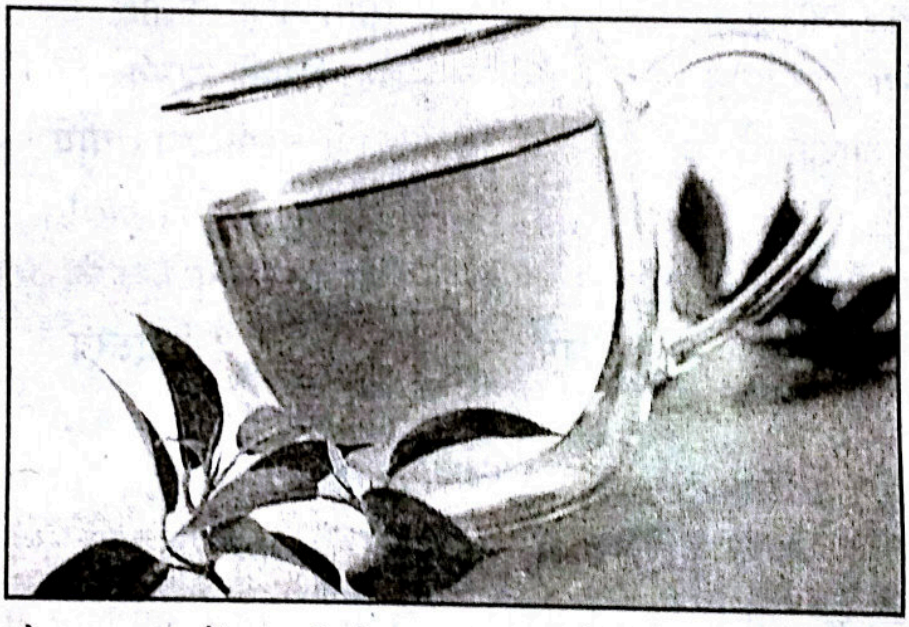

बेंगलूर के मणिपाल अस्पताल में न्यूट्रीशन वैज्ञानिक डॉ॰ पी॰आर॰ कृष्णास्वामी के अनुसार, भारत में अधिकतर लोग काली चाय पीते हैं, जबकि चीन और जापान में लोग हरी चाय पीना पसन्द करते हैं । हरी चाय में एंटी ऑक्सीडेंट की मात्रा अधिक होती है । शरीर में इसकी कमी कई बीमारियों को जन्म दे सकती है । हरी चाय में मौजूद कैचिन नामक तत्व शरीर में ब्लड प्लेटलेट जमा होने से रोकता है तथा रक्त को पतला बने रहने में मदद करता है ।

संसार में यूं तो चाय की तीन हज़ार प्रजातियां हैं, लेकिन आमतौर पर कामेलिया सिनेसिस प्रजाति की चाय ही उपयोग में लायी जाती है । हरी चाय प्राप्त करने के लिए इसे पौधों से सीधे तोड़कर सुखा लिया जाता है । इसके बाद इसे किसी भी प्रक्रिया से नहीं गुजारा जाता । इस चाय में दूसरी चाय की तुलना में पॉलिफेनल्स तथा बायोफ्लेविनायड्स पाये जाते हैं, जबकि परिष्कृत चाय में ये तत्व कम हो जाते हैं । कामेलिया सिनेसिस की पत्तियों को जब अर्द्धपरिष्कृत किया जाता है तो हरी चाय और काली चाय के बीच के स्तर की ओलौंग चाय प्राप्त होती है । पूर्णतः परिष्कृत चाय से हमें काली चाय प्राप्त होती है, जिसे आमतौर पर उपयोग में लाया जाता है ।

जहां काली चाय में तीन से दस प्रतिशत तक कैचिंस पाया जाता है, वहीं ओलौंग चाय में आठ से बीस प्रतिशत कैचिंस की मात्रा पायी जाती है । कैचिंस ही वह तत्व है, जो हृदय रोग से बचाता है ।

हरी चाय तैयार करने के लिए सबसे पहले उबलते पानी में पत्तियों को डाल देना चाहिए । उबलने के दो-तीन मिनट बाद चीनी के बदले एक चम्मच शहद डाल दें । यह चाय सुबह एक कप तथा शम को एक कप लेने से आपको बहुत लाभ होगा । यदि आप चाहें तो इसमें दूध मिलाकर भी इस्तेमाल कर सकते हैं । चाय व केवल कई गंभीर बीमारियों से बचाती है, बल्कि यह बुढ़ापे में स्वस्थ भी रखती है । एशियन टाइप हरी चाय बाक़ी दो तरह की चाय की तुलना में ज़्यादा ऑक्सीडेंटरोधी है । वैसे, एंटी ऑक्सीडेंट तत्व फूलों, फलों तथा सब्ज़ियों से भी प्राप्त होते हैं । हमें उन चीज़ों के बारे में भी जानना चाहिए ।

हमारी कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकें

इस्लाम एक सामान्य परिचय	—शैख़ अली तंतावी	90.00
इस्लाम एक स्वयंसिद्ध ईश्वरीय जीवन व्यवस्था	—राजेन्द्र नारायण लाल	25.00
प्यारे नबी की पाक ज़िन्दगी	—एजाज़ुल हक़ क़ुद्दूसी	30.00
इतिहास के साथ यह अन्याय	—बी॰ एन॰ पाण्डे	7.00
मेरे दावती तजुर्बात (प्रथम)	—नसीम ग़ाज़ी फ़लाही	25.00
ग़लत फ़हमियों का निवारण	—डॉ॰ ज़ाकिर नाइक	25.00
क़ुरआन और हम मुसलमान	—नसीम ग़ाज़ी फ़लाही	15.00
क़ुरआन का पैग़ाम	—ख़ुर्रम मुराद	10.00
क़ुरआन पर अनुचित आक्षेप	—नसीम ग़ाज़ी फ़लाही	15.00
हमें ख़ुदा कैसे मिला?	—अब्दुल ग़नी फ़ारूक़	100.00
इस्लाम आतंक या आदर्श?	—स्वामी लक्ष्मी शंकराचार्य	40.00
इस्लाम और इनसान (1-6)	—डॉ॰ सैयद शाहिद अली	84.00
दलित समस्या जड़ में कौन?	—इन्तिज़ार नईम	140.00
हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) और भारतीय धर्म-ग्रंथ	—डॉ॰ एम॰ ए॰ श्रीवास्तव	18.00
इस्लामी सभ्यता	—मुंशी प्रेम चन्द्र	5.00
क़ुरआन पुकारता है "ऐ लोगो..."	—मुहम्मद ज़ैनुल आबिदीन मंसूरी	12.00
आधुनिक नारी	—नुज़हत यासमीन	10.00
इस्लाम एक मात्र रास्ता	—मुहम्मद ज़ैनुल आबिदीन मंसूरी	12.00
शैतानी धोखे के विभिन्न रूप	—डॉ॰ सैयद शाहिद अली	40.00

हमारी सभी पुस्तकें मर्कज़ी मक्तबा इस्लामी पब्लिशर्स से भी प्राप्त की जा सकती हैं।

MADHUR SANDESH SANGAM

E-20, Abul Fazl Enclave, Jamia Nagar, New Delhi-110025

E-mail : madhursandeshsangam@yahoo.co.in, Ph. : 9212356332

मनुष्य के क़द का राज़

❖ विशाल 'सन्नी'

फ़िल्मों, सर्कस अथवा अपने आस-पास बौने, लंबे अथवा अजीब शारीरिक संरचना के इन्सानों को देखकर हम दांतों तले उंगली दबाने पर मजबूर हो जाते हैं । पाकिस्तान के एक युवक सन्नी हैदर का चित्र कुछ वर्ष पहले अख़बारों में छपा था, जिसका क़द था 7 फुट 8 इंच । दक्षिण अफ़्रीक़ा के एक हब्शी राम मैथ्यू का क़द 8 फुट था । संसार में ऐसे असामान्य रूप से लंबे कितने ही मानव मिल जाएंगे ।

कुछ ऐसे मनुष्य भी हैं जिन्हें हम 'बौना' कहते हैं जो अक्सर फ़िल्मों, सर्कस या खेल-तमाशों में लोगों का मनोरंजन करते नज़र आते हैं और जिनका शारीरिक डील-डौल देखकर बरबस ही हंसी के फ़व्वारे छूटने लगते हैं ।

दरअस्ल मनुष्य की लम्बाई उसके शरीर में हड्डियों की लम्बाई और स्पाइन पर ख़ासतौर पर निर्भर करती है । अगर इसकी वृद्धि सही ढंग से नहीं होगी तो उसका प्रभाव समूचे शरीर पर पड़ता है । जिस्म की वृद्धि को रोकने वाले कारक हमारे शरीर में ही मौजूद होते हैं । कई बार मानसिक कारण भी शारीरिक वृद्धि को प्रभावित कर देते हैं । बच्चे की अधिक या कम शारीरिक वृद्धि होने का अर्थ है कि शरीर में वह कारक, जो लम्बाई को प्रभावित करते हैं असंतुलित हो गये हैं । इसलिए एक ही उम्र के बच्चों की लम्बाई अलग-अलग हो सकती है ।

बच्चे के जन्म से ही उसके उचित विकास के लिए एक निश्चित कार्यक्रम होता है । इसी प्रबंधन क्रिया से महत्वपूर्ण शारीरिक निर्देश भी समय-समय पर जारी होते रहते हैं । ये क़ुदरती प्रबंधन जीन हमें अपने अभिभावकों से प्राप्त होते हैं । ऐसे जीन क्रोमोसोम पर पाये जाते हैं । हर एक कोशिका क्रोमोसोम पर जीन का गहरा प्रभाव होता है । प्रत्येक कोशिका में क्रोमोसोम के 23 जोड़े उपस्थित होते हैं । यदि इनमें से एक भी जोड़ा कम या ज़्यादा हो या फिर किसी क्रोमोसोम का कोई भाग बिल्कुल न हो तो भी यह शरीर की वृद्धि को प्रभावित करते हैं, क्योंकि ऐसी अवस्था में कोशिका को पूरी सूचनाएं नहीं मिल पाती कि वे किस प्रकार विभाजित हैं और किस प्रकार बढ़ना है ।

बौनेपन या नाटे क़द के लिए मुख्य रूप से ज़िम्मेदार होती हैं अल्प-विकसित अस्थियां इन अस्थियों के विकास के लिए ज़रूरी होता है 'कार्टीलेज' नामक उत्तकों का सही विकास । जब इन उत्तकों की कोशिकाएं सही ढंग से विभाजित नहीं हो पाती तो शरीर का भी पूर्ण विकास नहीं हो पाता । इसे 'कान्ड्रो डिस्ट्रोफिक ड्वार्फिज़्म' कहते हैं । अधिकतर दोषपूर्ण कार्टीलोज कोशिकाएं स्पाईन, बाहों या टांगों में पायी जाती हैं । यही विशेष कारण है कि ऐसे मानवों की बाहें या पैर अथवा दोनों असामान्य रूप से छोटे होते हैं ।

हारमोन में होने वाला असंतुलन भी शारीरिक वृद्धि को प्रभावित करता है । किसी भी व्यक्ति की लम्बाई बहुत से हारमोनों द्वारा नियंत्रित की जाती है जिनमें से मुख्य हैं सिर में मस्तिष्क के नीचे स्थित पिट्यूटरी ग्रंथि द्वारा निःस्रवित वृद्धि हारमोन और गर्दन में स्थित थॉयराइड ग्रंथि द्वारा निःस्रवित थॉयरॉविसन और सैक्स हारमोन ।

पिट्यूटरी ग्रंथि में कुल नौ प्रकार के हारमोन बनते हैं जिनमें से प्रत्येक का काम अलग-अलग होता है । ये शरीर की अन्य ग्रंथियों द्वारा किये जाने वाले हारमोन उत्पादन को भी नियंत्रित करते हैं । इन हारमोनों में से एक है-'सोमेटोट्रोफिन' या वृद्धि हारमोन जो मुख्य रूप से अस्थियों और कार्टीलोज की वृद्धि को प्रभावित करता है । इसकी कमी वृद्धि को रोक देती है । यदि समय रहते इसके कम या ज़्यादा होने का पता चल जाए तो सही उपचार संभव है और इन्हें कम या ज़्यादा किया जा सकता है ।

लंबे समय तक चलने वाली बीमारियां जैसे मधुमेह, दमा, गुर्दे और दिल संबंधी बीमारियां भी इन्सान की वृद्धि को रोक देती हैं । सही उपचार होने पर पुनः वृद्धि संभव है । सही शारीरिक विकास के लिए शारीरिक क्रियाओं का अच्छी तरह नियंत्रित होना भी बहुत ज़रूरी है लेकिन इसके साथ-साथ यह भी ज़रूरी है कि बच्चों को पौष्टिक आहार मिले । साथ ही बच्चों की सामान्य वृद्धि के लिए भावनात्मक प्रेम और सद्भाव भरा वातावरण भी निहायत ही ज़रूरी है ।

सुन्दर घोंसले बनाती है बया

प्रत्येक प्राणी जीवन में अपने रहने के लिए आवास का निर्माण अवश्य करता है, चाहे वह मनुष्य हो, पक्षी हो अथवा पशु हो । मनुष्य को प्राणियों में सबसे चतुर समझा जाता है, लेकिन इसमें कुछ पक्षी भी पीछे नहीं हैं, इन्हीं में एक छोटे से पक्षी बया का नाम लिया जा सकता है । जब आप रेलगाड़ी, बस या पैदल किसी जंगल से यात्रा करते हैं, तो आपको वृक्षों पर तंबुनुमा घोंसले लटकते दिखायी देते हैं, इनको देखकर इनके बारे में जानने की इच्छा आपके मन में ज़रूर जागृत होती होगी । जी हां, यही है, उस अजीबोग़रीब बया का कमाल । प्रत्येक मनुष्य का बन इस छोटी-सी चिड़िया की निपुणता को देखकर अवश्य आश्चर्यचकित होता है ।

इस घोंसले के निर्माण के समय बया द्वारा प्राकृतिक आपदाओं और कठिनाइयों को जिस तरह ध्यान में रखा जाता है, उसकी इसी दूरदर्शिता को देखकर मानव भी उसके सामने छोटा लगता है । इसको बनाने के लिए बया बांस, केला और सरकंडे की पत्तियों के रेशे प्रयोग में लाता है । इनके निर्माण में मादा बया भी सहयोग करती है । नर बया 5 से 12 इंच लंबे रेशे लाता है और उनको वृक्ष की टहनी के साथ जोड़कर घोंसला बुनना प्रारंभ कर देता है और नीचे की ओर निर्माण करके तुंबानुमा घोंसले का रूप देता है ।

घोंसला निर्माण कार्य मार्च-अप्रैल माह में किया जाता है, क्योंकि यह समय मादा बया का प्रसवकाल होता है । नर घोंसले की शुरुआत करके पास ही टहनी पर बैठकर मधुर गीत गाने लगता है, जिससे आकर्षित होकर मादा बया वहां आ जाती है । पहले वह उस घोंसले का निरीक्षण करती है फिर दोनों मिलकर घोंसला तैयार करते हैं ।

घोंसला इस प्रकार बनाया जाता है कि इसमें नीचे प्रवेश द्वारा होता है और ऊपर बैठने तथा मादा के प्रसव आदि का स्थान बनाया जाता है । अन्दर वाला भाग बच्चों के पालन-पोषण आदि को ध्यान में रखकर बनाया जाता है । घोंसले को झूलने से बचाने के लिए बया इसमें मिट्टी की डलियां लाकर रख लेता है, जिससे यह हवा के झोंकों में इधर-उधर न हिले । इस प्रकार बया का मकाननुमा घोंसला बनकर तैयार हो जाता है अब इसमें प्रकाश व्यवस्था के लिए रात्रि में स्वयं ही जुगनू आ जाते हैं, जिससे प्रकाश भी होता है और देखने में भी वह दृश्य बहुत सुन्दर लगता है ।

नर बया बाहर टहनी पर बैठकर गीत गाता है तथा मादा बया अन्दर बैठकर आराम करती है । मादा जब अन्दर अंडे देने के बाद उनको सेने का कार्य करती है, तो नर पुनः दूसरे घोंसले का ढांचा तैयार करना शुरू कर देता है ।

बया अकेला ही घोंसला नहीं बनाता, बल्कि यह झुंडों में आते हैं और नर वृक्षों पर घोंसले बनाने शुरू कर देते हैं और फिर प्रणय सूत्र में बंधकर दोनों ही मिल-जुलकर घोंसले का निर्माण करते हैं, वर्षा ऋतु आते ही नर बया में कुछ परिवर्तन भी होता है । इस मौसम में इसकी ठोड़ी काली, वक्ष पीला, पेट पर सफ़ेद तथा आंख से सीने तक का भाग गहरा भूरा हो जाता है, पर कुछ समय बाद इसका रंग पूर्ववत हो जाता है ।

ब्या द्वारा सभी घोंसले अंडे देने के उद्देश्य से नहीं बनाये जाते हैं, इनमें कुछ घोंसले सिर्फ़ बैठने और कुछ मादा के झूलने के लिए बनाए जाते हैं, जिस पर बैठकर मादा नर को गीत सुनाती है । एक विशेष प्रकार का घोंसला भी बया बनाते हैं, जिसमें मादा अन्दर बच्चों के साथ बैठकर झूलती है तथा बाहर की गतिविधियों और ख़तरों को भी देखती रहती है, देखने के लिए इसमें एक सुराख़ बनाया जाता है । इसी आधार पर कहा जा सकता है कि बया पक्षियों में गृह निर्माण (आवास) बनाने में सबसे चतुर पक्षी है । बया पक्षी घोंसला बनाने में इसी कारण एक बेमिसाल पक्षी माना जाता है ।

मुद्रक एवं प्रकाशक ख़लील अहमद द्वारा दावत ट्रस्ट (रजि०), D-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली-110025 से प्रकाशित एवं भारत ऑफ़सेट, गली क़ासिम जान, बल्लीमारान, दिल्ली-6 से मुद्रित ।
फोन: 09818799223, 011-26949430
संपादक : डॉ० मुहम्मद अहमद

संस्था की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णतः प्रतिबंधित है ।

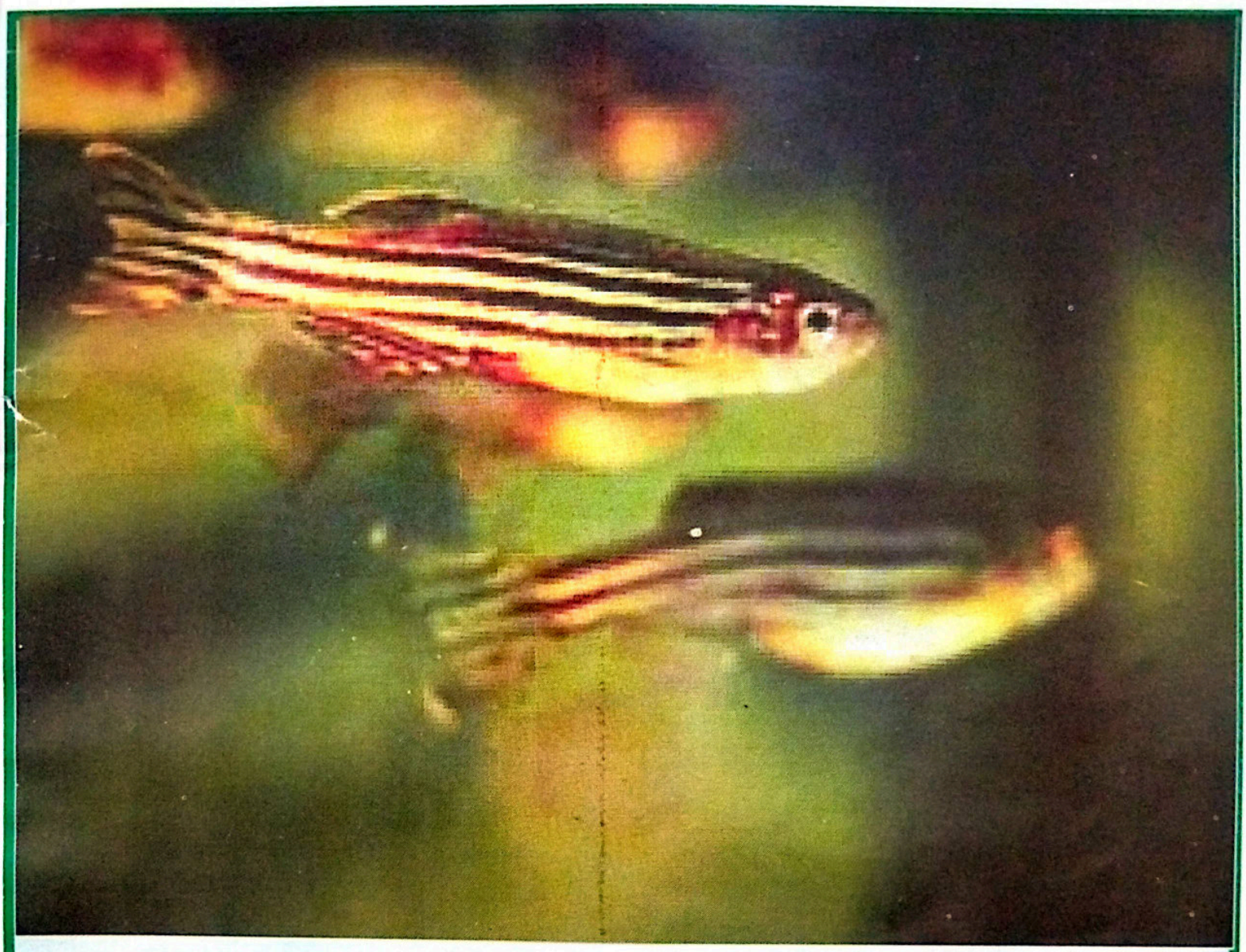

Bismillah Fisheries

Dry Fish Merchant & Commission Agent

Near Zuan Acid Tank

Vasco-da-Gama, GOA-403802

Posted on 20-21 Feburary 2014
March 2014
E-mail: kantihindimonthly@yahoo.com
Publishing Date: 18.02.2014

हिन्दी मासिकों की साहित्यिक पत्रिका
कान्ति

RNI 53372/91
DL(S)-01/3147/2012-2014
LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMENT
License No. U (SE)-73/2012-14

HOTEL
Al-Zam Zam
RESTAURANT & LODGING



HOTEL
Al-Zam Zam
RESTAURANT & LODGING

The best taste in Veg. & Non-Veg. dishes



Now At Ajni Square Wardha Road

Comfortable interior, hygienic separate preparation for Veg. and Non-Veg.
Special air conditioned hall for family.
Comfortable lodging in air conditioned and well decorated rooms.

Customer Care No :- 08796466666

Main Branch :- Central Avenue, Chandra Shekhar Azad Square, Nagpur - 440002
Branch 1 :- Plot No. 1 Hindustan Colony, Ajni Square, Beside
Chevrolet Showroom, Wardha Road, Nagpur
Branch 2 :- Opp Battuk Bhai Jewellers, Dharampeth, W.H.C. Road, Nagpur

Ph: 0712-2763131, 2732401

E-mail :- hotelalzamzam@gmail.com

Log on to :- www.hotelalzamzam.com
or like us on :- hotelalzamzam.facebook.com